विक्रम संवत् 2080 ▪ अधिमास/श्रावण/भाद्रपद मास(6) ▪ 01 अगस्त 2023 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आजादी का अमृत महोत्सव

G20 ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

भाजपा की विजय कार्यकर्ताओं के परिश्रम से

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मुलाकात की।

▶ भाजपा को जानें पहल में भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने मध्य पूर्व, अफ्रीका, यूरोपीय संघ और कैरेबियन देशों के मिशन प्रमुखों के साथ बातचीत की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन केंद्र (IECC) में श्रमजीवियों को सम्मानित किया।

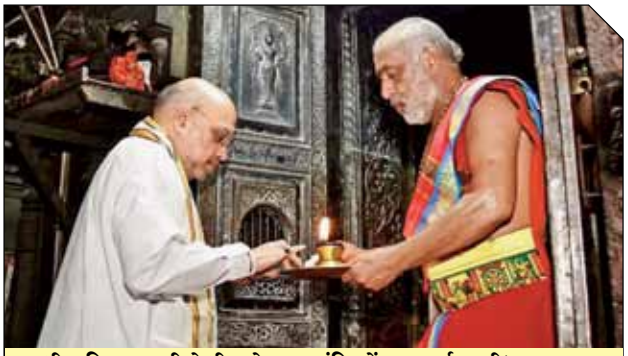

▶ श्री अमित शाह जी ने श्री रामेश्वरम मंदिर में पूजा अर्चना की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गांधीनगर में सेमीकॉन इंडिया 2023 का उद्घाटन किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पोर्ट ब्लेयर में वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के नए एकीकृत टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिल्ली में भारत मंडपम में अखिल भारतीय शिक्षा समागम का उद्घाटन किया।

अनुक्रमणिका

वर्ष-55, अंक : 06, भोपाल, अगस्त 2023

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- प्रचण्ड बहुमत की ओर डबल इंजन की सरकार

कवर स्टोरी 05

- भाजपा की विजय कार्यकर्ताओं के परिश्रम से

- **जीतेगी भाजपा :** 07
  - अमित शाह जी का पाथेय लेकर कार्यकर्ता चुनाव में उतरेंगे...
- **सामाजिक समरसता का संदेश :** 09
  - संत रविदास जी के संदेश को जन-जन तक ले जाएगी समरसता यात्रा...
- **विराट विजय :** 10
  - गरीब कल्याण एवं मजबूत संगठन से होगी विराट विजय...
- **संगठन :** 11
  - लक्ष्य 51 प्रतिशत वोट प्राप्त करना - अजय जामवाल...
- **जीवन सुरक्षित बनाने का संकल्प :** 12
  - आयुष्मान योजना से 50 करोड़ लाभार्थियों को स्वास्थ्य बीमा...
- **लक्ष्य है भारत का विकास :** 16
  - इकोनॉमी दुनिया में तीसरे नंबर पर हो के रहेगी...
- **लाड़ली बहना योजना :** 21
  - लाड़ली बहना योजना भारतीय राजनीति में सामाजिक क्रांति -मुख्यमंत्री...
- **भारत मंडपम :** 22
  - Think Big, Dream Big, Act Big - मोदी...
- **संकल्प अब सिद्धि की ओर** 25
  - 13.5 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर हुए- विष्णुदत्त शर्मा...
- **बेहतर भविष्य :** 26
  - युवाओं का बेहतर भविष्य बनाना संकल्प है : शिवराज सिंह चौहान...
- **विकसित भारत का संकल्प :** 27
  - घाटे और NPA के लिए मशहूर बैंक आज रिकॉर्ड प्रॉफिट में...
- **महिला मोर्चा की भूमिका महत्वपूर्ण :** 30
  - सरकार के काम को जमीन पर उतारना है- दर्शना सिंह ...
- **विविध : कविता** 31
  - स्वतन्त्रता दिवस की पुकार : अटल बिहारी वाजपेयी
- **मन की बात :** 32
  - हर घर तिरंगा फहराना है ...
- **जयंती :** 36
  - वीरांगना रानी अवंती बाई...
- **पुण्यतिथि :** 37
  - नारी शक्ति की प्रतीक हैं देवी अहिल्या
  - अनूठे राजनीतिज्ञ-लोकमान्य तिलक
- **शहीद दिवस :** 39
  - खुदीराम बोस
  - क्रांतिवीर मदनलाल ढींगरा
- **विचार प्रवाह :** 41
  - भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था

मुख्य व्रत-त्यौहार

1. स्नानदान व्रत पूर्णिमा 4. गणेश चतुर्थी व्रत 12. कमला एकादशी व्रत 13. प्रदोष व्रत 14. शिव चतुर्दशी व्रत 15. पाक्षिक प्रतिक्रमण 16. स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 18. चन्द्रदर्शन, सिंधारा दोज 19. हरियाली तीज, मधुश्रवा व्रत,स्वर्ण गौरी व्रत, झूला प्रारंभ 20. दूर्वा/ विनायकी चतुर्थी व्रत 21. नागपंचमी, मासघर 27. पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी 28. प्रदोष व्रत 30. रक्षाबंधन, नारियल पूनम, श्रावणी व्रत पूर्णिमा, पाक्षिक प्रतिक्रमण 31. स्नानदान पूर्णिमा, कजलियाँ

मुख्य जयंती-दिवस

4. गायक किशोर कुमार जयंती 9. अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन दिवस 14. गुलाब सिंह पटेल शहीद दिवस, विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस 15. योगी अरविंद जयंती 16. रानी अवंतीबाई लोधी जयंती, पं. अटलबिहारी वाजपेई पु. ति. 17. मदनलाल धींगरा शहीद दिवस 19. विश्व छायांकन दिवस 21. कवि. सुभद्रा कुमारी चौहान जयंती 29. मेजर ध्यानचंद ज., रा. खेल दिवस

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमें देश को सुशिक्षित कर सही जीवन मूल्यों की स्थापना करनी है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले विशाल राष्ट्र की एकात्मता का अनुभव करवाना है। जागरूक जनता देश के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी होती है। अपने लक्ष्य पर दृष्टि केन्द्रित कर आत्मविश्वास एवं निष्ठा के साथ हम आगे बढ़े।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

प्रचण्ड बहुमत की ओर डबल इंजन की सरकार

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत और भारतवासियों के मान-सम्मान में कई गुना ज्यादा वृद्धि हुई है। देश की भाजपा सरकार ने चारों तरफ देश को आगे बढ़ाने का और सशक्त करने का काम किया है।

मध्य प्रदेश की राजनीति अब चुनावी मोड पर पूरी तरह से आ चुकी है। आगामी नवम्बर में म.प्र. में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। एक तरफ भारतीय जनता पार्टी का विकास और सुशासन का मॉडल है तो दूसरी तरफ काँग्रेस का झूठा वादा। म.प्र. की जनता इस अन्तर को साफ-साफ समझती है। पूरे देश में काँग्रेस हाशिये पर है, आज काँग्रेस की यह स्थिती है कि वह ऐसे-ऐसे दलों के साथ गठबंधन कर रही है जिसका की कोई तार्किक जबाब स्वयँ काँग्रेस के नेताओं के पास भी नहीं है। वहीं दूसरी ओर एनडीए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में निरंतर अपना आधार और ज्यादा बढ़ाता जा रहा है।

म.प्र. में आगामी नवम्बर में होने वाले विधानसभा के चुनावों को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी ने अपनी तैयारियाँ तेज कर दी हैं। भारत के गृहमंत्री और आधुनिक राजनीति के चाणक्य श्री अमित शाह जी के म.प्र. प्रवास ने चुनाव प्रचार में नई जान फूँक दी है। श्री अमित शाह जी के प्रवास के फलस्वरूप उत्पन्न हुई ऊर्जा से कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार हुआ उससे साफ-साफ नजर आ रहा है कि आगामी विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी एक बार फिर भारी बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है। कारण बिल्कुल साफ है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सारी दुनिया में भारत की छवि और ज्यादा निखर गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत और भारतवासियों के मान-सम्मान में कई गुना ज्यादा वृद्धि हुई है। देश की भाजपा सरकार ने चारों तरफ देश को आगे बढ़ाने का और सशक्त करने का काम किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार के द्वारा कश्मीर से धारा 370 और 35-ए को हटाया गया। आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए पाकिस्तान जैसे विध्नसंतोषी देश पर सर्जिकल और एयर स्ट्राइक किया गया। इस साहसिक कार्य को करने से सेना और देशवासियों का मनोबल बहुत ज्यादा बढ़ गया। पर हैरानी तब हुई जब विपक्ष के द्वारा सर्जिकल और एयर स्ट्राइक के सबूत माँगे गये।

भारतीय जनता पार्टी का सदैव से सिद्धांत ''राष्ट्र प्रथम'' रहा है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश अपनी संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत को तेजी के साथ आगे बढ़ा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ही अयोध्या में तेज गति के साथ श्री राम मंदिर का निर्माण हो रहा है। उज्जैन में श्री महाकाल लोक का निर्माण हुआ काशी में श्री विश्वनाथ कॉरिडोर का निर्माण हुआ और सोमनाथ में श्री सोमनाथ दादा के मंदिर परिसर का विकास हुआ। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हर भारतवासी के दिल में बसते हैं। खासतौर पर गरीबों के विकास के लिए प्रधानमंत्री जी का विशेष ध्यान रहता है। अगर इतिहास पर नजर डालें तो भारत की एक पूर्व प्रधानमंत्री ने गरीबी हटाओ का नारा दिया था। पर गरीबों के लिए कुछ भी नहीं किया। लेकिन भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गाँव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, वंचित, शोषित, पिछड़े, महिलाओं एवं युवाओं के कल्याण के लिए बहुत ज्यादा काम किये हैं। अगर म.प्र. की बात करें तो अभी हाल ही में कुछ दिनों के लिए बनी काँग्रेस की सरकार ने पीएम किसान सम्मान निधि के लिए किसानों के नाम केन्द्र सरकार को नहीं भेजे थे। सदैव से काँग्रेस का यही दोहरा चरित्र रहा है।

इनकी कथनी व करनी में कभी भी समानता नहीं रही। इसीलिए आज काँग्रेस म.प्र. में कहीं भी खड़ी नहीं है। इसके बाद जब फिर से म.प्र. में श्री शिवराज सिंह जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो शिवराज सिंह चौहान जी ने तत्काल सरकार बनाने के बाद किसानों की सूची केन्द्र सरकार को भेज दी। आज उसी का परिणाम है कि म.प्र. के लगभग 92 लाख किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि का लाभ मिल रहा है। यह अकेला उदाहरण नहीं है, जो भारतीय जनता पार्टी की कार्य संस्कृति को काँग्रेस से कई गुना आगे रखता है। ऐसे कई उदाहरण मिल जावेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी की डबल इंजन की भाजपा सरकार के द्वारा म.प्र. में विकास के अनेक कार्य तेज गति से हुए हैं। जलजीवन मिशन के अंतर्गत म.प्र. के लगभग 60 लाख से अधिक घरों में नल से जल पहुँचाया जा रहा है। आयुष्मान भारत योजना के द्वारा म.प्र. के लगभग 3.60 करोड़ लोगों को लाभ मिल रहा है। म.प्र. में डबल इंजन की सरकार ने 80 लाख से ज्यादा शौचालय बनाए हैं। उज्जवला योजना के द्वारा 11 लाख बहनों को गैस कनेक्शन दिये गये हैं। केन्द्र की मोदी सरकार और राज्य की शिवराज सरकार के सामूहिक प्रयास से म.प्र. में पीएम आवास योजना के अंतर्गत लगभग 53 लाख घर बनाए गये हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोरोना काल के समय पूरे देशवासियों को रिकार्ड समय में वैक्सीन लगा कर भारत को सुरक्षित करने का काम किया। वहीं म.प्र. के ऊर्जावान मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने कई सारी गरीब कल्याण योजनाएं म.प्र. में चलाई थीं। जिसे थोड़े समय के लिए आई हुई काँग्रेस की सरकार ने बन्द कर दिया था। उस दौर में म.प्र. में सिर्फ और सिर्फ एक ही उद्योग फला-फूला और वो था तबादला और दलाली उद्योग। म.प्र. की जनता उस अल्प काल वाली काँग्रेस की सरकार के कारनामें देख चुकी है और मन में ठान चुकी है की कुछ भी हो जावे आगामी विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को प्रचण्ड बहुमत से विजयी बनाना है और लोकसभा के चुनाव में म.प्र. की सारी सीटें भाजपा को ही देनी है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

भाजपा की विजय कार्यकर्ताओं के परिश्रम से

- भाजपा कार्यकर्ताओं का उत्साह बताता है कि 2023 में विधान सभा चुनाव और 2024 में लोकसभा चुनाव का परिणाम तय है। 2023 में फिर से भाजपा की सरकार बनेगी और 2024 में भाजपा को 29 में से 29 सीटें मिलेगी।
- 'गरीबी हटाओ' का नारा देकर कांग्रेस पार्टी ने देश में लगभग 5 दशकों से अधिक समय तक शासन किया लेकिन गरीबों के लिए कुछ भी नहीं किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गरीब कल्याण की दिशा में इतने अधिक काम किये कि वे गरीबों के मसीहा बने हुए हैं।
- श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने राज्य में लगभग 51 से अधिक गरीब कल्याण की योजनायें शुरू की लेकिन कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने आते ही उन सभी गरीब कल्याण योजनाओं को बंद कर दिया था।
- कमलनाथ सरकार ने गरीबों के लिए बनी योजनाओं के पैसे बड़े-बड़े कामों के टेंडर निकलवाकर ठेकेदारों से पैसा कमाने के लिए गरीब कल्याण योजनाओं को बंद किया था।
- कमलनाथ जी मध्य प्रदेश में कोई उद्योग-धंधे तो ला नहीं सके लेकिन हाँ उन्होंने ट्रांसफर इंडस्ट्री जरूर शुरू कर दी। कमलनाथ सरकार ने महज डेढ़ साल के अंदर क्लास वन ऑफिसर के 18 हजार से अधिक ट्रांसफर किये। ट्रांसफर कराने वालों का घर भरने का काम उनकी सरकार में हुआ।
- मध्य प्रदेश में डेढ़ साल तक कांग्रेस की कमलनाथ सरकार रही। उसने पीएम किसान सम्मान निधि के लिए राज्य से किसान लाभार्थियों के नाम तक नहीं भेजे। शिवराज सिंह चौहान सरकार ने आते ही किसानों के नाम केंद्र को भेजे और आज लगभग 92 लाख किसानों को इसका लाभ मिल रहा है।
- श्रीमान बंटाधार और करप्शन नाथ मध्य प्रदेश के बजट का आकार केवल 23 हजार करोड़ रुपये छोड़ कर गए थे। वर्ष 2023 में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने 3.24 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया है।
- सर्व शिक्षा अभियान का बजट लगभग 8 गुना बढ़ा है। एससी-एसटी और ओबीसी का बजट लगभग 60 गुना बढ़ा है। पहले यह केवल 1056 करोड़ रुपये था, जो आज बढ़ कर 64,390 करोड़ रुपये हो गया है।
- मध्य प्रदेश का औद्योगिक विकास दर माइनस में घूमा करती थी और यदि माइनस में कुछ कम हो जाता था तो वे सीना फुलाते थे। आज औद्योगिक विकास दर 24 प्रतिशत है। कृषि विकास दर निगेटिव से बाहर निकलकर 18 प्रतिशत पर पहुंच गया है, जो समग्र देश में सबसे अधिक है।
- कांग्रेस की सरकार ने एमएसपी पर गेहूं की खरीदी केवल 4 लाख टन और धान की खरीदी महज 95 हजार टन की थी जबकि शिवराज सिंह सरकार ने एमएसपी पर लगभग 70 लाख टन गेहूं और 45 लाख टन धान की खरीदी की जो कांग्रेस सरकार की तुलना में लगभग 46 गुना अधिक है।
- 2004 से 2014 तक कांग्रेस की सरकार ने विभिन्न मदों में मध्य प्रदेश को विकास के लिए महज 2 लाख करोड़ रुपये दिए जबकि श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने 2014 से अब तक प्रदेश को लगभग 7.50 लाख करोड़ रुपये दिया है।
- भाजपा बूथ कार्यकर्ताओं के परिश्रम के बल पर ही विजयी होती है। आप सभी बूथ कार्यकर्ता संकल्प लें कि विधान सभा चुनाव में भाजपा को प्रचंड बहुमत से विजयी बनाना है और लोकसभा की 29 की 29 सीटें भाजपा की झोली में डालनी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में दुनिया में भारत की छवि बदली है और भारत एवं भारतवासियों के मान-सम्मान में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। उन्होंने हर क्षेत्र में देश को आगे बढ़ाने का काम किया है।

उनके नेतृत्व में धारा 370 का उन्मूलन हुआ, आतंकवाद पर सर्जिकल और एयर स्ट्राइक हुआ और अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर के निर्माण की शुरुआत हुई।

मध्य प्रदेश की जनता ने 2014 के लोक सभा में भाजपा को 29 में से 27 सीटें दी, 2019 के लोकसभा में 29 में से 28 सीटें दी। साथ ही, 15-20 महीने छोड़ कर राज्य की जनता ने 2003 से लेकर लगातार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाई है। इस आशीर्वाद के लिए मध्य प्रदेश की जनता को नमन् करता हूँ। मध्य प्रदेश विधान सभा चुनाव के दृष्टिकोण से राज्य में बूथ सम्मेलन की शुरुआत हुई है। भाजपा कार्यकर्ताओं का उत्साह बताता है कि 2023 में विधान सभा चुनाव और 2024 में लोकसभा चुनाव का परिणाम तय है। 2023 में फिर से भाजपा की सरकार बनेगी और 2024 में

भाजपा को 29 में से 29 सीटें मिलेगी।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में दुनिया में भारत की छवि बदली है और भारत एवं भारतवासियों के मान-सम्मान में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। उन्होंने हर क्षेत्र में देश को आगे बढ़ाने का काम किया है। उनके नेतृत्व में धारा 370 का उन्मूलन हुआ, आतंकवाद पर सर्जिकल और एयर स्ट्राइक हुआ और अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर के निर्माण की शुरुआत हुई। देवी अहिल्या बाई होलकर के बाद यदि किसी ने मंदिरों का जीर्णोद्धार किया है तो वे हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं चाहे श्रीराम मंदिर हो, चाहे महाकाल का लोक हो, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर हो या सोमनाथ दादा के मंदिर परिसर का विकास हो।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी गरीबों के दिल की धड़कन बने हुए हैं। 'गरीबी हटाओ' का नारा देकर कांग्रेस पार्टी ने देश में लगभग 5 दशकों से अधिक समय तक शासन किया लेकिन गरीबों के लिए कुछ भी नहीं किया। श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने देश के गाँव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, पिछड़े, युवा एवं महिलाओं के कल्याण के लिए बहुत काम किया है। इसलिए आदरणीय प्रधानमंत्री जी पूरे देश में गरीबों के मसीहा के रूप में जाने जाते हैं। कमलनाथ सरकार ने पीएम किसान सम्मान निधि के लिए राज्य के किसानों के नाम केंद्र को नहीं भेजे। जब फिर से भाजपा की शिवराज सिंह चौहान सरकार बनी तो 10 दिनों के अंदर ही किसानों के नाम की सूची केंद्र को भेज दी गई। अब राज्य के लगभग 92 लाख किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि का लाभ मिल रहा है। अब तक इस योजना के तहत मध्य प्रदेश के किसानों के एकाउंट में लगभग 19 हजार करोड़ रुपये की राशि भेजी है। जल-जीवन मिशन के तहत प्रदेश के लगभग 60 लाख से अधिक घरों में नल से जल पहुंचाया जा रहा है। आयुष्मान भारत योजना के तहत राज्य के लगभग 3.60 करोड़ लोगों को लाभ मिल रहा है। मध्य प्रदेश में लगभग 80 लाख शौचालय बनाए गए हैं। पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत राज्य के लगभग 1.2 करोड़ परिवारों को प्रति व्यक्ति प्रति माह पांच किलो चावल या गेहूं और एक किलो दाल मुफ्त दिया जा रहा है। उज्ज्वला योजना के तहत लगभग 11 लाख बहनों को गैस कनेक्शन दिया गया है। इसी तरह पीएम आवास योजना के तहत प्रदेश में लगभग 53 लाख घर बनाए गए। साथ ही, डीबीटी के माध्यम से मध्य प्रदेश में लाभार्थियों के एकाउंट में विभिन्न योजनाओं के तहत लगभग 2.25 लाख करोड़ रुपये भेजे गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 130 करोड़ लोगों को मुफ्त वैक्सीन लगवाकर भारत को सुरक्षित करने का काम किया है। हमारे मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने राज्य में लगभग 51 से अधिक गरीब कल्याण की योजनायें शुरू की लेकिन कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने आते ही उन सभी गरीब कल्याण योजनाओं को बंद कर दिया था। उनसे पूछिएगा कि गरीब कल्याण की योजनायें बंद क्यों की? कमलनाथ सरकार ने गरीबों के लिए बनी योजनाओं के पैसे बड़े-बड़े कामों के टेंडर निकलवाकर ठेकेदारों से पैसा कमाने के लिए गरीब कल्याण योजनाओं को बंद किया था। कमलनाथ सरकार ने महज डेढ़ साल के अंदर क्लास वन ऑफिसर के 18 हजार से अधिक ट्रांसफर किये। उनके समय कोई नया उद्योग मध्य प्रदेश में नहीं आया। राज्य में जो भी उद्योग आया है, वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी लाये हैं। कमलनाथ जी मध्य प्रदेश में कोई उद्योग-धंधे तो ला नहीं सके लेकिन हाँ उन्होंने एक इंडस्ट्री चालू कर दी थी। वह इंडस्ट्री थी ट्रांसफर इंडस्ट्री। ट्रांसफर कराने वाले दलालों का घर भरने का काम उनकी सरकार में हुआ। श्रीमान बंटाधार के शासन को याद कराने का उद्देश्य सिर्फ यह है कि कमलनाथ सरकार ने केवल और केवल डेढ़ साल में प्रदेश का बंटाधार कर दिया।

2003 से लेकर अब तक भाजपा की जितनी भी सरकारें चली, उन्होंने और बाद में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी की जोड़ी ने मध्य प्रदेश को बीमारु राज्य से निकाल कर विकसित राज्य बनाया है। आज मालवा में हर घर में बिजली पहुंची है। सिंचाई का रकबा बढ़ा है। शिवराज सिंह सरकार गेहूं, चावल और अन्य फसल एमएसपी पर खरीद रही है। जब कांग्रेस की सरकार थी, तब ऐसा नहीं होता था। मैं श्रीमान बंटाधार और करप्शन नाथ जी से पूछने आया हूँ कि आप मध्य प्रदेश के बजट का आकार कितना छोड़ कर गए थे? वे लोग मध्य प्रदेश का बजट केवल 23 हजार करोड़ रुपये छोड़ कर गए थे। वर्ष 2023 में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने 3.24 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया। सर्व शिक्षा अभियान का बजट लगभग 8 गुना बढ़ा है। एससी-एसटी और ओबीसी का बजट लगभग 60 गुना बढ़ा है। पहले इस मद में बजट केवल 1056 करोड़ रुपये था, जो आज बढ़ कर 64,390 करोड़ रुपये हो गया है।

मध्य प्रदेश का औद्योगिक विकास दर माइनस में घूमा करती थी और यदि माइनस में कुछ कम हो जाता था तो वे सीना फुलाते थे। आज औद्योगिक विकास दर 24 प्रतिशत है। राष्ट्रीय राजमार्ग 4 हजार किलोमीटर से बढ़ कर लगभग 13 हजार किलोमीटर पहुंच गया। कृषि विकास दर निगेटिव से बाहर निकलकर 18 प्रतिशत पर पहुंच गया है, जो समग्र देश में सबसे अधिक है। कांग्रेस की सरकार ने एमएसपी पर गेहूं की खरीदी केवल 4 लाख टन की थी जबकि शिवराज सिंह सरकार ने एमएसपी पर लगभग 70 लाख टन गेहूं की खरीद की है। कांग्रेस सरकार ने धान की खरीदी महज 95 हजार टन की थी जबकि शिवराज सिंह सरकार ने लगभग 45 लाख टन धान की खरीदी की जो कांग्रेस सरकार की तुलना में लगभग 46 गुना अधिक है।

पहले मध्य प्रदेश से लगभग 620 डॉक्टर बनते थे, अब 4 हजार बन रहे हैं। अब मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में भी कर सकते हैं। आईटीआई की संख्या 169 से बढ़ कर 1100 से अधिक हो गई है। मैं श्रीमान बंटाधार जी से पूछना चाहता हूँ कि 2004 से 2014 तक केन्द्र में कांग्रेस की सरकार थी, तब उन्होंने मध्य प्रदेश को विकास के लिए कितना दिया? 2004 से 2014 तक कांग्रेस की सरकार ने विभिन्न मदों में मध्य प्रदेश को विकास के लिए महज 2 लाख करोड़ रुपये दिए जबकि श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने 2014 से अब तक प्रदेश को लगभग 7.50 लाख करोड़ रुपये दिया है।

मध्य प्रदेश में रेलवे और राष्ट्रीय राजमार्ग में कुल मिला कर लगभग एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं को कार्यान्वित किया गया है। ग्वालियर हवाई अड्डे का विस्तार, रीवा में एक नया हवाई अड्डा, जबलपुर में एक नया टर्मिनल बनाया गया है।

प्रदेश में लगभग 4 हजार से अधिक तालाब बनाए गए हैं। राज्य में एक 250 मेगावाट का सोलर पार्क, एक 750 मेगावाट का सोलर पार्क और लगभग 4190 करोड़ रुपये की राशि से ग्रीनफील्ड बनाया गया है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मध्य प्रदेश में भाजपा की डबल इंजन सरकार राज्य को देश का अग्रणी प्रदेश बनाएगी। मंच पर बैठे नेता भाजपा को नहीं जिता सकते हैं। सही बात यह है कि भाजपा बूथ कार्यकर्ताओं के परिश्रम के बल पर ही विजयी होती है। सभी बूथ कार्यकर्ता संकल्प लें कि 2023 के विधान सभा चुनाव में भाजपा को प्रचंड बहुमत से विजयी बनाना है और 2024 के लोकसभा चुनाव में 29 की 29 लोकसभा सीटें भाजपा की झोली में डालनी है। ▪

श्री अमित शाह जी का पाथेय लेकर कार्यकर्ता चुनाव में उतरेंगे - विष्णुदत्त शर्मा

हमारे लिये गर्व की बात है कि श्री अमित शाह जी के कुशल नेतृत्व में भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना। गृहमंत्री श्री शाह जी का पाथेय लेकर कार्यकर्ता चुनाव मैदान में उतरेंगे। श्री अमित शाह जी के पाथेय से बूथों के कार्यकर्तागण अपने - अपने बूथों पर 51 प्रतिशत वोट शेयर हासिल करने के संकल्प के साथ संगठन कार्य में जुटेंगे। साथ ही मालवा क्षेत्र में ''जीतेंगे मालवा, जीतेंगे मध्यप्रदेश और जीतेगी भाजपा'' के संकल्प से साथ बूथ कार्यकर्ता विजय अभियान में जुटेंगे। 2003 के पहले मध्यप्रदेश में बंटाधार युग था। सड़क, पानी और बिजली के लिए जनता मोहताज थी। सवा साल प्रदेश में रहीं कमलनाथ सरकार ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित किया और जनकल्याण की योजनायें बंद कर गरीबों से उनका हक- अधिकार छीनने का काम किया।

भाजपा सरकार गरीबों का जीवन बदलने के लिए संकल्पित है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री चौहान जी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार में गरीबों के सपने पूरे हो रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र एवं प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी सरकार की जनहितैषी योजनाओं तथा संगठन तंत्र के बल पर भारतीय जनता पार्टी आगामी विधानसभा चुनाव में प्रचण्ड विजय हासिल करेगी।

भाजपा की सरकार जरूरी -शिवराज सिंह चौहान

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गौरवशाली, वैभवशाली और संपन्न भारत का निर्माण हो रहा है। आज पूरी दुनिया में मोदी-मोदी की ही गूँज है, देश का मान-सम्मान दुनिया भर में बढ़ रहा है। कांग्रेस ने मध्यप्रदेश का पहले भी कबाड़ा किया था। 2003 के पहले मध्यप्रदेश में सड़क, पानी, बिजली की हालत खराब थी, यही हाल 15 महीने की कमलनाथ सरकार में था। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार की योजनाओं को प्रदेश में ठप्प करने का काम कमलनाथ ने किया था। मोदी जी ने गरीबों के लिए आवास भेजे तो कमलनाथ ने उन्हें वापस लौटा दिए, हर गाँव में नल से जल के लिए योजना भेजी तो कमलनाथ ने जलजीवन मिशन प्रारम्भ नहीं होने दिया। केंद्र को किसान सम्मान निधि सूची न भेजकर किसानों को किसान सम्मान निधि से वंचित करने का काम कमलनाथ ने किया। कांग्रेस ने प्रदेश को बर्बाद करने में कसर नहीं छोड़ी, जनकल्याण की योजनाएं कमलनाथ ने बंद कर दी थीं। कांग्रेस ने विद्यार्थियों से लैपटॉप, बुजुर्गों से तीर्थ दर्शन और बेटियों से कन्यादान योजना के पैसे छीन लिए थे। गरीबों की योजनाओं को बंद करने का पाप कमलनाथ ने किया। कांग्रेस की सरकार में भ्रष्टाचार चरम पर था, ''कमीशन लाओ और काम ले जाओ'' की स्थिति थी। इसलिए प्रदेश को बर्बादी से बचाने के लिए भाजपा की सरकार जरूरी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सपनों को अगर मध्यप्रदेश में साकार करना है तो विधानसभा का चुनाव जीतकर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनानी होगी। घनघोर परिश्रम करना है, परिश्रम की पराकाष्ठा और प्रयत्नों की परिसीमा करनी हैं। गाँव-गाँव जायेंगे, जागरण का मन्त्र फूंकेंगे। इस बार कोई चूक नहीं होगी, विधानसभा में भाजपा को रिकार्ड मतों से जिताएंगे और लोकसभा में पूरी 29 की 29 सीटें भी जीतेंगे।

भाजपा सरकार गरीबों का जीवन बदलने के लिए संकल्पित है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री चौहान के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार में गरीबों के सपने पूरे हो रहे हैं।

भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र एवं प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी सरकार की जनहितैषी योजनाओं तथा संगठन तंत्र के बल पर भारतीय जनता पार्टी आगामी विधानसभा चुनाव में प्रचण्ड विजय हासिल करेगी।

भाजपा का कार्यकर्ता देव दुर्लभः नरेन्द्र सिंह तोमर

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने प्रदेश का चहुंमुखी विकास किया है। मध्य प्रदेश का किसान आज खुशहाल है, बहन आज लाड़ली बहन बन गई है। प्रदेश में सड़कों का जाल बिछा है, सिंचाई के अवसर सृजित हुए हैं। भाजपा की सरकार ने मध्य प्रदेश में अमूलचूल परिवर्तन करने की कोशिश की है।

जब केन्द्र में हमारी सरकार नहीं थी तो विकास का काम भाजपा सरकार को अकेले करना पड़ता था लेकिन आप सबके आशीर्वाद से केन्द्र में श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार आने के बाद शिवराज सरकार लगातार विकास के आयाम स्थापित कर रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में अमूलचूल परिवर्तन आया है। भ्रष्टाचार पर जो प्रहार हुआ है, उसी प्रहार का ही परिणाम है आज भ्रष्ट नेताओं का महागठन हो रहा है। भाजपा ने भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अराजगता से कभी समझौता नहीं किया। हमारी हमेशा प्राथमिकता रही है सुशासन और विकास के लिए काम करेंगे।

आज पूरे देश व प्रदेश में अलग प्रकार का परिवर्तन दिखाई दे रहा है। आने वाले कल में भारत श्रेष्ठ भारत बने, इसकी तैयारियां शुरू हो गई हैं। 2024 में लोकसभा और उससे पहले 2023 में मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव जीतना हमारा लक्ष्य है।

मप्र स्वर्णिम मध्य प्रदेश बने और भारत श्रेष्ठ भारत बने इसके लिए 2023 और 2024 चुनाव जीतना हम सबके लिए आवश्यक है। इसलिए आज से ही संकल्प लेकर जुट जाएं। हमारा कार्यकर्ता देवदुर्लभ है, जब वह कोई संकल्प लेता है तो उसे पूरा भी करता है। 2003, 2008 और 2013 विधानसभा चुनाव इसका साक्षी है।

बहुमत लाकर बनाएंगे सरकार- कैलाश विजयवर्गीय

सभी कार्यकर्ता हमारे पोलिंग बूथ के सिपाही, प्रहरी व सेनापति हैं। यह कार्यकर्ताओं का महासम्मेलन है, विजय सम्मेलन है। 2023 के विजय महासंकल्प अभियान की शुरूआत हो रही है। हम संकल्प लेंगे कि आने वाले विधानसभा चुनाव में और 2024 लोकसभा चुनाव में भाजपा की प्रचंड बहुमत से सरकार बनाएंगे। केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह को हमें संदेश देना है कि प्रदेश में भाजपा की दो तिहाई बहुमत से सरकार बनने वाली है।

कांग्रेस ने बहुत झूठ फैलाया है, बोगस सर्वे कराकर सोशल मीडिया पर भेजे हैं कि प्रदेश में कांग्रेस सरकार बनने वाली है, अब यह सम्मेलन देखने के बाद जनता तय कर देगी कि कांग्रेस की 50 सीटें भी नहीं आने वाली हैं। 2018 में कांग्रेस झूठे वादे करके सत्ता में आई थी लेकिन जब किसान, युवा, महिलाओं से किए गए वादे पूरे करने की बात आई तो इन वादों से मुकर गई। प्रदेश की जनता इसके लिए कभी माफ नहीं करेगी। भाजपा सरकार ने गरीब कल्याण की योजनाओं के सहारे, अनुसूचित जाति, जनजाति व गरीबों के आंसू पोछने का काम किया है। हर गरीब का पक्का मकान हो इस सपने को साकार करने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है। ▪

भगवान श्री राम की 108 फीट ऊंची प्रतिमा का शिलान्यास

आंध्रप्रदेश के कुरनूल में भगवान श्री राम की 108 फीट ऊंची प्रतिमा का शिलान्यास गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने किया। कुरनूल के मंत्रालयम में 500 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से भगवान श्री राम जी की भव्य पंच लोहा प्रतिमा का शिलान्यास हुआ। मंत्रालयम में स्थापित यह 108 फीट ऊंची प्रभु श्री राम की प्रतिमा युगों-युगों तक समग्र दुनिया को हमारे सनातन धर्म का संदेश देगी और वैष्णव परंपरा को देश और दुनिया में मजबूत करेगी। 108 हमारी हिन्दू संस्कृति में बहुत ही पवित्र संख्या है।

तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित मंत्रालयम गाँव में 10 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ यह प्रोजेक्ट ढाई साल में पूरा होगा। मंत्रालयम गाँव राघवेन्द्र स्वामी के मंदिर के लिए बहुत प्रसिद्ध स्थान है। साथ ही इस स्थान का ऐतिहासिक महत्व भी है, इसी तुंगभद्रा के किनारे महान विजय नगर साम्राज्य का उद्भव हुआ था जिसने आक्रान्ताओं को खदेड़ कर स्वदेश और स्वधर्म को पुर्नस्थापित किया। मंत्रालयम दास साहित्य प्रकल्प के तहत आवास, अन्न दानम, प्राण दानम, विद्या दानम, पेयजल और गौ संरक्षण के कई सारे विषयों को आगे बढ़ाया गया है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अयोध्या में कई वर्षों से लंबित श्री राम मंदिर का शिलान्यास कर उसके निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है। अब जल्द ही श्री राम मंदिर में रामलला की मूर्ति की स्थापना होगी और सैकड़ों वर्षों के बाद एक बार फिर प्रभु श्री राम अपने निज गृह में विराजमान होंगे। ▪

संत रविदास जी के संदेश को जन-जन तक ले जाएगी समरसता यात्रा -विष्णुदत्त शर्मा

भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार सागर में संत शिरोमणि श्री रविदास महाराज जी का 100 करोड़ की लागत से मंदिर बना रही है। इस मंदिर के निर्माण में समाज के हर वर्ग की भागीदारी हो इसके लिए जनअभियान परिषद के संयोजन में 25 जुलाई से 12 अगस्त के बीच प्रदेश के 5 स्थानों से संत रविदास मंदिर निर्माण समरसता यात्रा निकलेगी। यह यात्राएं प्रदेश के 55 हजार गावों से मिट्टी और एक मुट्ठी अन्न के साथ पवित्र नदियों और जलाशयों का जल एकत्र करते हुए 12 अगस्त को सागर पहुंचेगी, जहां प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की उपस्थिति में संत रविदास जी के भव्य मंदिर का शिलान्यास होगा। यह यात्राएं प्रदेश में संत रविदास जी के सामाजिक समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाएंगी। सागर में बनने वाला भव्य संत रविदास मंदिर सामाजिक समरसता का एक प्रमुख केंद्र बनेगा।

भारतीय जनता पार्टी वोट बैंक की राजनीति नहीं करती है, समाज का प्रत्येक वर्ग किस प्रकार आगे बढ़े और उसका उत्थान हो, इसके लिए भाजपा सरकार की नीति और नियत है। भाजपा सरकार ने मैहर में सामाजिक समरसता के केंद्र संत श्री रविदास जी का मंदिर साढ़े 3 करोड़ की लागत से बनाया है, जिसके बाद अब सागर में 100 करोड़ की लागत से संत रविदास जी का भव्य मंदिर बनेगा। इस मंदिर निर्माण में हर समाज शामिल हो इसके लिए 5 स्थानों से समरसता यात्राएं निकलेंगी। भारतीय जनता पार्टी की सरकार संत रविदास जी के विचारों को जमीन पर उतारने का काम कर रही है। यह यात्राएं 18 दिनों तक प्रदेश में भ्रमण कर आमजन को संत रविदास जी के मंदिर से जोड़ेंगी। यात्राओं के माध्यम से प्रदेश के 55 हजार गांवों से मिट्टी और 350 से अधिक नदियों से जल एकत्रित किया जाएगा।

कांग्रेस को कभी संत रविदास और वाल्मिकी याद नहीं आये - लालसिंह आर्य

दलितों और पिछड़ों के नाम पर राजनीति करने वाली कांग्रेस देश में 70 सालों से अधिक सत्ता में रही, लेकिन कभी भी उसे संत रविदास, वाल्मिकी, कबीरदास और डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की याद नहीं आई। उनके लिए अनुसूचित वर्ग सिर्फ एक वोट बैंक रहा। अगर सही मायनों में अनुसूचित वर्ग का कोई हितैषी है तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान हैं।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सागर में 100 करोड़ से संत रविदास जी का मंदिर बनाने का निर्णय लिया। 25 जुलाई से 12 अगस्त के बीच प्रदेश के 5 स्थानों से 45 जिलों में संत शिरोमणि श्री रविदास मंदिर निर्माण समरसता यात्राएं पहुंचेंगी एवं 7 जिलों में उपयात्राएं निकलेंगी। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा, केंद्रीय मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर, श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता इन यात्राओं को रवाना करेंगे। प्रदेश भर में भ्रमण करने के पश्चात यह यात्राएं 11 अगस्त तक सागर की सीमाओं तक पहुंचेंगी। 12 अगस्त को सागर में सभी यात्राएं सामूहिक निकलेंगी, जिसके पश्चात यहां प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी संत रविदास जी के भव्य मंदिर का भूमि पूजन करेंगे। ▪

भारतीय जनता पार्टी वोट बैंक की राजनीति नहीं करती है, समाज का प्रत्येक वर्ग किस प्रकार आगे बढ़े और उसका उत्थान हो, इसके लिए भाजपा सरकार की नीति और नियत है।

भाजपा सरकार ने मैहर में सामाजिक समरसता के केंद्र संत श्री रविदास जी का मंदिर साढ़े 3 करोड़ की लागत से बनाया है, जिसके बाद अब सागर में 100 करोड़ की लागत से संत रविदास जी का भव्य मंदिर बनेगा।

गरीब कल्याण एवं मजबूत संगठन से होगी विराट विजय

भारतीय जनता पार्टी सरकार की गरीब कल्याण की योजनाएं हमारी ताकत है। बूथ स्तर तक हमारा संगठन तंत्र मजबूत है। सरकार की योजनाओं और संगठन तंत्र की मजबूती के आधार पर आने वाले चुनाव में हमारी प्रचंड विजय होगी। प्रेम, स्नेह और एकता के साथ अपनी-अपनी विधानसभा में विजय का संकल्प लेकर जुटें।

गरीब कल्याण की योजनाओं के आधार पर विजय हासिल करेंगे- शिवराज सिंह चौहान

हमसे कोई जीत नहीं सकता, क्योंकि हमारे पास गरीब कल्याण की योजनाओं की ताकत है। प्रदेश में जितने विकास के काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किए है, इतना किसी ने भी नहीं किए। हम चुनावी समर में उतर चुके है। हमारा एक-एक मिनट अमूल्य है। सारे विधायक संकल्प लें कि जुनून और जी जान के साथ मैदान में उतरेंगे। भारतीय जनता पार्टी की सरकार में जो योजनाएं चलायी हैं उससे हर घर को लाभ पहुंचा है। हितग्राहियों को पार्टी से जोड़ने के अभियान में जुटें। एक एक वोट पर काम करें और उनसे संपर्क और संवाद करें। हमारे पास अपार उपलब्धियां है। इन उपलब्धियों को जनता तक ले जाने की जिम्मेदारी विधायकों की हैं। विजय संकल्प के साथ मैदान में निकलें और अपने विरोधियों को दृढ़ता के साथ जवाब दें।

सर्वाधिक समय तक कोई मुख्यमंत्री रहा है तो वह हैं शिवराज जी - मुरलीधर राव

हमारे पास केन्द्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जैसा सशक्त नेतृत्व है। सबसे अधिक लंबे समय तक कोई मुख्यमंत्री रहा है तो वह शिवराज जी है। विविधतापूर्ण राज्य में पार्टी को सर्व प्रिय बनाने और मजबूत करने का काम शिवराज जी ने किया है। आने वाले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी जीत का नया इतिहास बनाने का काम करेगी। गरीब कल्याण भाजपा का मूलमंत्र है। इसे साकार करने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने देश और प्रदेश में किया है। योजनाओं के लाभार्थियों को पार्टी से जोड़ना है। पार्टी ने 51 प्रतिशत वोट शेयर का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे पूरा करने में हितग्राहियों से संपर्क और संवाद करें। संगठन और सरकार ने जो कार्यक्रम तय किए है उन्हें हर विधायक पूरी सक्रियता के साथ अपनी विधानसभा में नीचे स्तर तक ले जाने का काम करें।

बूथ स्तर तक हमारा मजबूत संगठन तंत्र तैयार है। इस मजबूती के आधार पर अपने विपक्षियों को करारा जवाब दें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के रूप में हमारे पास सशक्त नेतृत्व है।

संगठन तंत्र की मजबूती के साथ मैदान में उतरें - विष्णुदत्त शर्मा

बूथ स्तर तक हमारा मजबूत संगठन तंत्र तैयार है। इस मजबूती के आधार पर अपने विपक्षियों को करारा जवाब दें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के रूप में हमारे पास सशक्त नेतृत्व है। नेतृत्व की ताकत और संगठन तंत्र की मजबूती के साथ हम चुनावी मैदान में जाएं। आने वाले दिनों में भाजपा के अभियान और कार्यक्रम प्रारंभ होंगे। उसे नीचे तक पहुंचाने की जिम्मेदारी प्रत्येक विधायक की है। आने वाले चुनाव की दृष्टि से तैयारियों में जुटें और किस तरह अपना बूथ और मजबूत हो, इस दिशा में कार्य योजना में जुट जाएं।

प्रबुद्धजनों से करें संपर्क, सरकार की उपलब्धियों को घर-घर पहुंचाएं-हितानंद

हम चुनावी समर में उतर चुके है और अब हमें मैदान में लड़ना है। केन्द्र सरकार के 9 वर्ष पूर्ण होने पर हम सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण केन्द्रित कार्यक्रम में जुटे थे। प्रदेश सरकार के 18 वर्ष के कार्यकाल की उपलब्धियों को हम घर घर पहुंचाएं। प्रबुद्धजनों से संपर्क कर कार्यकर्ताओं के साथ मंडल स्तर पर टिफिन पार्टी के आयोजन भी करें। सागर में बनने वाले संत रविदास जी के भव्य मंदिर को लेकर अनुसूचित जाति बाहुल्य विधानसभाओं से यात्राएं निकलेगी, जो एक मुठ्ठी मिट्टी, एक मुठ्ठी अनाज और जल एकत्र करेगी। यह यात्रा विधानसभा में प्रभावी हो, इसकी तैयारियों में जुटें। भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार ने 18 वर्षो में भूतो न भविष्यति काम किया है। हर विधानसभा में अनेक विकास कार्य हैं। इन विकास कार्यो का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार हो, इसके लिए अभियान के रूप में घर-घर संपर्क और प्रचार-प्रसार करें। ▪

लक्ष्य 51 प्रतिशत वोट प्राप्त करना - अजय जामवाल

मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता संगठन रचना और कार्य विस्तारीकरण की दृष्टि से प्रशिक्षित है, क्योंकि उन्हें यहाँ कुशाभाऊ ठाकरे जी जैसे संगठन मनीषियों से यह परम्परा विरासत में मिली है।

आगामी विधानसभा व लोकसभा चुनाव की दृष्टि से भाजपा के शक्ति केंद्र तथा बूथ व पन्ना समितियों को गतिशील बनाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी विधानसभा संचालन और समन्वय समिति की है। समन्वय समिति के सदस्य आपस में तालमेल व संवाद कायम कर सकारात्मक सोच व पारिवारिक भाव से काम करें।

विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक बूथ पर 51 प्रतिशत वोट प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित करें। आगामी चुनाव में हमें पूरी ताकत के साथ 200 पार के विजय लक्ष्य को प्राप्त करना है। देश एवं प्रदेश में विपक्ष झूठ और भ्रम की राजनीति कर जनता को भ्रमित करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन देश और प्रदेश की जनता भारतीय जनता पार्टी के साथ है। भारतीय जनता पार्टी का एक-एक कार्यकर्ता विपक्ष के हर झूठ और भ्रम को बेनकाब करें।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के बीते 9 वर्ष सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण को समर्पित रहे हैं। देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई है और नीतियों से गरीबों के जीवन में उल्लेखनीय बदलाव आया है। हमारी सरकार सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का संकल्प लेकर हर क्षेत्र, हर समाज, हर वर्ग के लिए भरपूर कार्य कर रही है। हमें केंद्र व प्रदेश सरकार की अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाकर लाभ दिलाना और हितग्राहियों को पार्टी से जोड़ने का काम करना है।

मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता संगठन रचना और कार्य विस्तारीकरण की दृष्टि से प्रशिक्षित है, क्योंकि उन्हें यहाँ कुशाभाऊ ठाकरे जी जैसे संगठन मनीषियों से यह परम्परा विरासत में मिली है। बूथ सशक्तिकरण अभियान की सफलता इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव का शंखनाद हो चुका है। प्रत्येक कार्यकर्ता के पास कोई न कोई जिम्मेदारी हो यह सुनिश्चित करें।

शक्ति केन्द्र व बूथ सशक्तिकरण के तहत बूथ कार्यकारिणी का सत्यापन, 22 करणीय कार्य और बूथ की बैठकें आयोजित करना है। शक्ति केंद्र एवं बूथ की टोली के साथ निरंतर बैठक करनी है। बूथ की सूची का सत्यापन करने के साथ ही बूथ समिति में हर समाज का प्रतिनिधित्व हो इस बात का विशेष ध्यान रखें। ▪

घोषणा पत्र समिति

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा जी द्वारा म. प्र. विधानसभा निर्वाचन - 2023 हेतु चुनाव घोषणा पत्र समिति की घोषणा की गयी है। जिसमें श्री जयंत मलैया- प्रमुख, श्री प्रभात झा- सह प्रमुख एवं श्री राजेन्द्र शुक्ला, श्री अजय विश्नोई, श्री ओम प्रकाश सकलेचा, श्री लाल सिंह आर्य, श्रीमती लता वानखेड़े, श्री ओम प्रकाश धुर्वे, श्री सुमेर सिंह सोलंकी, श्री डी.डी. उइके, श्री राज्यवर्धन सिंह, श्री अजय प्रताप सिंह, श्री कवीन्द्र कियावत, श्री दीपक विजयवर्गीय, श्री एस.एन.एस. चौहान, श्री अतुल सेठ, श्री मनोज पाल यादव, श्री पुष्यमित्र भार्गव, डॉ. विनोद मिश्रा सदस्य हैं। ▪

चुनाव प्रबंधन समिति

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा जी द्वारा म.प्र. विधानसभा निर्वाचन-2023 हेतु चुनाव प्रबंधन समिति की घोषणा की गयी। चुनाव प्रबंधन समिति में श्री नरेन्द्र सिंह तोमर संयोजक तथा श्री विष्णुदत्त शर्मा, श्री शिवराज सिंह चौहान, श्री कैलाश विजयवर्गीय, श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, श्री प्रहलाद पटेल, श्री नरोत्तम मिश्रा, श्री राकेश सिंह, श्री लाल सिंह आर्य, श्री अजय विश्नोई, श्री गजेन्द्र पटेल, श्री राम पाल सिंह, श्री प्रदीप लारिया, श्री भूपेन्द्र सिंह, श्री तुलसी सिलावट, श्री गोविन्द सिंह, श्री गणेश सिंह, श्री नारायण सिंह कुशवाह, श्री उमाशंकर गुप्ता, श्री हेमंत खण्डेवाल हैं। आमंत्रित श्री शिवप्रकाश जी, श्री भूपेन्द्र यादव, श्री अश्विनी वैष्णव, श्री मुरलीधर राव, श्री हितानंद जी हैं। ▪

आयुष्मान योजना से 50 करोड़ लाभार्थियों को स्वास्थ्य बीमा की गारंटी

ये मोदी है जो गरीब को 5 लाख रूपए की गारंटी का कार्ड देता है

आयुष्मान कार्ड, गरीब के इलाज के लिए 5 लाख रुपए की मोदी की गारंटी है

'सिकल सेल एनीमिया मुक्ति मिशन' की शुरुआत

सिकल सेल एनीमिया से मुक्ति का ये अभियान, अमृतकाल का प्रमुख मिशन बनेगा और जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, 2047 तक हम सब मिलकर के, एक मिशन मोड में अभियान चलाकर के ये सिकल सेल एनीमिया से हमारे आदिवासी परिवारों को मुक्ति दिलाएंगे, देश को मुक्ति दिलाएंगे।

मध्य प्रदेश में 1 करोड़ लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड, देश भर में आयुष्मान योजना के तहत अस्पतालों में करीब 5 करोड़ गरीबों का इलाज हो चुका है।

रानी दुर्गावती जी की प्रेरणा से 'सिकल सेल एनीमिया मुक्ति मिशन' एक बहुत बड़े अभियान की शुरुआत हो रही है। साथ ही मध्य प्रदेश में 1 करोड़ लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड भी दिए जा रहे हैं। इन दोनों ही प्रयासों के सबसे बड़े लाभार्थी हमारे गोंड समाज, भील समाज या अन्य हमारे आदिवासी समाज के लोग ही हैं।

शहडोल की इस धरती पर देश बहुत बड़ा संकल्प ले रहा है। ये संकल्प हमारे देश के आदिवासी भाई-बहनों के जीवन को सुरक्षित बनाने का संकल्प है। ये संकल्प है- सिकल सेल एनीमिया की बीमारी से मुक्ति का। ये संकल्प है- हर साल सिकल सेल एनीमिया की गिरफ्त में आने वाले ढाई लाख बच्चे और उनके ढाई लाख परिवार के जनों का जीवन बचाने का।

सिकल सेल एनीमिया जैसी बीमारी बहुत कष्टदाई होती है। इसके मरीजों के जोड़ों में हमेशा दर्द रहता है, शरीर में सूजन और थकावट रहती है। पीठ, पैर और सीने में असहनीय दर्द महसूस होता है, सांस फूलती है। लंबे समय तक दर्द सहने वाले मरीज के शरीर के अंदरूनी अंग भी क्षतिग्रस्त होने लगते हैं। ये बीमारी परिवारों को भी बिखेर देती है और ये बीमारी ना हवा से होती है ना पानी से होती है,ना भोजन से फैलती है। ये बीमारी ऐसी है जो माता-पिता से ही बच्चे में ये बीमारी आ सकती है, ये आनुवांशिक है और इस बीमारी के साथ जो बच्चे जन्म लेते हैं, वो पूरी जिंदगी चुनौतियों से जूझते रहते हैं।

पूरी दुनिया में सिकल सेल एनीमिया के जितने मामले होते हैं, उनमें से आधे 50

प्रतिशत अकेले हमारे देश में होते हैं। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि पिछले 70 सालों में कभी इसकी चिंता नहीं हुई, इससे निपटने के लिए कोई ठोस प्लान नहीं बनाया गया! इससे प्रभावित ज्यादातर लोग आदिवासी समाज के थे। आदिवासी समाज के प्रति बेरुखी के चलते पहले की सरकारों के लिए ये कोई मुद्दा ही नहीं था। लेकिन आदिवासी समाज की इस सबसे बड़ी चुनौती को हल करने का बीड़ा अब भाजपा की सरकार ने, हमारी सरकार ने उठाया है। हमारे लिए आदिवासी समाज सिर्फ एक सरकारी आंकड़ा नहीं है। ये हमारे लिए संवेदनशीलता का विषय है, भावनात्मक विषय है। जब मैं पहली बार गुजरात का मुख्यमंत्री बना था, उसके भी बहुत पहले से मैं इस दिशा में प्रयास कर रहा हूं।

करीब 50 साल से मैं और मंगूभाई आदिवासी इलाकों में एक साथ काम करते रहे हैं। और हम आदिवासी परिवारों में जाकर के इस बीमारी को कैसे रास्ते निकले, कैसे जागरूकता लाई जाए उस पर लगातार काम करते थे। जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री बना उसके बाद भी मैंने वहां इससे जुड़े कई अभियान शुरू किए। जब प्रधानमंत्री बनने के बाद मैं जापान की यात्रा पर गया, तो मैंने वहां नोबेल पुरस्कार जीतने वाले एक वैज्ञानिक से मुलाकात की थी। मुझे पता चला था कि वो वैज्ञानिक सिकल सेल बीमारी पर बहुत रिसर्च कर चुके हैं। मैंने उस जापानी वैज्ञानिक से भी सिकल सेल एनीमिया के इलाज में मदद मांगी थी।

सिकल सेल एनीमिया से मुक्ति का ये अभियान, अमृतकाल का प्रमुख मिशन बनेगा। और जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, 2047 तक हम सब मिलकर के, एक मिशन मोड में अभियान चलाकर के ये सिकल सेल एनीमिया से हमारे आदिवासी परिवारों को मुक्ति दिलाएंगे, देश को मुक्ति दिलाएंगे। और इसके लिए हम सबको अपना दायित्व निभाना होगा। ये जरूरी है कि सरकार हो, स्वास्थ्य कर्मी हों, आदिवासी हों, सभी तालमेल के साथ काम करें। सिकल सेल एनीमिया के मरीजों को खून चढ़ाने की जरूरत पड़ती है। इसलिए, उनके लिए ब्लड बैंक खोले जा रहे हैं। उनके इलाज के लिए बोन मैरो ट्रांसप्लांट की सुविधा बढ़ाई जा रही है। सिकल सेल एनीमिया के मरीजों की स्क्रीनिंग कितनी जरूरी है, ये आप भी जानते हैं। बिना किसी बाहरी लक्षण के भी कोई भी सिकल सेल का कैरियर हो सकता है। ऐसे लोग अनजाने में अपने बच्चों को ये बीमारी दे सकते हैं। इसलिए इसका पता लगाने के लिए जांच कराना, स्क्रीनिंग कराना बहुत आवश्यक है। जांच नहीं कराने पर हो सकता है कि लंबे समय तक इस बीमारी का मरीज को पता नहीं चले। भई कुंडली मिलाओ या न मिलाओ लेकिन सिकल सेल की जांच का जो रिपोर्ट है, जो कार्ड दिया जा रहा है उसको तो जरूर मिलाना और उसके बाद शादी करना।

तभी इस बीमारी को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाने से रोका जा सकेगा। इसलिए, हर व्यक्ति स्क्रिनिंग अभियान से जुड़े, अपना कार्ड बनवाए, बीमारी की जांच कराए। इस जिम्मेदारी को लेने के लिए समाज खुद जितना आएगा, उतना ही सिकेल सेल एनीमिया से मुक्ति आसान होगी।

बीमारियां सिर्फ एक इंसान को नहीं, जो एक व्यक्ति बीमार होता है उसको ही सिर्फ नहीं, लेकिन जब एक व्यक्ति परिवार में बीमार होता है तो पूरे परिवार को बीमारी प्रभावित करती हैं। जब एक व्यक्ति बीमार पड़ता है, तो पूरा परिवार गरीबी और विवशता के जाल में फंस जाता है। और मैं एक प्रकार से आपसे कोई बहुत अलग परिवार से नहीं आया हूं। मैं आपके बीच से ही यहां पहुंचा हूं। इसलिए मैं आपकी इस परेशानी को अच्छी तरह जानता हूं, समझता हूं। इसीलिए हमारी सरकार ऐसी गंभीर बीमारियों को समाप्त करने के लिए दिन रात मेहनत कर रही है। इन्ही प्रयासों से आज देश में टीबी के मामलों में कमी आई है। अब तो देश 2025 तक टीबी को जड़ से समाप्त करने के लिए काम कर रहा है।

हमारी सरकार बनने के पहले 2013 में कालाजार के 11 हजार मामले सामने आए थे। आज ये घटकर एक हजार से भी कम रह गए हैं। 2013 में मलेरिया के 10 लाख मामले थे, 2022 में ये भी घटते-घटते 2 लाख से कम हो गए। 2013 में कुष्ठ रोग के सवा लाख मरीज थे, लेकिन अब इनकी संख्या घटकर 70-75 हजार तक रह गई है। पहले दिमागी बुखार का कितना कहर था, ये भी हम सब जानते हैं। पिछले कुछ वर्षों में इसके मरीजों की संख्या में भी कमी आई है। ये सिर्फ कुछ आंकड़ें नहीं है। जब बीमारी कम होती है, तो लोग दुख, पीड़ा, संकट और मृत्यु से भी बचते हैं।

हमारी सरकार का प्रयास है कि बीमारी कम हो, साथ ही बीमारी पर होने वाला खर्च भी कम हो। इसलिए हम आयुष्मान भारत योजना लेकर आए है, जिससे लोगों पर पड़ने वाला बोझ कम हुआ है। आज यहाँ मध्य प्रदेश में 1 करोड़ लोगों को आयुष्मान कार्ड दिये गए हैं। अगर किसी गरीब को कभी अस्पताल जाना पड़ा, तो ये कार्ड उसकी जेब में 5 लाख रूपये के ATM कार्ड का काम करेगा। आप याद रखिएगा, आज आपको जो कार्ड मिला है, अस्पताल में उसकी कीमत 5 लाख रुपए के बराबर है। आपके पास ये कार्ड होगा तो कोई आपको इलाज के लिए मना नहीं कर पाएगा, पैसे नहीं मांग पाएगा। और ये हिन्दुस्तान में कही पर भी आपको तकलीफ हुई और वहां की अस्पताल में जाके ये मोदी की गारंटी दिखा देना उसको वहां भी आपको इलाज करना होगा। ये आयुष्मान कार्ड, गरीब के इलाज के लिए 5 लाख रुपए की गारंटी है और ये मोदी की गारंटी है।

देश भर में आयुष्मान योजना के तहत अस्पतालों में करीब 5 करोड़ गरीबों का इलाज हो चुका है। अगर आयुष्मान भारत का कार्ड नहीं होता तो इन गरीबों को एक लाख करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च करके बीमारी का उपचार करना पड़ता। आप कल्पना करिए, इनमें से कितने लोग ऐसे होंगे जिन्होंने जिंदगी की उम्मीद भी छोड़ दी होगी। कितने परिवार ऐसे होंगे जिन्हें इलाज करवाने के लिए अपना घर, अपनी खेती शायद बेचना पड़ता हो। लेकिन हमारी सरकार ऐसे हर मुश्किल मौके पर गरीब के साथ खड़ी नजर आई है।

5 लाख रुपए का ये आयुष्मान योजना गारंटी कार्ड, गरीब की सबसे बड़ी चिंता कम करने की गारंटी है। आपको ये जो कार्ड मिला है ना उसमें लिखा है 5 लाख रूपए तक का मुफ्त इलाज। इस देश में कभी भी किसी गरीब को 5 लाख रूपए की गारंटी किसी ने नहीं दी ये मेरे गरीब परिवारों के लिए ये भाजपा सरकार है, ये मोदी है जो आपको 5 लाख रूपए की गारंटी का कार्ड देता है।

गारंटी की इस चर्चा के बीच, आपको झूठी गारंटी देने वालों से भी सावधान रहना है। और जिन लोगों की अपनी कोई गारंटी नहीं है, वो आपके पास गारंटी वाली नई-नई स्कीम लेकर आ रहे हैं। उनकी गारंटी में छिपे खोट को पहचान लीजिए। झूठी गारंटी के नाम पर उनके धोखे के खेल को भांप लीजिए। जब वो मुफ्त बिजली की गारंटी देते हैं, तो इसका मतलब है कि वो बिजली के दाम बढ़ाने वाले हैं। जब वो मुफ्त सफर की गारंटी देते हैं, तो इसका मतलब है कि उस राज्य की यातायात व्यवस्था बर्बाद होने वाली है।

जब वो पेंशन बढ़ाने की गारंटी देते हैं, तो इसका मतलब है कि उस राज्य में कर्मचारियों को समय पर वेतन भी नहीं मिल पाएगा।

जब वो सस्ते पेट्रोल की गारंटी देते हैं, तो इसका मतलब है कि वो टैक्स बढ़ाकर आपकी जेब से पैसे निकालने की तैयारी कर रहे हैं। जब वो रोजगार बढ़ाने की गारंटी देते हैं, तो इसका मतलब है कि वो वहां के उद्योग-धंधों को चौपट करने वाली नीतियां लेकर के आएंगे। कांग्रेस जैसे दलों की गारंटी का मतलब, नीयत में खोट और गरीब पर चोट, यही है उनके खेल। वो 70 सालों में गरीब को भरपेट भोजन देने की गारंटी नहीं दे सके। लेकिन ये प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना से 80 करोड़ से ज्यादा लोगों को मुफ्त राशन की गारंटी मिली है, मुफ्त राशन मिल रहा है। वो 70 सालों में गरीब को महंगे इलाज से छुटकारा दिलाने की गारंटी नहीं दे सके। लेकिन आयुष्मान योजना से 50 करोड़ लाभार्थियों को स्वास्थ्य बीमा की गारंटी मिली है। वो 70 सालों में महिलाओं को धुएं से छुटकारा दिलाने की गारंटी नहीं दे सके। लेकिन उज्ज्वला योजना से करीब 10 करोड़ महिलाओं को धुआं मुक्त जीवन की गारंटी मिली है। वो 70 सालों में गरीब को पैरों पर खड़ा करने की गारंटी नहीं दे सके। लेकिन मुद्रा योजना से साढ़े 8 करोड़ लोगों को सम्मान से स्वरोजगार की गारंटी मिली है।

उनकी गारंटी का मतलब है, कहीं ना कहीं कुछ गड़बड़ है। आज जो एक साथ आने का दावा कर रहे हैं, सोशल मीडिया में उनके पुराने बयान वायरल हो रहे हैं। वो हमेशा से एक दूसरे को पानी पी-पीकर कोसते रहे हैं। यानी विपक्षी एकजुटता की गारंटी नहीं है। ये परिवारवादी पार्टियां सिर्फ अपने परिवार के भले के लिए काम करती आई हैं। यानी उनके पास देश के सामान्य मानवी के परिवार को आगे ले जाने की गारंटी नहीं है।

जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं, वो जमानत लेकर के बाहर घूम रहे हैं। जो घोटालों के आरोपों में सजा काट रहे हैं, वो एक मंच पर दिख रहे हैं। यानी उनके पास भ्रष्टाचार मुक्त शासन की गारंटी नहीं है। वो एक सुर में देश के खिलाफ बयान दे रहे हैं। वो देश विरोधी तत्वों के साथ बैठकें कर रहे हैं। यानी उनके पास आतंकवाद मुक्त भारत की गारंटी नहीं है। वो गारंटी देकर निकल जाएंगे, लेकिन भुगतना आपको पड़ेगा। वो गारंटी देकर अपनी जेब भर लेंगे, लेकिन नुकसान आपके बच्चों का होगा।

वो गारंटी देकर अपने परिवार को आगे ले जाएंगे, लेकिन इसकी कीमत देश को चुकानी पड़ेगी। इसलिए आपको कांग्रेस समेत ऐसे हर राजनीतिक दल की गारंटी से सतर्क रहना है।

इन झूठी गारंटी देने वालों का रवैया हमेशा से आदिवासियों के खिलाफ रहा है। पहले जनजातीय समुदाय के युवाओं के सामने भाषा की बड़ी चुनौती आती थी। लेकिन, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अब स्थानीय भाषा में पढ़ाई की सुविधा दी गई है। लेकिन झूठी गारंटी देने वाले एक बार फिर राष्ट्रीय शिक्षा नीति का विरोध कर रहे हैं।

ये लोग नहीं चाहते कि हमारे आदिवासी भाई-बहनों के बच्चे अपनी भाषा में पढ़ाई कर पाएं। वो जानते हैं कि अगर आदिवासी, दलित, पिछड़ा और गरीब का बच्चा आगे बढ़ जाएगा, तो इनकी वोट बैंक की सियासत चौपट हो जाएगी। आदिवासी इलाकों में स्कूलों का, कॉलेजों का कितना महत्व है। इसलिए हमारी सरकार ने 400 से अधिक नए एकलव्य स्कूलों में आदिवासी बच्चों को आवासीय शिक्षा का अवसर दिया है। अकेले मध्य प्रदेश के स्कूलों में ही ऐसे 24 हजार विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। पहले की सरकारों ने जनजातीय समाज की लगातार उपेक्षा की। हमने अलग आदिवासी मंत्रालय बनाकर इसे अपनी प्राथमिकता बनाया। हमने इस मंत्रालय का बजट 3 गुना बढ़ाया है। पहले जंगल और जमीन को लूटने वालों को संरक्षण मिलता था।

हमने फॉरेस्ट राइट एक्ट के तहत 20 लाख से ज्यादा टाइटल बांटे हैं। उन लोगों ने पेसा एक्ट के नाम पर इतने वर्षों तक राजनैतिक रोटियाँ सेंकी। लेकिन, हमने पेसा एक्ट लागू कर जनजातीय समाज को उनका अधिकार दिया। पहले आदिवासी परम्पराओं और कला-कौशल का मजाक बनाया जाता था। लेकिन, हमने आदि महोत्सव जैसे आयोजन शुरू किए।

बीते 9 वर्षों में आदिवासी गौरव को सहेजने और समृद्ध करने के लिए भी निरंतर काम हुआ है। अब भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन पर 15 नवंबर को पूरा देश जनजातीय गौरव दिवस मनाता है।

आज देश के अलग-अलग राज्यों में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित म्यूजियम बनाए जा रहे हैं। इन प्रयासों के बीच हमें पहले की सरकारों का व्यवहार भी भूलना नहीं है। जिन्होंने दशकों तक देश में सरकार चलाई, उनका रवैया आदिवासी समाज के प्रति, गरीबों के प्रति असंवेदनशील और अपमान-जनक रहा। जब तक आदिवासी महिला को देश का राष्ट्रपति बनाने की बात आई थी, तो हमने कई दलों का रवैया देखा है। आप एमपी के लोगों ने भी इनके रवैये को साक्षात देखा है। जब शहडोल संभाग में केन्द्रीय जन-जातीय विश्व-विद्यालय खुला, तो उसका नाम भी उन्होंने अपने परिवार के नाम पर रख दिया। जबकि शिवराज जी की सरकार ने छिंदवाड़ा विश्व-विद्यालय का नाम महान गोंड क्रांतिकारी राजा शंकर शाह के नाम पर रखा है। टंट्या मामा जैसे नायकों की भी उन्होंने पूरी उपेक्षा की, लेकिन हमने पातालपानी स्टेशन का नाम टंट्या मामा के नाम पर रखा। उन लोगों ने गोंड समाज के इतने बड़े नेता श्री दलवीर सिंह जी के परिवार का भी अपमान किया। उसकी भरपाई भी हमने की, हमने उन्हें सम्मान दिया। हमारे लिए आदिवासी नायकों का सम्मान हमारे आदिवासी युवाओं का सम्मान है।

हमें इन प्रयासों को आगे भी बनाए रखना है, उन्हें और रफ्तार देनी है। और, ये आपके सहयोग से, आपके आशीर्वाद से ही संभव होगा। मुझे विश्वास है, आपके आशीर्वाद और रानी दुर्गावती जी की प्रेरणा ऐसे ही हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेंगी।

5 अक्टूबर को रानी दुर्गावती जी की 500वीं जयंती आ रही है। रानी दुर्गावती जी के पराक्रम की इस पवित्र भूमि पर आया हूं तो मैं देशवासियों के समक्ष घोषणा करता हूं कि रानी दुर्गावती जी की 500वीं जन्म जयंती पूरे देश में भारत सरकार मनाएगी। रानी दुर्गावती जी के जीवन के आधार पर फिल्म बनाई जाएगी, रानी दुर्गावती का एक चांदी का सिक्का भी निकाला जाएगा, रानी दुर्गावती जी का पोस्टल स्टैंप भी निकाला जाएगा। ▪

इकोनॉमी दुनिया में तीसरे नंबर पर हो के रहेगी

■ गरीब और वंचित का जीवन बेहतर बना ■ एक ही लक्ष्य है विकास

देश का आत्मसम्मान और आत्मविश्वास आज अभूतपूर्व ऊंचाई पर

9 वर्षों में नए भारत की मजबूत नींव का निर्माण हो चुका है

NDA आज N-न्यू इंडिया, D-डेवलप्ड नेशन और A - एस्पिरेशन ऑफ पीपुल एंड रीजन्स का प्रतीक है

- भारत के आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र की यात्रा में आने वाले 25 साल बेहद महत्वपूर्ण होंगे।
- जब सरकारें भ्रष्टाचार, वंशवाद और जातिवाद की राजनीति को प्राथमिकता देती हैं तो यह केवल भारत के हितों को नुकसान पहुंचाती है।
- अतीत में बनी गठबंधन सरकारों ने केवल पॉलिसी पैरालिसिस, अनिश्चितता, सत्ता के केन्द्रों का निर्माण, अविश्वास और भ्रष्टाचार को जन्म दिया है।
- एनडीए ने हमेशा Coalition of Contributions में विश्वास किया है, कांग्रेसी नेतृत्व वाले 'Coalition of Compulsions' में नहीं।
- मुद्रा लोन हो, स्टार्टअप हो, महिलाएं अब भारत की आर्थिक प्रगति में सबसे आगे हैं।
- मेरे शरीर का हर कण, मेरे समय का हर पल, देश की सेवा के लिए समर्पित है।

NDA, 'coalition compulsions' का नहीं, बल्कि 'coalition contributions' का प्रतीक है। क्रेडिट भी सबका है, दायित्व भी सबका है। NDA में कोई भी राजनीतिक दल बड़ा और कोई भी राजनीतिक दल छोटा नहीं है। हम सभी एक लक्ष्य के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

एक तरह से NDA, श्रद्धेय अटल जी की एक और विरासत है, जो हमें जोड़े हुए है। NDA के निर्माण में आडवाणी जी ने भी बहुत अहम् भूमिका निभाई थी और वो आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। हमारे प्रकाश सिंह बादल जी हों, बाला साहेब ठाकरे जी हों, जॉर्ज फर्नांडीस जी हों, राम विलास पासवान जी हों, अजीत सिंह जी हों, शरद यादव जी हों, सभी ने अपनी-अपनी तरह से NDA को मजबूती देने का काम किया। आज प्रकाश सिंह बादल जी और बाला साहेब ठाकरे जी के सच्चे अनुयायी भी हमारे बीच में हैं। हाल में ही NDA के गठन के 25 साल पूरे हुए हैं। ये 25 वर्ष- देश की प्रगति को गति देने और क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने के रहे हैं। यानि राज्यों के विकास से राष्ट्र का विकास- इस मंत्र को NDA ने निरंतर सशक्त किया है।

NDA के 25 वर्षों की इस यात्रा के साथ एक और सुखद संयोग जुड़ा है। ये वो समय है जब हमारा देश, आने वाले 25 वर्षों में एक बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कदम बढ़ा रहा है। ये लक्ष्य विकसित भारत का है, आत्मनिर्भर भारत का है। कोटि-कोटि भारतीय आज नए संकल्पों की ऊर्जा से भरे हुए हैं। इस महत्वपूर्ण कालखंड में NDA की बहुत बड़ी भूमिका है। एक तरह से ये नई ऊर्जा से भरी हुई त्रिशक्ति है।

N से **New India** के लिए...
D से **Developed Nation** के लिए...
A से **Aspiration of People and Regions** के लिए...

आज देश का गरीब, देश का मध्यम वर्ग, देश के युवा, महिलाएं, दलित-पीड़ित-शोषित-वंचित, आदिवासी, सभी का विश्वास NDA पर है। हमारे जो समाजशास्त्री हैं, राजनीतिशास्त्री और अर्थशास्त्री हैं, वो भी भारत के विकास के लिए NDA को एक पॉजिटिव फोर्स के रूप में देख रहे हैं। हमारा संकल्प पॉजिटिव है, एजेंडा पॉजिटिव है, भावना पॉजिटिव है और हमारा रास्ता भी पॉजिटिव है।

सरकारें बहुमत से बनती हैं, लेकिन देश सबके प्रयास से चलता है। इसलिए जब हम विकसित भारत के निर्माण में जुटे हैं, तब NDA, सबका प्रयास की भावना का प्रतिनिधित्व कर रहा है। हमारे देश में राजनीतिक गठबंधनों की एक लंबी परंपरा रही है। लेकिन जो भी गठबंधन निगेटिविटी के साथ बने, वे सफल नहीं हो पाए। कांग्रेस ने नब्बे के दशक में देश में अस्थिरता लाने के लिए गठबंधनों को इस्तेमाल किया। कांग्रेस ने सरकारें बनाईं, सरकारें बिगाड़ीं। इसी दौर में 1998 में NDA का गठन हुआ था। लेकिन NDA क्यों बना? क्या तब सिर्फ सरकार बनाना या सत्ता हासिल करना ही NDA का लक्ष्य था? ऐसा नहीं था।

NDA, किसी के विरोध में नहीं बना था। NDA, किसी को सत्ता से हटाने के लिए नहीं बना था। बल्कि NDA का गठन, देश में स्थिरता लाने के लिए हुआ था। और जब देश में स्थिर सरकार होती है, तो देश वो फैसले करता है, जो कालजयी होते हैं, देश की दिशा बदलने वाले होते हैं। ये हमने अटल जी के कार्यकाल के दौरान भी देखा और ये पिछले 9 वर्षों में भी हम बार-बार देख रहे हैं।

भारत में स्थिर और मजबूत सरकार होने से आज पूरे विश्व का भारत पर भरोसा बढ़ा है। NDA की एक और विशेषता रही है। जब हम विपक्ष में थे, तब भी हमने हमेशा सकारात्मक राजनीति की। हमने कभी नकारात्मक राजनीति का रास्ता नहीं चुना। हमने लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए, अपना हर दायित्व निभाया। हमने विपक्ष में रहकर सरकारों का विरोध किया, उनके घोटालों को सामने लाए, लेकिन कभी जनादेश का अपमान नहीं किया। हमने सरकारों का विरोध करने के लिए कभी विदेशी मदद नहीं मांगी। हम विपक्ष में रहे लेकिन हमने देश के विकास में ना रोड़े अटकाए और ना ही रुकावट बने।

आजकल हम देखते हैं कि केंद्र सरकार की योजनाओं को विपक्ष की कई राज्य सरकारें अपने यहां लागू नहीं होने देंती। अगर ये योजनाएं लागू होती भी हैं तो उन्हें रफ्तार नहीं पकड़ने दी जाती। ये लोग सोचते हैं कि अगर उनके राज्यों में गरीबों को केंद्र की योजना का लाभ मिल गया, तो कैसे काम चलेगा? उनकी राजनीति कैसे चलेगी? गरीबों के घर के लिए, हर घर जल के लिए, आयुष्मान भारत योजना के लिए, कितनी ही बार विपक्ष के मुख्यमंत्रियों को मुझे चिट्ठियां लिखनी पड़ती हैं। लेकिन ये लोग गरीब के कल्याण को भी राजनीतिक नफा-नुकसान से ही तौलते रहे हैं।

जब गठबंधन सत्ता की मजबूरी का हो, जब गठबंधन भ्रष्टाचार की नीयत से हो, जब गठबंधन परिवारवाद की नीति पर आधारित हो, जब गठबंधन जातिवाद और क्षेत्रवाद को ध्यान में रखकर किया गया हो, तो वो गठबंधन देश का बहुत नुकसान करता है। 2014 से पहले की गठबंधन सरकार का उदाहरण हमारे सामने है। तमाम उठा-पटक के बीच वो गठबंधन सरकार किसी तरह अपने 10 साल खींच पाई। लेकिन देश को क्या मिला? प्राइम मिनिस्टर के ऊपर भी एक आलाकमान! पॉलिसी पैरालिसिस! निर्णय लेने में अक्षमता। भांति-भांति के पावर सेंटर्स। अव्यवस्था और अविश्वास! खींचतान और करप्शन! लाखों करोड़ों के घोटाले!

जब भी पिछली सरकार के कुशासन पर सवाल उठते थे, तो गठबंधन की मजबूरियां गिनाई जाती थीं। बहाना ये कि गठबंधन के कारण। क्रेडिट लेने के लिए तो हर कोई आगे आता था, लेकिन जैसे ही कुछ गड़बड़ होती थी, तुरंत अपने सहयोगियों पर दोष मढ़ दिया जाता था। हम सौभाग्यशाली हैं कि एनडीए की स्थिति इससे बिल्कुल विपरीत है अलग है। हमारे लिए गठबंधन मजबूरी का नहीं, बल्कि मजबूती का माध्यम है।

NDA, 'coalition compulsions' का नहीं, बल्कि 'coalition contributions' का प्रतीक है। क्रेडिट भी सबका है, दायित्व भी सबका है। NDA में कोई भी राजनीतिक दल बड़ा और कोई भी राजनीतिक दल छोटा नहीं है। हम सभी एक लक्ष्य के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

2014 हो या फिर 2019, भाजपा को बहुमत से अधिक सीटें मिलीं। लेकिन सरकार NDA की ही रही, NDA की भागीदारी बनी रही।

NDA के गठन से लेकर ही हमारा संकल्प समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का रहा है। जो वंचित है, जो शोषित है, उसको सशक्त करना हमारी प्राथमिकता है। आज देश की जनता देख रही है कि NDA में कौन-कौन से दल हैं? NDA में जितने भी दल हैं, वे समाज के ऐसे वर्गों के बीच काम करते हैं जो वंचित रहे हैं, शोषित रहे हैं। हमारे समूह में गांव, किसान, दलित, पिछड़े, आदिवासियों के बीच काम करने वाले ये सारे नेता हैं। NDA में जो दल हैं वे ऐसे क्षेत्रों में काम करते हैं, जिनकी पहले दिल्ली में सुनवाई तक नहीं होती थी। NDA, एक प्रकार से क्षेत्रीय आकांक्षाओं का बहुत ही खूबसूरत इंद्रधनुष है। NDA देश के लिए, देश के लोगों के लिए समर्पित है।

NDA की विचारधारा है-
- Nation First,
- Security of Nation First.

NDA की विचारधारा है-
- Progress First.

NDA की विचारधारा है-

Empowerment of People First.

एनडीए की बैठक में हमने संकल्प लिया था कि हम देश की गरीबी को गरीबों की ताकत से

ही गरीबी को परास्त करेंगे। इसलिए इन वर्षों में हमारा सबसे ज्यादा जोर गरीबों को सशक्त करने पर रहा। हमने श्रमयोगी को सम्मान दिया, डिग्निटी ऑफ लेबर पर बल दिया। हमने गरीब को सुरक्षा का एहसास दिया। हमने गरीब को ये विश्वास दिया कि आपके हर प्रयास के पीछे NDA सरकार, एक भरोसेमंद साथी की तरह आपके साथ खड़ी है। जैसे किसान को अगर सही बीज और खाद-पानी मिल जाए तो वो पैदावार का रिकॉर्ड बना देता है। वैसे ही हमने गरीबों को सशक्त करने के लिए उन्हें हर संभव मदद की। इसका परिणाम क्या आया? अभी नीति आयोग की सबसे ताजा स्टडी आई है। इस स्टडी के मुताबिक 2015-16 के बाद के 5 वर्षों में ही साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ गए हैं।

इसके पूर्व पहले वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट में सामने आया था कि कैसे बहुत कम समय में ही 40-42 करोड़ लोगों ने गरीबी को परास्त किया है। IMF के मुताबिक एक्स्ट्रीम पॉवर्टी यानि अति गरीबी भी भारत में खत्म होने की कगार पर है। ये आईएमएफ की रिपोर्ट कह रही है।

यहां NDA के आप सभी साथी तो जमीन से जुड़े लोग हैं। जब किसी गरीब को पक्का घर मिलता है, तो ये सिर्फ एक छत की जरूरत पूरा नहीं करता। बल्कि ये उस परिवार को सुरक्षा कवच देता है, उसके सपनों को पंख देता है। जब गरीबों को बैंक लोन देने के लिए सरकार अपनी तरफ से गारंटी देती है, तब उनको एक साथी मिलता है, एक सहारा मिलता है। और ऐसे में प्रगति के लिए, तरक्की के लिए उनके प्रयास दोगुने हो जाते हैं।

जब गरीब को हम मुफ्त इलाज का भरोसा देते हैं, तो उससे एक परिवार ही नहीं, बल्कि उसकी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य भी सुरक्षित हो जाता है। आप सभी जानते हैं कि पहले जब गरीब परिवार में बीमारी आती थी, तो उसके पास दो ही विकल्प होते थे। या तो अपनी आंखों के सामने अपनों को जीवन के लिए संघर्ष करते देखें, या फिर मकान, दुकान, खेत-खलिहान जो भी थोड़ा बहुत पास में हो, उसे बेचे, या गिरवी रखे। पीढ़ी दर पीढ़ी गरीब को गरीब रखने के इस कुचक्र को भी NDA सरकार की अनेक योजनाओं ने तोड़ दिया है। गांधी जी से लेकर बाबा साहेब आंबेडकर और लोहिया जी तक सभी ने जिस Social Justice की, सामाजिक न्याय की अवधारणा की थी, और मैं समझता हूं हम जो कर रहे हैं वो यही सच्चा सोशल जस्टिस है, सामाजिक न्याय है।

NDA सरकार ने वोट बैंक की राजनीति को विकासवाद की राजनीति में बदला है। ये NDA शासन ही है जिसमें छोटे किसानों, रेहड़ी-पटरी-फुटपाथ वालों को पहली बार मदद मिल रही है। हमारे विश्वकर्मा साथियों को भी पहली बार ये विश्वास मिला है कि उनके लिए भी कोई सरकारी योजना बन सकती है।

गरीबी से भारत की इस लड़ाई का एक और पक्ष है। आप सब ये भी जानते हैं कि पहले हमारी माताओं-बहनों के नाम पर प्रॉपर्टी खरीदने का चलन कम ही था। वे एक प्रकार से घर के, समाज के आर्थिक फैसलों से कटी हुई थीं। देश की आधी आबादी और परिवार को चलाने वाली ताकत का जब ये हाल हो, तो गरीबी से पार पाना आसान कैसे हो सकता था। अब जब बहनों के नाम बैंक अकाउंट खुले, उनके नाम पर घरों की रजिस्ट्री हुई, उनके नाम पर ऋण मिलने लगे, तो एक नया सामर्थ्य समाज में पैदा हुआ।

मुद्रा योजना की सबसे बड़ी लाभार्थी हमारी बहनें हैं। स्टार्ट अप इंडिया की सबसे बड़ी लाभार्थी हमारी बेटियां हैं। जो देश में 9 करोड़ स्वयं सहायता समूह बने हैं, उनकी सबसे बड़ी लाभार्थी गांव में रहने वाली, दलित-पिछड़े-आदिवासी समाज की बहनें हैं। मैं पिछले दिनों मध्य प्रदेश गया था, एक आदिवासी गांव में गया था, वहां ये स्वयं सहायता समूह की आदिवासी बहनों से मिलना हुआ, जितने समूह थे उन्होंने कहा अब तो हमारी पहचान है हम लखपति दीदी हैं। हमारा कारोबार इतना है कि हम लखपति बन गए हैं। ये बहुत बड़ा परिवर्तन है।

NDA सरकार ने महिलाओं के कल्याण को, उनकी तकलीफ कम करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। जब घर में टॉयलेट बना तो, बहनों को सम्मान और सुरक्षा दोनों मिला। जब नल से जल आया, गैस का सिलेंडर आया, तो उनकी परेशानी कम हुई, उनके समय की बचत हुई। इस समय का वो अपने परिवार की आय बढ़ाने में उपयोग कर रही है। ये सिर्फ गरीबी से बाहर निकलने का प्रयास नहीं है, बल्कि women-led development का रास्ता है, जिसे NDA सशक्त कर रहा है। आज डिफेंस से लेकर माइनिंग तक हर सेक्टर को बेटियों के लिए खोल दिया गया है। देश को पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति देने का सौभाग्य NDA को मिला है। 9 साल में हमने केवल एक लक्ष्य के साथ काम किया है कि हम देशवासियों का, खासकर गरीब और वंचित का जीवन बेहतर बना सकें।

जो लोग एकेडमिक्स से जुड़े हैं, गवर्नेंस स्टडीज से जुड़े हैं, वो इस दिशा में रिसर्च करें। किसी भी सरकार का फ्यूचर विजन क्या है, स्केल ऑफ वर्किंग क्या है, स्पीड ऑफ वर्किंग क्या है, उसकी वर्क स्पिरिट क्या है, इसका मूल्यांकन किया जाए। इन सभी पैरामीटर्स पर एनडीए सरकार का काम न केवल असाधारण साबित होगा, बल्कि एक मॉडल के तौर पर उभरेगा। हम केवल आज की जरूरतों के लिए काम नहीं कर रहे हैं, हम आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को भी सुरक्षित बना रहे हैं।

बहुत आसान था कि आजादी के 75 साल पूरे होने पर हम भी कोई स्मारक बना देते, दिल्ली में कोई ऐसी इमारत अपने नाम पर खड़ी कर देते या कोई मूर्ति लगवा देते। लेकिन हम देश के कोने-कोने में एक लाख अमृत सरोवर बना रहे हैं। हमारा स्केल, हमारी स्पीड, हमारी स्पिरिट, और इसकी वजह से हमारे काम का स्कोप, ये अभूतपूर्व है। हम विकास भी कर रहे हैं और विरासत को भी सहेज रहे हैं। हम Make In India पर भी बल दे रहे हैं और पर्यावरण की रक्षा भी कर रहे हैं।

हमारी नीयत साफ है, नीति स्पष्ट है और निर्णय ठोस हैं। NDA सरकार ने बीते 9 वर्षों में भ्रष्टाचार के हर रास्ते को बंद करने के लिए हर संभव प्रयास किए हैं। पहले सत्ता के गलियारे में जो बिचौलिए घूमते थे हमने उनको बाहर कर दिया है। हमने टेक्नॉलॉजी की मदद से लीकेज की हर संभावना को दूर किया है। जनधन आधार मोबाइल इसकी त्रिशक्ति से हमने करोड़ों फर्जी लाभार्थियों को गरीबों का हक छीनने से रोका है।

देश में करीब-करीब 10 करोड़ ऐसे फर्जी लाभार्थी थे, जिनका जन्म ही नहीं हुआ था और जिन्हें सरकारी मदद जा रही थी। ये पैसे मेरे किसी गरीब भाई-बहन के थे, किसी आदिवासी के थे, किसी पिछड़े और दलित साथी के थे। ये NDA सरकार है जिसने गरीब से हो रही इस लूट को बंद किया है। इन 9 वर्षों में 30 लाख करोड़ रुपए, ये आंकड़ा कोई छोटा नहीं है, 30 लाख करोड़ रुपए डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर 'DB' के जरिए सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुंचे हैं। ऐसा करके हमने गरीबों का कम से कम तीन लाख करोड़ रुपया गलत हाथों में जाने से बचाया है।

लोकतन्त्र में राजनीति अलग-अलग विजन को देश के सामने रखने का एक माध्यम होती है। लेकिन, हर विजन का, हर विचारधारा का मकसद एक ही होता है- गुड गवर्नेंस और देशवासियों की सेवा! पॉलिटिक्स में प्रतिस्पर्धा

हो सकती है, लेकिन शत्रुता नहीं होती। आखिरकार, हम एक ही देश के लोग हैं, एक ही समाज का हिस्सा हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, आज विपक्ष ने अपनी एक ही पहचान बना ली है- हमें गाली देना, हमें नीचा दिखाना। बावजूद इसके, हम NDA के सभी साथियों ने हमेशा देश को दलों के हित से ऊपर रखा है। हमने राजनीतिक सौहार्द और शालीनता को बनाए रखने के लिए प्रयास किए हैं। ये एनडीए सरकार ही है जिसने प्रणब दा को भारत रत्न दिया। वो जीवन भर कांग्रेस में रहे थे, लेकिन हमने उन्हें ये सम्मान देने में संकोच नहीं किया।

ये एनडीए सरकार ही है जिसने मुलायम सिंह यादव, शरद पवार, गुलाम नबी आजाद, तरुण गोगोई, एससी जमीर, मुजफ्फर बेग ऐसे अनेक नेताओं को, जो राजनीतिक दृष्टि से हमारे साथ नहीं हैं, हमारे खिलाफ हैं, हमने पद्म सम्मान दिया है उन लोगों को। ये नेता भी कभी बीजेपी या NDA में नहीं थे। लेकिन, हमने देश सेवा में उनके लंबे योगदान को स्वीकार किया, उसे सराहा, और उन्हें सम्मानित किया। लोकतन्त्र की ये मूल भावना एनडीए की कार्यशैली में आपको हर जगह दिखेगी। इस समय भारत G-20 समिट को होस्ट कर रहा है। इससे जुड़े आयोजन देश के हर राज्य में, हर हिस्से में हो रहे हैं। हमने इन आयोजनों के venue तय करते समय कभी ये नहीं सोचा कि किस राज्य में कौन सी पार्टी की सरकार है।

कोरोना के समय भी, मैंने लगातार सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ व्यक्तिगत संवाद किया, मीटिंग्स कीं। कौन मुख्यमंत्री किस पार्टी का है, ये विचार कभी हमारे बीच नहीं आया। इसी तरह, आप उन दिनों को भी याद करिए जब भाषा, लैंग्वेज लोगों को बांटने के एक टूल के तौर पर इस्तेमाल होती थी। लेकिन, एनडीए सरकार की सोच देखिए.. एनडीए सरकार ने मातृभाषा को बल देना शुरू किया और आज भाषाओं के माध्यम से मातृभाषा के माध्यम से युवा डॉक्टर और इंजीनियर बने इसका अवसर देने का जरिया भाषा बन रही है।

हमारी विरासत को, धरोहरों को ग्लोबल बनाने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। आज योग वैश्विक एकता का एक माध्यम बन गया है। आज मिलेट्स एक ग्लोबल ट्रेंड बन रहा है, श्रीअन्न की चर्चा हो रही है और इसका लाभ हर क्षेत्र के छोटे-छोटे किसानों को मिल रहा है। हम देश के लोगों को जोड़ते हैं, वो देश के लोगों को तोड़ते हैं।

विपक्ष के लोग जिस गलती को बार-बार दोहरा रहे हैं, वो है- देश के सामान्य मानवी की समझदारी को underestimate करते हैं। लेकिन, देश की जनता सब कुछ खुली आंखों से देख भी रही है, और समझ भी रही है। जनता देख रही है कि- ये पार्टियां क्यों इकट्ठा हो रही हैं। जनता ये भी जान रही है कि- वो कौन सा Glue है-गोंद है जो इन लोगों को, इन पार्टियों को जोड़ रहा है।

किस तरह, छोटे-छोटे स्वार्थ के लिए मूल्यों और सिद्धांतों से समझौता किया जा रहा है। लोग देख रहे हैं कि केरल में लेफ्ट और कांग्रेस एक दूसरे के खून के प्यासे हैं। लेकिन, बेंगलुरु में दोनों पार्टियों के नेता हाथ में हाथ डालकर मुस्कुरा रहे हैं। लोग देख रहे हैं कि बंगाल में लेफ्ट और कांग्रेस के नेताओं पर, उनके कार्यकर्ताओं पर TMC हमले कर रही है। लेकिन, इनके नेता TMC के खिलाफ, कुछ भी बोलने से बच रहे हैं। इसीलिए देश के लोग कह रहे हैं कि ये गलबहियाँ, मिशन नहीं हैं मजबूरियाँ हैं।

इनकी सच्चाई आपको दूसरे राज्यों में भी दिखाई देगी। नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता और पीडीपी के नेता एक दूसरे को कैसी-कैसी गालियां देते है! RJD और JDU के लोग कैसे-कैसे शब्दों से एक दूसरे को नवाजते थे! देश की जनता ने ये सब करीब से देखा है, और देख रही है। इसलिए, इनकी नूराकुश्ती हो या मजबूरी की दोस्ती, इसकी हकीकत 140 करोड़ देशवासियों के सामने आ चुकी है।

अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए ''ये लोग पास-पास तो आ सकते हैं, लेकिन साथ नहीं आ सकते''। इन्हें अपने कार्यकर्ताओं की भी परवाह नहीं है। ये अपने कार्यकर्ताओं से उम्मीद करते हैं कि जीवन भर जिसका विरोध किया, उसका अचानक सत्कार करने लगें। अब ऐसे में इन दलों का कार्यकर्ता खुद भ्रमित है कि करें तो क्या करें?

जो लोग आज मोदी को कोसने के लिए इतना समय लगा रहे हैं, अच्छा होता वो देश के लिए सोचने में, गरीब के लिए सोचने में अपना समय लगाते। हम उनके लिए सिर्फ प्रार्थना ही कर सकते हैं।

24 का चुनाव बहुत दूर नहीं है। देश के लोग मन बना चुके हैं कि तीसरी बार फिर NDA को ही अवसर देना है। देश का मन आप जानते हैं, लेकिन विदेश का मन भी बहुत कुछ संकेत दे रहा है। आम तौर पर, जब भी किसी देश में चुनाव का समय निकट आता है, तो उसका बहुत बड़ा असर उसके वैश्विक संबंधों पर भी होता है। हरेक को लगता है कि भाई अब तो चुनाव का वर्ष है अब इस सरकार के साथ अभी रहने दो, एक बार चुनाव हो जाए नई सरकार आएगी तब सोचेंगे। स्वाभाविक है.. कोई भी दूसरा देश उस सरकार के साथ, जब चुनाव बिल्कुल निकट हो वहां संबंध बनाने से पहले, संवाद करने से पहले सौ बार सोचता है। फॉरेन कंट्रीज हमेशा चुनाव के नतीजों का इंतजार करते हैं। लास्ट इयर जब होता है तो सोचते हैं कि एक बार नतीजे आ जाने दो फिर देखेंगे। जो सरकार जाने वाली होती है, उस पर कोई भी देश अपना टाइम और एनर्जी इन्वेस्ट करना नहीं चाहता। लेकिन, इस समय भारत का मामला कुछ अलग है।

सबको पता है कि हमारे यहाँ कुछ महीनों में चुनाव होने वाले हैं। फिर भी, अनेकों महत्वपूर्ण देश, चाहे अमेरिका हो, फ्रांस हो, ऑस्ट्रेलिया हो, जापान हो, UAE हो, यूके हो, सब NDA सरकार के प्रतिनिधियों को Invite कर रहे हैं। तमाम देश भारत को मान और सम्मान दे रहे हैं। कितने ही देश, भारत के साथ बड़े-बड़े और वो भी दूरगामी समझौते कर रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि वो भी जानते हैं कि भारत के लोगों का भरोसा NDA पर है। यानी, भारत में जनमत किसके साथ है, ये दुनिया के देशों को भी पता है।

NDA का विस्तार सिर्फ संख्या या भौगोलिक विस्तार का नहीं है। ये NDA का जो विस्तार है ये हमारे प्रति विश्वास का दायरा भी बढ़ा रहा है। जनता NDA की हिस्ट्री और कैमिस्ट्री दोनों को देख रही है। तभी तो हमारा गणित भी बड़ी आसानी से जुड़ता है। आप देखिए, 2014 में NDA को देश ने लगभग 38 प्रतिशत वोट दिए थे। लेकिन 2019 में हमारे सेवाभाव को देखते हुए देश ने हमें 45 प्रतिशत वोट दिए। और इनमें सवा दो सौ से अधिक सीटें ऐसी थीं, जो हम जीतकर के आए, सवा दो सौ से अधिक सीटें जहां 50 प्रतिशत से अधिक वोट शेयर NDA को मिला है।

NDA का हर सहयोगी जो मेहनत कर रहा है, उससे ये तय है कि 24 में NDA का वोट शेयर 50 प्रतिशत से भी ऊपर जाएगा। आपकी मेहनत रंग लाने वाली है, विश्वास से कहता हूं। आपकी मेहनत बेकार नहीं जाएगी, देश की जनता को आपके सबके नेतृत्व पर भरोसा है। पूरे देश में हमारे अनेक साथी, एक बड़ी ताकत बनकर उभरेंगे। हम हर भूभाग, हर वर्ग, हर समाज को विकसित भारत के मिशन से जोड़ेंगे। हमें विकास के मुद्दे पर ही जनता के पास जाना है। हमारा एक ही लक्ष्य है- विकास, भारत का विकास।

भारत के कोटि-कोटि लोगों की आशा-आकांक्षा ही हमारा एजेंडा है। हम पूरी शक्ति लगा देंगे, हम मेहनत करेंगे, ईमानदारी से काम करेंगे, और यही हमारी गारंटी है। लाल किले से मैंने कहा था- यही समय है, सही समय है। आज देश में एक माहौल बन चुका है। देश का आत्मसम्मान और आत्मविश्वास आज अभूतपूर्व ऊंचाई पर है। जैसे कोई इमारत बनाने से पहले नींव का निर्माण होता है, वैसे ही पिछले 9 वर्षों में नए भारत की एक मजबूत नींव का निर्माण हो चुका है। इस मजबूत नींव पर हम सभी को नए भारत का, आत्मनिर्भर भारत का, विकसित भारत का निर्माण करके ही रहना है। आपने मुझ पर इतना विश्वास रखा है, इतना प्रेम बरसाया है, इतना स्नेह दिया है। आपको विश्वास दिलाता हूं, देशवासियों को विश्वास दिलाता हूं कि अपने परिश्रम में, अपने प्रयासों में कहीं कोई कमी नहीं रहने दूंगा।

मुझसे गलती हो सकती है लेकिन बदनीयती से दूर रहूंगा, बदनीयती से कोई काम नहीं करूंगा। और साथियों मेरा जीवन आप देखते हैं, देश देख रहा है..'मेरे शरीर का हर कण, मेरे समय का हर क्षण, देश को ही समर्पित है'। आपका ये विश्वास, आपके ये आशीर्वाद, ये मेरी ऊर्जा है। 2014 में देश की इकोनॉमी 10वें नंबर पर थी, और आज पांचवें नंबर पर पहुंची है। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि NDA के तीसरे टर्म में इस देश की इकोनॉमी दुनिया में तीसरे नंबर पर हो के रहेगी।

हर सपने संकल्प है और हर संकल्प सिद्धी के लिए हम जी-जान से जुटे हुए लोग हैं, समर्पित भाव से जुटे हुए लोग हैं। और जिस उमंग और उत्साह से आपको, एक-एक की बात जो मैंने सुनी मेरे लिए भी बड़ी प्रेरक थी, उत्साहवर्धक थी। आपका विश्वास, विजय का विश्वास, जन सामान्य की सोच को बखूबी व्यक्त करने का आपका तरीका वाकई प्रभावित करने वाला है।

मैं मानता हूं कि 25 साल की यात्रा की आज की ये महत्वपूर्ण बैठक 25 साल बाद देश जब सौ साल की आजादी मनाएगा हमारे सामने भी 25 साल का नक्शा है। देश जब अमृत महोत्सव मना रहा है, तो हमें सेवा करने का मौका मिला है। और आप लिख के रखिए, यही लोग है, यही लोग है जब देश सौ साल की आजादी का पर्व मनाएगा आप ही के परिश्रम से आप ही के पुरुषार्थ से आप ही के नेतृत्व से ये संभव होने वाला है, ये साफ देख रहा हूं। ▪

विजय संकल्प के मंत्र पर चलकर चुनावों में इतिहास बनाएगी पार्टी : विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी एवं केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी जब भी मध्यप्रदेश आते हैं, तो कार्यकर्ताओं की सक्रियता और उनका आत्मविश्वास बढ़ जाता हैं। केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी जिन्हें भारतीय राजनीति का चाणक्य कहा जाता है, का मार्गदर्शन हमें मिला है।

श्री अमित शाह जी ने विजय संकल्प का जो मंत्र दिया है, उसे लेकर पार्टी का हर कार्यकर्ता तैयारी में जुट गया है और इसी मंत्र पर चलकर भारतीय जनता पार्टी 2023 के विधानसभा चुनाव तथा 2024 के लोकसभा चुनाव में इतिहास बनाएगी। पार्टी द्वारा पूर्व में बूथ विजय का संकल्प लिया गया था, जिसमें प्रत्येक बूथ पर फोकस किया गया है। हमारा लक्ष्य है 51 प्रतिशत वोट शेयर हासिल करना और यही विजय संकल्प है, जो श्री अमित शाह जी का मूलमंत्र है। विजय संकल्प अभियान को पूरा करने के लिए पार्टी का प्रत्येक बूथ का कार्यकर्ता जुटेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'अपना बूथ सबसे मजबूत' अभियान को भोपाल से प्रारंभ किया था। उन्होंने इस अभियान के लिए मध्यप्रदेश की धरती को चुना था, यह अपने आप में महत्वपूर्ण है। नेतृत्व का सभी कार्यकर्ताओं पर आशीर्वाद है और मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी इतिहास बनाएगी। भारतीय जनता पार्टी 365 दिन और 24 घंटे काम करने वाला एक लाइव आर्गनाइजेशन है। पार्टी प्रदेश की सभी 230 विधानसभा क्षेत्रों में माइक्रो मैनेजमेंट के साथ चुनावी तैयारी में जुटी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सबका साथ, सबका विकास और सबके विश्वास के मूलमंत्र के साथ हम चुनाव मैदान में उतरेंगे, जिसमें पार्टी नेतृत्व के प्रति जनता का विश्वास, गरीब कल्याण की योजनाएं और देश-प्रदेश का चहुंमुखी विकास मुख्य मुद्दे रहेंगे। ▪

लाड़ली बहना योजना भारतीय राजनीति में सामाजिक क्रांति -मुख्यमंत्री

लाड़ली बहना योजना भारतीय राजनीति में एक सामाजिक क्रांति है, जो बहनों की जिंदगी बदलने के साथ ही विकास के हर क्षेत्र में मध्यप्रदेश को आगे ले जायेगी। मैने मुख्यमंत्री की तरह नहीं बल्कि परिवार के सदस्य के रूप में सरकार चलाई है। 'मैं भांजे-भांजियों का मामा होने के नाते स्वाभाविक रूप से बहनों का भाई हूँ और हमेशा बहनों को मजबूत बनाने के लिए कार्य करता रहता हूँ। बहनों को जरूरत पर निकट संबंधी सौ-दो सौ रुपए देने के लिए बहाने बनाते हैं, बहनों को बच्चों के सामने मजबूर होते देखा है। लाड़ली बहना योजना बनाने के पीछे मेरा मकसद बहनों को घर, परिवार और समाज में मजबूत करना है'।

ये 1000 रुपए नहीं बहनों के स्वाभिमान और सम्मान का प्रतीक हैं। फिर से पोर्टल खोल दिया गया है, जिससे 21 साल उम्र और ट्रेक्टर वाले परिवारों की बहनें भी योजना में शामिल हो सकें । आज सवा करोड़ बहनें हैं, उनके जीवन में इससे ज्यादा संतुष्टि कुछ भी नहीं हो सकती। अभी बहनों को प्रतिमाह 1000 रुपए देने में साल भर में 15 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। लेकिन बहनें चिंता न करें, खजाने में पैसा आते ही बहनों की राशि धीरे-धीरे बढ़ाकर 3000 रुपए करके ही दम लेंगे। बहनों को गरीब नहीं रहने देंगे।

ये 1000 रुपए नहीं बहनों के स्वाभिमान और सम्मान का प्रतीक हैं। फिर से पोर्टल खोल दिया गया है, जिससे 21 साल उम्र और ट्रेक्टर वाले परिवारों की बहनें भी योजना में शामिल हो सकें । आज सवा करोड़ बहनें हैं, उनके जीवन में इससे ज्यादा संतुष्टि कुछ भी नहीं हो सकती।

अभी बहनों को प्रतिमाह 1000 रुपए देने में साल भर में 15 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। लेकिन बहनें चिंता न करें, खजाने में पैसा आते ही बहनों की राशि धीरे-धीरे बढ़ाकर 3000 रुपए करके ही दम लेंगे। बहनों को गरीब नहीं रहने देंगे।

बहनों को स्व-सहायता समूह से जोड़कर विभिन्न कामों में लगाकर उनकी मासिक आमदनी कम से कम 10 हजार रुपए महीना करेंगे। जितनी भी योजनाएँ हैं वे गरीब, महिला, वंचित और किसानों के आंसू पोंछकर उन्हें खुशहाल बनाने के लिए हैं।

आज जो विकास दिख रहा है वह पिछली सरकारों के 50 साल में भी नहीं हुआ। सड़कें हों, स्वास्थ्य हो, खेतों और घर के लिए पानी हो, शिक्षा हो, हर क्षेत्र में सरकार ने उपलब्धि अर्जित की है। आज किसान पहले से अधिक सशक्त हुआ है। जीरो प्रतिशत ब्याज पर किसानों को लोन दिया है, तो पिछली सरकार की गलत नीतियों से डिफाल्टर हुए किसानों का 2200 करोड़ का ब्याज भी हमारी सरकार ने भरा है। प्रधानमंत्री किसानों को हर साल 6 हजार रुपए देते हैं और अब राज्य सरकार भी 6 हजार रुपए देगी, जिससे किसान के खाते में अब हर साल 12 हजार रुपए आयेंगे। ▪

Think Big, Dream Big, Act Big - मोदी

भारत Mother of Democracy है।

- **जल्द ही दिल्ली में दुनिया का सबसे बड़ा और जब मैं कहता हूं, दुनिया का सबसे बड़ा मतलब दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम- युगे-युगीन भारत भी बनने जा रहा है।**
- **Third Term- Top Three Economy में पहुंच कर रहेगा भारत और ये मोदी की गारंटी है।**
- **आज भारत जिस स्पीड और स्केल पर काम कर रहा है, ये वाकई अभूतपूर्व है।**

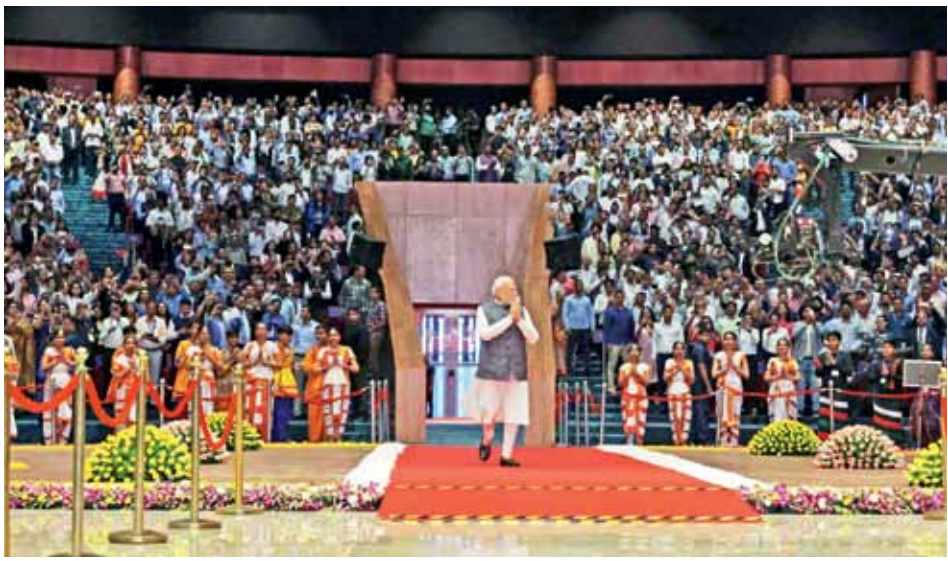

नया प्रात: है, नई बात है, नई किरण है,
ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगें, नई आस है,
साँस नई। उठो धरा के अमर सपूतों,
पुन: नया निर्माण करो।

जन-जन के जीवन में फिर से नई स्फूर्ति, नव प्राण भरो। 'भारत मंडपम' के इस नाम के पीछे भगवान बशवेश्वर के 'अनुभव मंडपम' की प्रेरणा है। अनुभव मंडपम यानि वाद और संवाद की लोकतांत्रिक पद्धति, अनुभव मंडपम यानि अभिव्यक्ति, अभिमत।

आज दुनिया ये स्वीकार कर रही है कि भारत Mother of Democracy है। तमिलनाडु के उत्तरामेरूर में मिले शिलालेखों से लेकर वैशाली तक, भारत की वाइब्रेंट डेमोक्रेसी सदियों से हमारा गौरव रही है। जब हम आजादी के 75 वर्ष होने पर अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तो ये 'भारत मंडपम', हम भारतीयों द्वारा अपने लोकतंत्र को दिया एक खूबसूरत उपहार है। यहीं पर G-20 से जुड़े आयोजन होंगे, दुनिया के बड़े-बड़े देशों के राष्ट्राध्यक्ष यहां उपस्थित होंगे। भारत के बढ़ते हुए कदम और भारत का बढ़ता हुआ कद, इस भव्य 'भारत मंडपम' से पूरी दुनिया देखेगी।

आज पूरी दुनिया Inter-Connected है, Inter-Dependent है और वैश्विक स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों और समिट्स की श्रृंखला लगातार चलती रहती है। ऐसे कार्यक्रम कभी एक देश में तो कभी दूसरे देश में होते हैं। ऐसे में भारत में, देश की राजधानी दिल्ली में, अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक कन्वेंशन सेंटर होना बहुत ही जरूरी था। यहां जो व्यवस्था थीं, जो हॉल्स थे, वो कई दशक पहले यहां बने थे। पिछली शताब्दी की वो पुरानी व्यवस्था, 21वीं सदी के भारत के साथ कदमताल नहीं कर पा रही थीं। 21वीं सदी के भारत में हमें 21वीं सदी की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला निर्माण करना ही होगा।

इसलिए ये भव्य निर्माण, ये 'भारत मंडपम' आज देशवासियों के सामने है, आपके सामने है। 'भारत मंडपम' देश-विदेश के बड़े-बड़े exhibitors को मदद करेगा। 'भारत मंडपम' देश में कॉन्फ्रेंस टूरिज्म का बहुत बड़ा जरिया बनेगा। 'भारत मंडपम' हमारे स्टार्टअप्स की शक्ति को शो-केस का माध्यम बनेगा। 'भारत मंडपम' हमारे सिनेमा-जगत, हमारे आर्टिस्ट्स की परफॉर्मेंस का साक्षी बनेगा। 'भारत मंडपम' हमारे हस्तशिल्पियों, कारीगरों-बुनकरों के परिश्रम को प्लेटफॉर्म देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनने वाला है और 'भारत मंडपम' आत्मनिर्भर भारत और Vocal For Local अभियान का प्रतिबिंब बनेगा। यानि इकोनॉमी से इकोलॉजी तक, ट्रेड से टेक्नोलॉजी तक, ऐसे हर आयोजन के लिए ये विशाल परिश्रम और ये विशाल परिसर, ये 'भारत मंडपम' बहुत बड़ा मंच बनेगा।

भारत मंडपम जैसी इस व्यवस्था का निर्माण कई दशक पहले हो जाना चाहिए था। लेकिन शायद मुझे लगता है, बहुत सारे काम मेरे हाथ में ही लिखे हुए हैं। और हम देखते हैं, दुनिया में किसी देश में अगर एक ओलंपिक समिट होता है, पूरी दुनिया में उस देश का प्रोफाइल एकदम से बदल जाता है। आज ये विश्व में इन चीजों का महात्मय बहुत बड़ा हो गया है और देश का प्रोफाइल भी बहुत मायने रखता है। और ऐसी ही व्यवस्थाएं हैं जो कुछ न कुछ उसमें value addition करती हैं। लेकिन हमारे देश में कुछ अलग सोच के लोग भी हैं। नकारात्मक सोच वालों की कोई कमी तो है

नहीं हमारे यहां। इस निर्माण को रोकने के लिए भी नकारात्मक सोच वालों ने क्या-क्या कोशिशें नहीं की। खूब तूफान मचाया गया, अदालतों के चक्कर काटे गए। लेकिन जहां सत्य होता है, वहां ईश्वर भी होता है। लेकिन अब ये सुंदर परिसर आपकी आंखों के सामने मौजूद है।

दरअसल, कुछ लोगों की फितरत होती है, हर अच्छे काम को रोकने की, टोकने की। अब आपको याद होगा जब कर्तव्य पथ बन रहा था तो न जाने क्या-क्या कथायें चल रहीं थीं, फ्रंट पेज पर, ब्रेकिंग न्यूज में क्या कुछ चल रहा था। अदालत में भी न जाने कितने मामले उठाये गये थे। लेकिन जब अब कर्तव्य पथ बन गया, वे लोग भी दबी जुबान में कह रहे हैं कि अच्छा हुआ है कुछ, देश की शोभा बढ़ाने वाला है। और मुझे विश्वास है कुछ समय बाद 'भारत मंडपम' के लिए भी वो टोली खुल करके बोले या न बोले, लेकिन भीतर से तो स्वीकार करेगी और हो सकता है किसी के समारोह में यहां आकर लेक्चर देने भी आ जाये। कोई भी देश हो, कोई भी समाज हो, वो टुकड़ों में सोचकर, टुकड़ों में काम करके आगे नहीं बढ़ सकता। आज ये कन्वेंशन सेंटर, ये 'भारत मंडपम' इस बात का भी गवाह है कि हमारी सरकार कैसे होलिस्टिक तरीके से, बहुत दूर की सोचकर काम कर रही है। इन जैसे सेंटर्स में आना आसान हो, देश-विदेश की बड़ी कंपनियां यहां आ सकें, इसलिए आज भारत 160 से ज्यादा देशों को e-Conference visa की सुविधा दे रहा है। यानी सिर्फ ये बनाया ऐसा नहीं, पूरी सप्लाई चेन, सिस्टम चेन, उसकी व्यवस्था की है। 2014 में दिल्ली एयरपोर्ट की कैपेसिटी भी सालाना करीब 5 करोड़ यात्रियों को हैंडल करने की थी। आज ये भी बढ़कर सालाना साढ़े सात करोड़ पैसेंजर हो चुकी है। टर्मिनल टू और चौथा रनवे भी शुरू हो चुका है। ग्रेटर नोएडा के जेवर में इंटरनेशनल एयरपोर्ट शुरू होने के बाद इसे और शक्ति मिलेगी। बीते वर्षों में दिल्ली-NCR में होटल इंडस्ट्री का भी काफी विस्तार हुआ है। यानी कॉन्फ्रेंस टूरिज्म के लिए एक पूरा इकोसिस्टम बनाने का हमने बिल्कुल प्लान-वे में प्रयास किया है।

इसके अलावा भी यहां राजधानी दिल्ली में भी बीते वर्षों में जो निर्माण हुए हैं, वो देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। कौन भारतीय होगा, जिसका सिर देश की नई संसद देख करके ऊंचा नहीं होगा। आज दिल्ली में नेशनल वॉर मेमोरियल है, पुलिस मेमोरियल है, बाबा साहेब अंबेडकर मेमोरियल है। आज कर्तव्य पथ के आसपास सरकार के आधुनिक ऑफिसेज, दफ्तर, उस पर बहुत तेजी से काम चल रहा है। हमें वर्क कल्चर भी बदलना है, वर्क एनवायरमेंट भी बदलना है। आप सबने देखा होगा, प्राइम मिनिस्टर्स म्यूजियम से आज की नई पीढ़ी को देश के सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों के बारे में जानने का मौका मिल रहा है। जल्द ही दिल्ली में, और ये भी आप लोगों के लिए खुशखबरी होगी, दुनिया के लिए भी खुशखबरी होगी, जल्द ही दिल्ली में दुनिया का सबसे बड़ा और जब मैं कहता हूं, दुनिया का सबसे बड़ा मतलब दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम- युगे-युगीन भारत भी बनने जा रहा है।

आज पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है। भारत आज वो हासिल कर रहा है, जो पहले अकल्पनीय था, कोई सोच भी नहीं सकता था। विकसित होने के लिए हमें बड़ा सोचना ही होगा, बड़े लक्ष्य हासिल करने ही होंगे। इसलिए "Think Big, Dream Big, Act Big" के सिद्धांत को अपनाते हुए भारत आज तेजी से आगे बढ़ रहा है। और कहा भी गया है- इतने ऊँचे उठो कि, जितना उठा गगन है। हम पहले से बड़ा निर्माण कर रहे हैं, हम पहले से बेहतर निर्माण कर रहे हैं, हम पहले से तेज गति से निर्माण कर रहे हैं।

पूर्व से लेकर पश्चिम तक, उत्तर से लेकर दक्षिण तक, भारत का इंफ्रास्ट्रक्चर बदल रहा है। दुनिया का सबसे बड़ा Solar Wind Park आज भारत में बन रहा है। दुनिया का सबसे ऊंचा रेल ब्रिज आज भारत में है। 10 हजार फीट से अधिक की ऊंचाई पर दुनिया की सबसे लंबी टनल आज भारत में है। दुनिया की सबसे ऊंची मोटरेबल रोड आज भारत में है। दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम आज भारत में है। दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा आज भारत में है। एशिया का दूसरा सबसे बड़ा रेल-रोड ब्रिज भी भारत में है। आज भारत दुनिया के उन देशों में है जहां ग्रीन हाइड्रोजन पर इतना बड़ा काम हो रहा है।

आज हमारी सरकार के इस टर्म और पिछले टर्म के कार्यों का परिणाम पूरा देश देख रहा है। आज देश का विश्वास पक्का हो गया है कि अब भारत की विकास यात्रा रुकने वाली नहीं है। आप जानते हैं कि हमारे पहले टर्म की शुरुआत में भारत, वर्ल्ड इकोनॉमी में दसवें नंबर पर था। जब मुझे आज लोगों ने काम दिया तब हम दस नंबरी थे। दूसरे टर्म में आज भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी इकोनॉमी है। और यह ट्रैक रिकॉर्ड के आधार पर, बातों-बातों में नहीं, ट्रैक रिकॉर्ड के आधार पर मैं कह रहा हूं।

मैं देश को ये भी विश्वास दिलाऊंगा कि तीसरे टर्म में, दुनिया की पहली तीन इकोनॉमीज में एक नाम भारत का होगा। यानी, तीसरे टर्म में पहली तीन इकोनॉमी में गर्व के साथ हिन्दुस्तान खड़ा होगा। Third Term- Top Three Economy में पहुंच कर रहेगा भारत और ये मोदी की गारंटी है। मैं देशवासियों को ये भी विश्वास दिलाऊंगा कि 2024 के बाद हमारे तीसरे टर्म में, देश की विकास यात्रा और तेजी से बढ़ेगी। और मेरे तीसरे कार्यकाल में आप अपने सपने अपनी आंखों के सामने पूरे होते देखेंगे।

आज भारत में नव निर्माण की क्रांति चल रही है। बीते 9 साल में भारत में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के लिए करीब-करीब 34 लाख करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। इस साल के बजट में भी कैपिटल एक्सपेंडिचर 10 लाख करोड़ रुपए रखा गया है। नए एयरपोर्ट, नए एक्सप्रेस वे, नए रेल रूट, नए ब्रिज, नए अस्पताल, आज भारत जिस स्पीड और स्केल पर काम कर रहा है, ये वाकई अभूतपूर्व है।

70 साल में, ये मैं और किसी की आलोचना करने के लिए नहीं कह रहा हूं, लेकिन हिसाब-किताब के लिए कुछ reference जरूरी होता है। और इसलिए मैं उस reference के आधार पर बात कर रहा हूं। 70 साल में भारत में सिर्फ 20 हजार किलोमीटर के आसपास रेल लाइनों का Electrification हुआ था। जबकि पिछले 9 साल में भारत में करीब-करीब 40 हजार किलोमीटर रेल लाइनों का Electrification हुआ है। 2014 से पहले हमारे देश में हर महीने सिर्फ 600 मीटर, किलोमीटर मत समझना, सिर्फ 600 मीटर नई मेट्रो लाइन बिछाई जा रही थी। आज भारत में हर महीने 6 किलोमीटर नई मेट्रो लाइन का काम पूरा हो रहा है।

2014 से पहले देश में 4 लाख किलोमीटर से भी कम ग्रामीण सड़कें थीं। आज देश में सवा सात लाख किलोमीटर से भी ज्यादा ग्रामीण सड़कें हैं। 2014 से पहले देश में करीब-करीब 70 के आसपास ही हमारे एयरपोर्ट थे। आज देश में एयरपोर्ट्स की संख्या भी बढ़कर 150 के आसपास पहुंच रही है। 2014 से पहले देश में सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम भी सिर्फ 60 शहरों में था। अब देश में सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम 600 से भी ज्यादा शहरों में पहुंच गया है। बदलता हुआ भारत आज पुरानी चुनौतियों को समाप्त करते हुए आगे बढ़ रहा है। हम समस्याओं के स्थाई समाधान पर, Permanent Solution पर जोर दे रहे हैं। और इसका एक उदाहरण पीएम गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान भी है। यहां उद्योग जगत के साथी बैठे हैं, मैं चाहूंगा कि आप जाकर उस पोर्टल को देखिए। देश में रेल-रोड जैसे फिजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए, स्कूल बनाने हों, हॉस्पिटल बनाने हों, ऐसे सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर के

लिए, पीएम गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान एक बहुत बड़ा गेमचेंजर साबित होने जा रहा है। इसमें अलग-अलग लेयर के 1600 से ज्यादा अलग-अलग लेयर्स के डेटा उसके अंदर डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर लाया गया है। कोशिश यही है कि देश का समय और देश का पैसा पहले की तरह बर्बाद ना हो। आज भारत के सामने बहुत बड़ा अवसर है। आज से सौ साल पहले, मैं पिछली शताब्दी की बात कर रहा हूं, आज से 100 साल पहले जब भारत आजादी की जंग लड़ रहा था, तो वो पिछली शताब्दी का तीसरा दशक, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। 1923-1930 का वो कालखंड याद कीजिए, पिछली शताब्दी का तीसरा दशक भारत की आजादी के लिए बहुत अहम् था। इसी प्रकार 21वीं सदी का ये तीसरा दशक भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

पिछली शताब्दी के तीसरे दशक में ललक थी, लक्ष्य था स्वराज्य का, आज लक्ष्य है समृद्ध भारत का, विकसित भारत बनाने का। उस तीसरे दशक में देश आजादी के लिए निकल पड़ा था, देश के कोने कोने से आजादी की गूंज सुनाई देती थी। स्वराज आंदोलन की सभी धाराएं, सभी विचार चाहे वो क्रांति का मार्ग हो, या असहयोग का मार्ग हो, सारे मार्ग पूर्ण रूप से जागरूक थे, ऊर्जा से भरे हुए थे, इसी का परिणाम था कि इसके 25 साल के भीतर-भीतर देश आजाद हो गया, आजादी का हमारा सपना साकार हुआ। और इस शताब्दी के इस तीसरे दशक में हमारे सामने अगले 25 साल का लक्ष्य है। हम समर्थ भारत का सपना लेकर, विकसित भारत का सपना लेकर निकल पड़े हैं। हमें भारत को वो ऊंचाई देनी है, उस सफलता पर पहुंचाना है, जिसका सपना हर स्वतंत्रता सेनानी ने देखा था। इस संकल्प की सिद्धि के लिए सभी देशवासियों ने, 140 करोड़ हिन्दुस्तानियों ने दिन रात एक कर देना है। मैं अनुभव से कहता हूं, मैंने एक के बाद एक सफलताओं को अपनी आंखों के सामने देखा है। मैंने देश की शक्ति को भली-भांति समझा है, देश के सामर्थ्य को जाना है और उसके आधार पर मैं कहता हूं, बड़े विश्वास से कहता हूं, भारत मंडपम में खड़े हो करके इन सुयोग्य जनों के सामने कहता हूं भारत विकसित हो सकता है, अवश्य हो सकता है। भारत गरीबी दूर कर सकता है, जरूर कर सकता है। और मेरे इस विश्वास के पीछे जो आधार है, वो भी मैं आपको बताना चाहता हूं।

नीति आयोग की रिपोर्ट में सामने आया है कि भारत में सिर्फ पांच साल में साढ़े तेरह करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। और भी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां भी ये कह रही हैं कि भारत में अति गरीबी extreme poverty जो है, वो खत्म होने के कगार पर है। यानी बीते 9 वर्षों में देश ने जो नीतियां बनाईं हैं, जो निर्णय लिए हैं, वो देश को सही दिशा में ले जा रहे हैं।

देश का विकास तभी हो सकता है, जब नियत साफ हो, नीति सही हो, देश में सार्थक परिवर्तन लाने के लिए उपयुक्त नीति हो। भारत की प्रेसिडेंसी के दौरान, पूरे देश में हो रहे जी-20 के आयोजन भी इसका एक प्रेरक उदाहरण हैं। हमने जी-20 को सिर्फ एक शहर, एक स्थान तक सीमित नहीं रखा। हम जी-20 की बैठकों को देश के 50 से ज्यादा शहरों में ले गए। हमने इसके माध्यम से भारत की विविधता को शोकेस किया है। हमने दुनिया को दिखाया कि भारत की सांस्कृतिक शक्ति क्या है, भारत की विरासत क्या है। विविधताओं के बीच भी भारत किस प्रकार से प्रगति कर रहा है। भारत किस प्रकार से विविधता को सेलिब्रेट करता है। आज दुनिया भर से लोग इन आयोजनों में हिस्सा लेने के लिए भारत आ रहे हैं। G-20 की बैठकों के लिए अनेक शहरों में नई सुविधाओं का निर्माण हुआ, पुरानी सुविधाओं का आधुनिकीकरण हुआ। इससे देश का फायदा हुआ, देश के लोगों का फायदा हुआ। और यही तो सुशासन है, यही तो Good Governance है। नेशन फर्स्ट, सिटीजन फर्स्ट की भावना पर चलते हुए ही हम भारत को विकसित भारत बनाने वाले हैं। ▪

अल्पसंख्यक मोर्चा की भूमिका महत्वपूर्ण - विष्णुदत्त शर्मा

राजनैतिक दलों ने अल्पसंख्यक वर्ग को हमेशा वोट बैंक समझा और उन्हें भारतीय जनता पार्टी के बारे में भ्रमित करने का काम किया। भाजपा को अल्पसंख्यक वर्ग की विरोधी पार्टी बताया ताकि यह वर्ग भाजपा से जुड़ न सके। लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने हमेशा सबका साथ और सबका विकास के मंत्र को आगे बढ़ाया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस मंत्र को आगे बढ़ाते हुए सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास की बात कही। प्रधानमंत्री जी के इस मंत्र को साकार करने में भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा की महत्वपूर्ण भूमिका है। अल्पसंख्यक मोर्चा प्रदेश के हर बूथ तक सरकार की योजनाएं और पार्टी की विचारधारा को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

भाजपा सर्वव्यापी और सर्वस्पर्शी बनें, इसके लिए पार्टी ने अलग अलग मोर्चो का गठन किया है। अल्पसंख्यक वर्ग भाजपा से जुड़ें, इसकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी अल्पसंख्यक मोर्चा की है। मध्यप्रदेश में अल्पसंख्यक मोर्चा ने बखूबी अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए अल्पसंख्यक वर्ग में पार्टी की रीति नीति पहुंचाने का काम किया है। सभी समाज के उत्थान के लिए भारतीय जनता पार्टी कार्य कर रही है। भारतीय जनता पार्टी ने कभी भी वोट बैंक की राजनीति नहीं की। भाजपा समाज को जोड़ने और उनके कल्याण के लिए योजनाओं का क्रियान्वयन कर उन्हें जमीन पर साकार करती है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार आज केन्द्र और राज्य में बिना भेदभाव से काम कर रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत हर वर्ग के गरीब को पक्का मकान मिला है। वहीं आयुष्मान योजना का लाभ भी हर समाज के व्यक्ति तक पहुंचा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश का मान सम्मान पूरे विश्व में बढ़ा है। प्रधानमंत्री जी ने कोरोना काल में बांग्लादेश, इजराइल जैसे मुस्लिम देशों में वसुधैव कुंटुंबकम की भावना के साथ उन्हें वैक्सीन उपलब्ध करायी। विपरीत परिस्थितियों में भी उनका साथ दिया। आज पूरे विश्व में प्रधानमंत्री जी को वैश्विक नेता के रूप में जाना जाता है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार मोदी जी के नेतृत्व में विकास और गरीब कल्याण के मंत्र पर कार्य कर रही है। ▪

13.5 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर हुए- विष्णुदत्त शर्मा

2023 के अनुसार मध्यप्रदेश में 1.36 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। मध्यप्रदेश आज अगर गरीब कल्याण के क्षेत्र में एक अग्रणी राज्य बनकर उभरा है, तो उसकी वजह यह है कि मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की सरकार ने स्थानीय स्तर पर तो इसके लिए प्रयास किए ही, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा शुरू की गई गरीब कल्याण योजनाओं को भी उत्साहपूर्वक लागू किया।

कांग्रेस की सरकारें गरीबी हटाओ की बातें करती रहीं, लेकिन देश से गरीबी कम नहीं हुई। 2014 में जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार बनी, तो उन्होंने कहा था कि मेरी सरकार गरीबों को समर्पित सरकार है।

नीति आयोग के आंकड़े यह बताते हैं कि प्रधानमंत्री जी का यह संकल्प अब सिद्धि की ओर बढ़ रहा है। सरकार द्वारा शुरू की गई गरीब कल्याण की योजनाओं के कारण देश में 13.5 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर हुए हैं। वहीं, महंगाई की दर कम होकर 8.1 प्रतिशत पर आ गई।

कांग्रेस की सरकारों के दौरान देश में गरीबी बढ़ने का मुख्य कारण भ्रष्टाचार था। कांग्रेस के ही एक प्रधानमंत्री ने कहा था कि हम दिल्ली से एक रुपया भेजते हैं, तो गांव तक सिर्फ 15 पैसे पहुंचते हैं। बाकी राशि भ्रष्टाचार और दलालों की भेंट चढ़ जाती है। इसके बावजूद कांग्रेस के बेशर्म नेता यह कहते थे कि देश में गरीबी बढ़ने की वजह यह है कि गरीब दोनों समय भोजन करने लगे हैं।

कांग्रेस की सरकारों के नारे कितने खोखले थे, इसका अंदाज इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि इंदिरा गांधी जी के समय 1974 में महंगाई की दर 28 प्रतिशत थी। 2013 में यह 11 प्रतिशत पर आ गई। जबकि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के फलस्वरूप महंगाई की दर 8.1 प्रतिशत पर आ गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सबसे पहले देश में जनधन खाते खोले। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकार द्वारा शुरू की गई गरीब कल्याण की योजनाओं की राशि सीधे तौर पर हितग्राहियों के खातों में पहुंचने लगी। न भ्रष्टाचार रहा, न दलालों की कोई भूमिका रही। इसके अलावा मोदी सरकार ने पीएम आवास, आयुष्मान भारत जैसी जो योजनाएं शुरू की, उनसे देश के गरीबों के जीवन में तेजी से बदलाव आया। यही कारण है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकारें गरीब कल्याण के जिस संकल्प को लेकर आगे बढ़ रही हैं, वह संकल्प अब सिद्धि की ओर बढ़ने लगा है।

नीति आयोग द्वारा जारी की गई मल्टी डायमेंशनल पॉवर्टी इंडेक्स:

2023 के अनुसार मध्यप्रदेश में 1.36 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। मध्यप्रदेश आज अगर गरीब कल्याण के क्षेत्र में एक अग्रणी राज्य बनकर उभरा है, तो उसकी वजह यह है कि मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की सरकार ने स्थानीय स्तर पर तो इसके लिए प्रयास किए ही, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा शुरू की गई गरीब कल्याण योजनाओं को भी उत्साहपूर्वक लागू किया। मध्यप्रदेश में भी 4.10 करोड़ लोगों के जनधन खाते खोले गए, जिनसे उन्हें डीबीटी का लाभ मिलने लगा। यहां हाल ही में 10 लाख पीएम आवास की स्वीकृति दी गई है।

आयुष्मान कॉर्ड बनाने में म.प्र. अव्वल रहा है और हाल ही में शहडोल में आयोजित कार्यक्रम में 1 करोड़ आयुष्मान कार्ड बांटे गए थे। गुड गवर्नेंस के क्षेत्र में प्रदेश सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं।

प्रदेश में भू-अभिलेख के डिजिटाइजेशन का काम कितनी प्राथमिकता से किया जा रहा है, इसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि प्रदेश के 15 जिला अधिकारियों को राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू जी द्वारा इसके लिए पुरस्कृत किया जा रहा है। ▪

युवाओं का बेहतर भविष्य बनाना संकल्प है

शिवराज सिंह चौहान

युवाओं का बेहतर भविष्य बनाना संकल्प है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश निर्माण को समर्पित हैं। उनके नेतृत्व में देश का गौरव बढ़ा है।

प्रदेश के युवाओं में क्षमता, ऊर्जा, प्रतिभा और टेलेंट है। उद्योगपति और व्यापारिक संस्थान इन्हें काम सिखाएंगे, तो वे उनके प्रतिष्ठान को मालामाल कर देंगे। मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और युवाओं के हितों को समान रूप से ध्यान में रखते हुए बनाई गई है। इससे युवाओं को काम सीखने का मौका मिलेगा और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को स्किल्ड मैन पावर की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। योजना के सफल क्रियान्वयन से मध्यप्रदेश आगे बढ़ेगा। सीखो-कमाओ योजना का संक्षिप्त रूप एस.के.वाय अर्थात् स्काय मतलब आसमान है। युवा आगे आएँ, योजना से जुड़ें, आसमान में ऊँची उड़ान भरें और अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाये। युवाओं के सपने नहीं मरेंगे। चिड़िया अपने बच्चों को घोसला नहीं पंख देती है, मैं पंख देने आया हूँ और इसीलिए मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना लागू की गई है।

युवाओं का बेहतर भविष्य बनाना संकल्प है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश निर्माण को समर्पित हैं। उनके नेतृत्व में देश का गौरव बढ़ा है। वे सभी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। प्रदेश के युवाओं का बेहतर भविष्य कैसे सुनिश्चित हो, इस दिशा में राज्य सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। छात्र-छात्राओं को बेहतर शिक्षा मिले, इस उद्देश्य से स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कदम उठाए गए हैं। कर्मी कल्चर को समाप्त कर नियमित शिक्षकों की व्यवस्था की जा रही है। छात्रवृत्तियों, निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकें, मेधावी विद्यार्थियों को लेपटॉप, दूसरे गाँव पढ़ने जाने वाली बालिकाओं को साइकिलें उपलब्ध कराकर बेहतर और नियमित शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इस वर्ष शालाओं में कक्षा 12वीं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को ई-स्कूटी प्रदान की जाएगी।

युवाओं को रोजगार के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास जारी हैं। स्वतंत्रता दिवस पर एक साल में एक लाख सरकारी नौकरियाँ देने की बात कही गई थी। अब तक 55 हजार भर्तियाँ हो चुकी हैं और आगामी 15 अगस्त से पहले एक लाख से अधिक शासकीय भर्तियां हो जाएंगी।

रोजगार के लिए मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना, मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम आदि में स्व-रोजगार के लिए ऋण की व्यवस्था की गई है। युवा स्वयं का स्टार्टअप आरंभ कर सकते हैं। प्रदेश में अब तक 2800 स्टार्टअप कार्यरत हैं। प्रदेश की धरती पर निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए हरसंभव प्रयास जारी हैं।

उद्योगपतियों द्वारा प्रदेश में लगभग 15 लाख 42 हजार 550 करोड़ के निवेश की प्रतिबद्धता अभिव्यक्त की गई है। इन उद्योगों से बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर सृजित होंगे। प्रदेश में आने वाले इन उद्योगों को दक्ष मैन पावर उपलब्ध कराने के लिए भोपाल में ग्लोबल स्किल पार्क आरंभ किया जा रहा है, जहाँ युवाओं को कौशल उन्नयन के अवसर मिलेंगे। इसी प्रकार के पार्क ग्वालियर, जबलपुर, रीवा और इंदौर में भी आरंभ होंगे।

मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना में 18 से 29 वर्ष के युवा पात्र होंगे। मध्यप्रदेश के स्थायी निवासी योजना का लाभ ले सकेंगे। कक्षा 12वीं उत्तीर्ण को 8 हजार रूपए, आईटीआई उत्तीर्ण को 8 हजार 500, डिप्लोमा उत्तीर्ण को 9 हजार रूपए, स्नातक या उच्च शिक्षित को 10 हजार रूपए की सम्मान राशि प्रदान की जाएगी। युवाओं को रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध कराने के लिए 700 कोर्सेस चयनित किए गए हैं। इसमें सभी प्रकार के उद्योग, व्यापारिक प्रतिष्ठान, सर्विस सेक्टर आदि को शामिल किया गया है।

प्रदेश के लिए सौभाग्यशाली है सीखो-कमाओ योजना - विष्णुदत्त शर्मा

मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना उद्योगपतियों और युवाओं के लिए लाभप्रद है। इससे युवाओं को उचित प्लेटफार्म मिलेगा। उद्योगों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को उपयुक्त इंटर्न मिल सकेंगे। ▪

घाटे और NPA के लिए मशहूर बैंक आज रिकॉर्ड प्रॉफिट में

आजादी के इस अमृतकाल में सभी देशवासियों ने अगले 25 वर्ष में भारत को विकसित भारत बनाने का संकल्प लिया है। आप सभी के साथ ही भारत के लिए भी ये अगले 25 साल, जैसे आपके जीवन में अगले 25 साल महत्वपूर्ण है, वैसे ही भारत के लिए अगले 25 साल बहुत ही अहम् हैं।

आज दुनिया में भारत के प्रति जो विश्वास बना है, भारत के प्रति जो आकर्षण बना है, आज भारत की महत्ता बनी है, हम सबको मिलकर के इसका पूरा लाभ उठाना है।

- **विभिन्न सरकारी विभागों और संगठनों में नव नियुक्त भर्तियों के लिए 70,000 से अधिक नियुक्ति पत्र वितरित किए गए।**
- **सरकार द्वारा भर्ती किए जाने के लिए आज से बेहतर समय नहीं हो सकता।**
- **आपका एक छोटा सा प्रयास किसी के जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकता है।**
- **आज भारत उन देशों में से है जिनका बैंकिंग सिस्टम सबसे मजबूत माना जाता है।**
- **घाटे व एनपीए के लिए विख्यात बैंकों की चर्चा अब रिकॉर्ड मुनाफे के लिए हो रही है।**
- **बैंकिंग सेक्टर के लोगों ने मुझे या मेरे विजन को कभी भी निराश नहीं किया''।**
- **सामूहिक प्रयासों से भारत से निर्धनता पूरी तरह समाप्त की जा सकती है। और इसमें देश के हर सरकारी कर्मचारी की बहुत बड़ी भूमिका है।**

जिन युवा साथियों को नियुक्ति पत्र मिल रहे हैं, उनके लिए भी यह एक यादगार दिन है, लेकिन साथ-साथ देश के लिए भी ये बहुत ऐतिहासिक दिवस है। 1947 में आज के ही दिन, यानि 22 जुलाई को तिरंगे को संविधान सभा द्वारा वर्तमान स्वरूप में स्वीकार किया गया था। इस महत्वपूर्ण दिन, आप सभी को सरकारी सेवा के लिए ज्वाइनिंग लेटर मिलना, ये अपने आप में बहुत बड़ी प्रेरणा है। सरकारी सेवा में रहते हुए आपको हमेशा तिरंगे की आन-बान-शान बढ़ाने के लिए काम करना है, देश का नाम रोशन करके दिखाना है। आजादी के अमृत महोत्सव में, जब देश विकसित होने के लक्ष्य पर काम कर रहा है, आपका सरकारी नौकरी में आना, ये बहुत बड़ा अवसर है। ये आपके परिश्रम का परिणाम है।

आजादी के इस अमृतकाल में सभी देशवासियों ने अगले 25 वर्ष में भारत को विकसित भारत बनाने का संकल्प लिया है। आप सभी के साथ ही भारत के लिए भी ये अगले 25 साल, जैसे आपके जीवन में अगले 25 साल महत्वपूर्ण है, वैसे ही भारत के लिए अगले 25 साल बहुत ही अहम् हैं। आज दुनिया में भारत के प्रति जो विश्वास बना है, भारत के प्रति जो आकर्षण बना है, आज भारत की महत्ता बनी है, हम सबको मिलकर के इसका पूरा लाभ उठाना है।

भारत सिर्फ 9 वर्षों में दुनिया की 10वें नंबर की अर्थव्यवस्था से 5वें नंबर की अर्थव्यवस्था बन गया है। हर एक्सपर्ट ये कह रहा है कुछ ही वर्षों में भारत, दुनिया की टॉप-थ्री इकॉनॉमी में आ जाएगा, टॉप-थ्री इकॉनॉमी में पहुंचना ये भारत के लिए असामान्य सिद्धी बनने वाला है। यानि हर सेक्टर में रोजगार के अवसर भी बढ़ने वाले हैं और सामान्य नागरिक की आय भी बढ़ने वाली है। हर सरकारी कर्मचारी के लिए भी इससे बड़ा कोई अवसर नहीं हो सकता है, इससे बड़ा कोई महत्वपूर्ण समय नहीं हो सकता है। आपके फैसले, आपके निर्णय, देशहित में, देश के

विकास को गति देने वाले होंगे ही।

ये मौका, ये चुनौती, ये अवसर सब कुछ आपके सामने है। आपको इस अमृतकाल में देशसेवा का बहुत बड़ा, वाकई बड़ा अभूतपूर्व अवसर मिला है। देश के लोगों का जीवन आसान हो, उनके जीवन से मुश्किलें समाप्त हों, ये प्राथमिकता होनी चाहिए। आप जिस भी विभाग में नियुक्त हों, जिस भी शहर या गांव में हों, हमेशा इस बात का ध्यान रखिएगा कि आपके कार्यों से जन सामान्य की कठिनाइयां कम हो, मुसीबतें दूर हो, Ease of Living बढ़े और साथ-साथ 25 साल के अंदर-अंदर देश को विकसित भारत बनाने के सपने के भी अनुकूल हो। कई बार एक छोटा सा प्रयास, किसी के लिए कई महीनों का इंतजार समाप्त कर सकता है, उसका कोई बिगड़ा काम बना सकता है।

जनता जनार्दन ईश्वर का ही रूप होती है। जनता से मिलने वाला आशीर्वाद, गरीब से मिलने वाला आशीर्वाद, भगवान के आशीर्वाद के बराबर ही होता है। इसलिए आप दूसरों की मदद की भावना से, दूसरों की सेवा की भावना से काम करेंगे तो आपका यश भी बढ़ेगा और जीवन की जो सबसे बड़ी पूंजी होती है संतोष, वो संतोष वहीं से मिलने वाला है।

अर्थव्यवस्था के विस्तार में हमारे बैंकिंग सेक्टर की बहुत बड़ी भूमिका होती है। आज भारत उन देशों में से एक है, जहां का बैंकिंग सेक्टर सबसे मजबूत माना जाता है। लेकिन 9 वर्ष पहले ऐसी स्थिति नहीं थी। जब सत्ता का स्वार्थ राष्ट्रहित पर हावी होता है, तब कैसी बर्बादी होती है, कैसा विनाश होता है, देश में कई उदाहरण है, ये हमारे बैंकिंग सेक्टर ने तो पिछली सरकार के दौरान इस बर्बादी को देखा है, झेला है, अनुभव किया है।

आजकल तो डिजिटल युग है, मोबाइल फोन से बैंकिंग सेवाएं लेते है, फोन बैंकिंग करते हैं, लेकिन आज से 9 साल पहले जो सरकार थी, ना उस समय ये फोन बैंकिंग की कल्पना ही अलग थी, रिवाज ही अलग था, तरीके अलग थे, इरादे अलग थे। उस जमाने में उस सरकार में ये फोन बैंकिंग मेरे, आपके जैसे सामान्य नागरिकों के लिए नहीं था, देश के 140 करोड़ देशवासियों के लिए नहीं था। उस समय एक खास परिवार के करीबी कुछ ताकतवर नेता, बैंकों को फोन करके अपने चहेतों को हजारों करोड़ रुपए का लोन दिलवाया करते थे। ये लोन कभी चुकाया नहीं जाता था और कागजी कार्यवाही होती थी। एक लोन को चुकाने के लिए फिर बैंक से फोन करके दूसरा लोन, दूसरा लोन चुकाने के लिए, फिर तीसरा लोन दिलवाना। ये फोन बैंकिंग घोटाला, पहले की सरकार के, पिछली सरकार के सबसे बड़े घोटालों में से एक था। पहले की सरकार के इस घोटाले की वजह से देश की बैंकिंग व्यवस्था की कमर टूट गई थी।

2014 में आप सबने हमें सरकार में आकर के देश की सेवा करने का मौका दिया। 2014 में सरकार में आने के बाद हमने इस स्थिति से बैंकिंग सेक्टर और देश को मुसीबतों से निकाला। एक के बाद एक कदम उठाकर के काम शुरू किया। हमने सरकारी बैंकों के मैनेजमेंट को सशक्त किया, professionalism पर बल दिया। हमने देश में छोटे-छोटे बैंकों को जोड़कर बड़े बैंकों का निर्माण किया। हमने सुनिश्चित किया कि बैंक में सामान्य नागरिक की 5 लाख रुपए तक की राशि कभी ना डूबे। क्योंकि बैंकों के प्रति सामान्य नागरिक का विश्वास पक्का करना बहुत जरूरी हो गया था। क्योंकि कई कॉपरेटिव बैंक डूबने लगी थी। सामान्य मानवी की मेहनत का पैसा डूब रहा था और इसलिए हमने 1 लाख से उसकी सीमा 5 लाख कर दी ताकि 99 प्रतिशत नागरिकों को उनकी मेहनत की कमाई का पैसा वापिस मिल सके। सरकार ने एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया बैंकरप्सी कोड जैसे कानून बनाए ताकि अगर कोई कंपनी किसी न किसी कारण से बंद होती है तो बैंकों को कम से कम नुकसान हो। इसके साथ ही हमने गलत काम करने वालों पर शिकंजा भी कसा, बैंकों को लूटने वालों की संपत्ति जब्त कर ली। आज परिणाम आपके सामने है। जिन सरकारी बैंकों की चर्चा हजारों करोड़ के नुकसान के लिए होती थी, NPA के लिए होती थी, आज उन बैंको की चर्चा रिकॉर्ड प्रॉफिट के लिए हो रही है।

भारत का मजबूत बैंकिंग सिस्टम और बैंक के प्रत्येक कर्मचारी, उनका काम पिछले 9 साल में सरकार के vision के अनुकूल जो उन्होंने काम किया है वो हम सभी के लिए गर्व का विषय हैं। बैंक में काम करने वाले सभी मेरे कर्मचारी भाई-बहनों ने इतनी मेहनत की, इतनी मेहनत की, संकट में से बैंकों को बाहर लाए, देश के अर्थतंत्र के विकास में अग्रसर होकर के भूमिका निभाई और इन बैंक कर्मचारियों ने, बैंक के लोगों ने कभी भी मुझे और मेरे vision को ना नकारा, ना निराश किया।

जब जनधन योजना शुरू हुई तो जो पुरानी सोच वाले लोग थे वो मुझे सवाल पूछते थे, गरीब के पास तो पैसा नहीं, वह बैंक खाता खोलकर क्या करेंगे? बैंको पर burden बढ़ जाएगा, बैंक का कर्मचारी कैसे काम करेगा। भांति-भांति की निराशा फैलाई गई थी। लेकिन बैंक के मेरे साथियों ने गरीब का जनधन खाता खुले, इसके लिए दिन-रात एक कर दिया, झुग्गी-झोपड़ी में जाते थे, बैंक के कर्मचारी, लोगों के बैंक के खाते खुलवाते थे। अगर आज देश में करीब 50 करोड़ जनधन बैंक खाते खुले हैं, तो इसके पीछे बैंक में काम करने वाले हमारे कर्मियों का परिश्रम है, उनका सेवाभाव है। ये बैंक कर्मियों की ही मेहनत है जिसकी वजह से सरकार, कोरोना काल में करोड़ों महिलाओं के बैंक खातों में सीधे पैसे ट्रांसफर कर पाई।

कुछ लोग पहले ये भी गलत आरोप लगाते है, और लगाते रहे कि हमारे बैंकिंग सैक्टर में असंगठित क्षेत्र के लोगों को मदद करने के लिए कोई व्यवस्था ही नहीं है। पहले के सरकारों में क्या हुआ वो तो आप भली-भांति जानते हैं। लेकिन 2014 के बाद स्थिति ऐसी नहीं है। जब सरकार ने मुद्रा योजना के माध्यम से नौजवानों को बिना गारंटी लोन देने की ठानी, तो बैंक के लोगों ने इस योजना को आगे बढ़ाया। जब सरकार ने महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप के लिए लोन अमाउंट को डबल कर दिया, तो ये बैंक के कर्मचारी ही थे, जिन्होंने ज्यादा से ज्यादा सेल्फ हेल्प ग्रुप को आर्थिक मदद पहुंचाई। जब सरकार ने कोविड काल में MSME सेक्टर को मदद करने का फैसला लिया तो ये बैंक कर्मचारी ही थे जिन्होंने ज्यादा से ज्यादा ऋण देकर MSME सेक्टर को बचाने में मदद की और डेढ़ करोड़ से ज्यादा उद्यमियों का जिनके रोजगार जाने की संभावना थी, उन छोटे-छोटे उद्योगों को बचाकर के डेढ़ करोड़ से ज्यादा लोगों का रोजगार भी बचाया। जब सरकार ने किसानों के बैंक खातों में सीधे पैसे भेजने के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना शुरू की, तो ये बैंककर्मी ही हैं, जिन्होंने इस योजना को technology की मदद से सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

जब सरकार ने रेहड़ी-पटरी और ठेले वालों के लिए जो फुटपाथ पर बैठकर के अपना माल बेचते है, छोटी सी लॉरी लेकर के माल बेचते हैं, उनके लिए एक स्वनिधि योजना शुरू की, तो ये हमारे बैंककर्मी ही

हैं, जो अपने गरीब भाई-बहनों के लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं और कुछ बैंक ब्रांच ने तो ऐसे लोगों को ढूंढ-ढूंढकर के, बुला-बुलाकर के, उनका हाथ पकड़ कर के इन रेहड़ी-पटरी वालों को लोन देने के लिए काम किया है। हमारे बैंक कर्मियों की मेहनत की वजह से ही 50 लाख से ज्यादा रेहड़ी-पटरी-ठेले वालों को, उनको बैंक से मदद मिल पाई है। मैं हर बैंक कर्मचारी की सराहना करता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं और आप लोग भी अब जब बैंकिग सेक्टर में जुड़ रहे हैं तो एक नई ऊर्जा जुड़ेगी, नया विश्वास जुड़ेगा, समाज के लिए कुछ करने की एक नई भावना पैदा होगी। पुराने लोग जो परिश्रम कर रहे हैं, उसमें आपका परिश्रम जुड़ जाएगा। पक्का विश्वास है कि हम बैंकिग सेक्टर के माध्यम से गरीब से गरीब तबके को मजबूत बनाना चाहते हैं। उसमें आप लोग ये नियुक्ति पत्र के साथ ही संकल्प पत्र लेकर के जाएंगे।

जब सही नीयत से फैसले लिए जाते हैं, सही नीति बनाई जाती है, तो उसके परिणाम भी अद्‌भुत होते है, अभूतपूर्व होते हैं। इसका एक प्रमाण कुछ दिन पहले ही देश ने देखा है। नीति आयोग की रिपोर्ट में आया है कि सिर्फ 5 साल के भीतर ही भारत में साढ़े 13 करोड़ भारतीय, गरीबी रेखा से ऊपर आ गए हैं। भारत की इस सफलता में, सरकारी कर्मचारियों की भी मेहनत रही है। गरीबों को पक्का घर देने की योजना हो, गरीबों के लिए शौचालय बनाने की योजना हो, गरीबों के घर में बिजली कनेक्शन देने की योजना हो, ऐसी अनेकों योजनाओं को हमारे सरकारी कर्मचारी ही गांव-गांव, घर-घर जनसामान्य तक लेकर गए हैं। जब ये योजनाएं गरीब तक पहुंचीं तो गरीबों का मनोबल भी बहुत बढ़ा, विश्वास पैदा हुआ। ये सफलता इस बात का प्रतीक है कि हम मिलकर भारत से गरीबी दूर करने के प्रयास बढ़ाएं तो भारत से गरीबी पूरी तरह से दूर हो सकती है। और इसमें निश्चित तौर पर देश के हर सरकारी कर्मचारी की बहुत बड़ी भूमिका है। गरीब कल्याण की जो भी योजनाएं हैं, आपको खुद भी उनके प्रति जागरूक रहना है और जनता को भी उनसे जोड़ना है।

भारत में कम होती गरीबी का एक और पक्ष है। कम होती गरीबी के बीच देश में नियो-मिडिल क्लास का लगातार विस्तार हो रहा है। इससे रोजगार के नए अवसर बन रहे हैं। भारत में बढ़ते नियो-मिडिल क्लास की अपनी डिमांड्स हैं, अपनी आकांक्षाएं हैं। इस डिमांड की पूर्ति के लिए आज देश में बड़े पैमाने पर मैन्यूफैक्चरिंग हो रही है। जब हमारी फैक्ट्रियां, हमारे उद्योग रिकॉर्ड उत्पादन करते हैं तो उसका लाभ भी सबसे अधिक हमारे युवाओं को होता है।

आए दिन किसी नए रिकॉर्ड की चर्चा होती है, नए achievement की चर्चा होती है। भारत से रिकॉर्ड मोबाइल फोन एक्सपोर्ट्स हो रहे हैं। भारत में इस साल के पहले 6 महीने में जितनी कारों की बिक्री हुई है, वो भी उत्साह बढ़ाने वाली है। इलेक्ट्रिक व्हीकल्स की भी भारत में रिकॉर्ड बिक्री हो रही है। ये सब देश में रोजगार बढ़ा रहे हैं, रोजगार के अवसर बढ़ा रहे हैं।

भारत के टैलेंट पर आज पूरी दुनिया की नजर है। दुनिया में अनेक विकसित अर्थव्यवस्थाओं में लोगों की उम्र तेजी से बढ़ रही है, senior citizen से दुनिया के कई देश विपुल संख्या से भरे हुए हैं युवा पीढ़ी उनके यहां कम होती जा रही है, काम करने वाली आबादी घट रही है। इसलिए ये समय भारत के युवाओं के लिए बहुत मेहनत करने का है, अपनी स्किल, अपनी क्षमताओं को बढ़ाने का है।

भारत के आईटी टैलेंट की, डॉक्टरों की, नर्सों की, और हमारे gulf countries में तो construction की दुनिया में काम करने वाले हमारे साथियों की कितनी डिमांड रही है। भारतीय टैलेंट की इज्जत, हर देश में, हर सेक्टर में लगातार बढ़ रही है। इसलिए पिछले 9 वर्षों में सरकार का बहुत बड़ा फोकस स्किल डेवलपमेंट पर रहा है। पीएम कौशल विकास योजना के तहत लगभग डेढ़ करोड़ युवाओं को ट्रेनिंग दी जा चुकी है।

सरकार, 30 Skill India International Centres भी स्थापित कर रही है ताकि हमारे युवा global opportunities के लिए तैयार हो सकें। आज देश भर में नए मेडिकल कॉलेज, नई ITI's, नई IIT, टेक्निकल इंस्टीट्यूट्स बनाने का भी अभियान जोरों पर चल रहा है। 2014 तक हमारे देश में करीब 380 मेडिकल कॉलेज ही थे। पिछले 9 वर्षों में ये संख्या 700 से अधिक हो चुकी है। इसी प्रकार नर्सिंग कॉलेजों में भी बहुत बड़ी बढ़ोत्तरी हुई है। ग्लोबल डिमांड को पूरा करने वाली स्किल्स, भारत के युवाओं के लिए लाखों नए अवसर बनाने जा रही है।

आप सभी एक बहुत ही पॉजिटिव माहौल में सरकारी सेवा में आ रहे हैं। अब आप पर भी देश की इस पॉजिटिव सोच को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी है। आप सभी को अपनी आकांक्षाओं को भी विस्तार देने का प्रयास करना चाहिए। नई जिम्मेदारियों से जुड़ने के बाद भी आप सीखने और self-development की प्रक्रिया को जारी रखें। आपकी मदद के लिए सरकार ने ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म iGOT Karmayogi तैयार किया है। आप सबसे आग्रह है कि इस सुविधा का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने का प्रयास करें। ▪

प्रधानमंत्री को 'ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को फ्रांस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री इमेनुएल मैक्रों द्वारा फ्रांस के सर्वोच्च पुरस्कार 'ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया। यह पुरस्कार समारोह पेरिस के एलिसी पैलेस में आयोजित किया गया। ▪

सरकार के काम को जमीन पर उतारना है- दर्शना सिंह

महिला मोर्चा की भूमिका चुनाव के दौरान और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। महिलाओं के लिए भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र और प्रदेश सरकार द्वारा अपार उपलब्धियां और योजनाएं बनाई है हमें उन योजनाओं का लाभ हर बहन तक पहुंचाना है। आज का समय सोशल मीडिया का है और हमें सशक्त होकर अपनी अहम् भूमिका का निर्वहन करना है। केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं को सोशल मीडिया के माध्यम से बहनों तक पहुंचाना है। समाज में प्रभावी भूमिका निभाने वाली बहनों को पार्टी से जोड़ने का काम करना है।

महिलाओं की अहम् भूमिका - कविता पाटीदार

विधानसभा चुनाव 2023 में महिलाओं की अहम् भूमिका है। हमें सरकार की योजनाओं को बूथ स्तर पर हर बहनों तक पहुचांकर उन्हें जोड़ना है। लाड़ली बहनों से घर-घर संपर्क एवं तुलसी पौधे का वितरण करना है। मोटे अनाज उत्पन्न करने वाले किसानों का सम्मान, मोटा अनाज उत्सव, रेस्टोरेंट मालिक और दुकानदारों का अभिनंदन करेंगे। प्रत्येक विधानसभा में महिला जनप्रतिनिधि एवं महिला कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। स्व सहायता समूह की बहनों से मंडल स्तरीय संवाद एवं संपर्क कार्यक्रम हमें करना है। राखी संग पाती कार्यक्रम लाड़ली बहनों के साथ राखी वर्क शॉप एवं प्रत्येक बहन से तीन राखी एवं एक धन्यवाद कार्ड निर्मित करवाना है। महिला मोर्चा मुख्यमंत्री निवास में राखी संग पाती कार्यक्रम का आयोजन करेगा। हमें 18 से 25 वर्ष तक की नवमतदाता युवती सम्मेलन, महिला लाभार्थी एवं लाड़ली बहना सम्मेलन, अल्पसंख्यक बहनों से संवाद एवं संपर्क कार्यक्रम मंडल स्तर पर करना और समाज में कार्य करने वाली विशिष्ट बहनों को भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा से जोड़ना है।

महिला मोर्चा अपनी भूमिका निभा रहा है- माया नारोलिया

मातृशक्ति की भूमिका हमेशा निर्णायक रही है। मध्यप्रदेश में महिला मोर्चा संगठन की नियमित और चुनावी कार्यक्रमों में प्रभावी रूप से भूमिका रही है। आजादी के 70 सालों तक किसी भी

सरकार ने माताओं, बहनों के दुख दर्द को नहीं समझा लेकिन जब गरीब मां का बेटा प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री बनता है तो वह गरीब माताओं के लिए योजनाएं बनाता है। प्रधानमंत्री जी ने उज्जवला योजना बनाकर माताओं, बहनों का दुख दर्द कम किया। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने मातृशक्ति को आत्मनिर्भर बनाया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत का नवनिर्माण हुआ है। अब हमारा देश सक्षम, शक्तिशाली और संपन्न राष्ट्र बना है। ▪

संयोजकों की घोषणा

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा जी द्वारा म. प्र. विधानसभा निर्वाचन -2023 हेतु जिला संयोजकों की घोषणा की गई है। **चम्बल संभाग** में जिला मुरैना से श्री वल्लभ डण्डोतिया, भिण्ड से श्री केशव सिंह भदौरिया, दतिया से डॉ. रामजी खरे, **ग्वालियर संभाग** में ग्वालियर नगर से श्री वेद प्रकाश शर्मा, ग्वालियर ग्रामीण से श्री ब्रज मोहन गुर्जर, श्योपुर से श्री कैलाश गुप्ता, शिवपुरी से श्री हरीहर शर्मा, गुना से श्री सूर्य प्रकाश तिवारी, अशोकनगर से श्री नीरज मनोरिया। **सागर संभाग** में जिला सागर से श्री जाहर सिंह, टीकमगढ़ से श्री अशोक गोयल, निवाड़ी से श्री नंदकिशोर नापित, छतरपुर से श्री उमेश शुक्ला, दमोह से श्री बिहारी लाल गौतम, पन्ना से श्री जय प्रकाश चतुर्वेदी, **रीवा संभाग** में जिला रीवा से श्री वीरेन्द्र गुप्ता, सतना से श्री पुष्पेन्द्र सिंह, सीधी से श्री के.के. तिवारी, सिंगरौली से श्री गिरीश द्विवेदी, **शहडोल संभाग** में जिला शहडोल से श्री राजेन्द्र भारती, अनुपपूर से श्री ब्रजेश गौतम, उमरिया से श्री मिथिलेश पयासी।

जबलपुर संभाग में जबलपुर नगर से श्री राजकुमार मेहता, जबलपुर ग्रामीण से श्री सुखराम पटेल, कटनी से श्री चमनलाल आनंद, डिण्डोरी से डॉ. सुनील जैन, मण्डला से श्री रतन सिंह ठाकुर, बालाघाट से श्री रमेश रंगलानी, सिवनी से श्री वेदसिंह ठाकुर, नरसिंहपुर से श्री भुपेन्द्र सिंह, छिंदवाड़ा से श्री कन्हईराम रघुवंशी। **नर्मदापुरम संभाग** में जिला नर्मदापुरम से श्री शिव चौबे, हरदा से श्री गौरीशंकर मुकाती,बैतूल से श्री अनिल सिंह कुशवाह। **भोपाल संभाग** में जिला भोपाल नगर से श्री कृष्णमोहन सोनी, भोपाल ग्रामीण से श्री गोविंद गुर्जर, रायसेन से श्री नरेन्द्र सिंह कुशवाह, विदिशा से श्री सूर्यप्रकाश मीणा, सिहोर से श्री सीताराम यादव, राजगढ़ से श्री रघुनंदन शर्मा। **इंदौर संभाग** में जिला इंदौर नगर से श्री बाबू सिंह रघुवंशी, इंदौर ग्रामीण से श्री ओम पटसावदिया, खण्डवा से श्री हरीश कोटवाले, बुरहानपुर से श्री विजय गुप्ता, खरगौन से श्री रंजीत डंडीर, बड़वानी से श्री अंतर सिंह आर्य, अलीराजपुर से श्री किशोर शाह, झाबुआ से श्री दौलत भावसार, धार से डॉ. राज बरफा, **उज्जैन संभाग** में जिला उज्जैन नगर से श्री किशोर खण्डेलवाल, उज्जैन ग्रामीण से श्री लाल सिंह राणावत,शाजापुर से श्री विजेन्द्र सिंह सिसौदिया, आगर से श्री दिलीप सकलेचा, देवास से श्री बहादुर मुकाती, रतलाम से श्री बजरंग पुरोहित, मंदसौर से श्री कैलाश चावला, नीमच से श्री महेन्द्र भटनागर जिला संयोजक हैं। ▪

प्रधानमंत्री सम्मानित अतिथि के रूप में बैस्टिल डे परेड में शामिल हुए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 14 जुलाई 2023 को चैंप्स-एलिसीस पर फ्रांस के राष्ट्रपति महामहिम श्री इमैनुएल मैक्रॉन के निमंत्रण पर सम्मानित अतिथि के रूप में बैस्टिल डे परेड में शामिल हुए।

भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक सैन्य बैंड के नेतृत्व में सेना के तीनों अंगों की 241 सदस्यीय भारतीय सशस्त्र बलों की टुकड़ी ने भी परेड में भाग लिया। भारतीय सेना की टुकड़ी का नेतृत्व पंजाब रेजिमेंट ने राजपूताना राइफल्स रेजिमेंट के साथ किया।

हाशिमारा के 101 स्क्वाड्रन से भारतीय वायु सेना के राफेल जेट परेड के दौरान फ्लाई पास्ट का हिस्सा बने। 14 जुलाई को फ्रांसीसी क्रांति के दौरान 14 जुलाई 1789 को बैस्टिल जेल पर हुए हमले की वर्षगांठ मनाई जाती है, जो भारतीय और फ्रांसीसी दोनों संविधानों के केंद्रीय विषय ''स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे'' के लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है। ▪

स्वतन्त्रता दिवस की पुकार

अटल बिहारी वाजपेयी

पन्द्रह अगस्त का दिन कहता - आजादी अभी अधूरी है।
सपने सच होने बाकी हैं, रावी की शपथ न पूरी है॥

जिनकी लाशों पर पग धर कर आजादी भारत में आई।
वे अब तक हैं खानाबदोश गम की काली बदली छाई॥

कलकत्ते के फुटपाथों पर जो आँधी-पानी सहते हैं।
उनसे पूछो, पन्द्रह अगस्त के बारे में क्या कहते हैं॥

हिन्दू के नाते उनका दु:ख सुनते यदि तुम्हें लाज आती।
तो सीमा के उस पार चलो सभ्यता जहाँ कुचली जाती॥

इंसान जहाँ बेचा जाता, ईमान खरीदा जाता है।
इस्लाम सिसकियाँ भरता है, डालर मन में मुस्काता है॥

भूखों को गोली नंगों को हथियार पिन्हाये जाते हैं।
सूखे कण्ठों से जेहादी नारे लगवाए जाते हैं॥

लाहौर, कराची, ढाका पर मातम की है काली छाया।
पख्तूनों पर, गिलगित पर है गमगीन गुलामी का साया॥

बस इसीलिए तो कहता हूँ आजादी अभी अधूरी है।
कैसे उल्लास मनाऊँ मैं? थोड़े दिन की मजबूरी है॥

दिन दूर नहीं खण्डित भारत को पुन: अखण्ड बनाएँगे।
गिलगित से गारो पर्वत तक आजादी पर्व मनाएँगे॥

उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसें बलिदान करें।
जो पाया उसमें खो न जाएँ, जो खोया उसका ध्यान करें॥

हर घर तिरंगा फहराना है

जुलाई का महीना यानि मानसून का महीना, बारिश का महीना। बीते कुछ दिन, प्राकृतिक आपदाओं के कारण, चिंता और परेशानी से भरे रहे हैं। यमुना समेत कई नदियों में बाढ़ से कई इलाकों में लोगों को तकलीफ उठानी पड़ी है। पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की घटनाएँ भी हुई हैं। इसी दौरान, देश के पश्चिमी हिस्से में, कुछ समय पूर्व गुजरात के इलाकों में, बिपरजॉय cyclone भी आया। लेकिन इन आपदाओं के बीच, हम सब देशवासियों ने फिर दिखाया है, कि, सामूहिक प्रयास की ताकत क्या होती है। स्थानीय लोगों ने, हमारे NDRF के जवानों ने, स्थानीय प्रशासन के लोगों ने, दिन-रात लगाकर ऐसी आपदाओं का मुकाबला किया है। किसी भी आपदा से निपटने में हमारे सामर्थ्य और संसाधनों की भूमिका बड़ी होती है-लेकिन इसके साथ ही, हमारी संवेदनशीलता और एक दूसरे का हाथ थामने की भावना, उतनी ही अहम् होती है। सर्वजन हिताय की यही भावना भारत की पहचान भी है और भारत की ताकत भी है।

बारिश का यही समय 'वृक्षारोपण' और 'जल संरक्षण' के लिए भी उतना ही जरुरी होता है। आजादी के 'अमृत महोत्सव' के दौरान बने 60 हजार से ज्यादा अमृत सरोवरों में भी रौनक बढ़ गई है। अभी 50 हजार से ज्यादा अमृत सरोवरों को बनाने का काम चल भी रहा है। हमारे देशवासी पूरी जागरूकता और जिम्मेदारी के साथ 'जल संरक्षण' के लिए नए-नए प्रयास कर रहे हैं। कुछ समय पहले, मैं, एम.पी. के शहडोल गया था। वहाँ मेरी मुलाकात पर्करिया गाँव के आदिवासी भाई-बहनों से हुई थी। वहीं पर मेरी उनसे प्रकृति और पानी को बचाने के लिए भी चर्चा हुई थी। अभी मुझे पता चला है कि पकरिया गाँव के आदिवासी भाई-बहनों ने इसे लेकर काम भी शुरू कर दिया है। यहाँ, प्रशासन की मदद से, लोगों ने, करीब सौ कुओं को Water Recharge System में बदल दिया है। बारिश का पानी, अब इन कुओं में जाता है, और कुओं से ये पानी, जमीन के अंदर चला जाता है। इससे इलाके में भू-जल स्तर भी धीरे-धीरे सुधरेगा। अब सभी गाँव वालों ने पूरे क्षेत्र के करीब-करीब 800 कुएं को recharge के लिए उपयोग में लाने का लक्ष्य बनाया है। ऐसी ही एक उत्साहवर्धक खबर यू.पी. से आई है। कुछ दिन पहले, उत्तर प्रदेश में, एक दिन में, 30 करोड़ पेड़ लगाने का record बनाया गया है। इस अभियान की शुरुआत राज्य सरकार ने की, उसे, पूरा, वहाँ के लोगों ने किया। ऐसे प्रयास जन-भागीदारी के साथ-साथ जन-जागरण के भी बड़े उदाहरण हैं। मैं चाहूँगा कि, हम सब भी, पेड़ लगाने और पानी बचाने के इन प्रयासों का हिस्सा बनें।

इस समय 'सावन' का पवित्र महीना चल रहा है। सदाशिव महादेव की साधना-आराधना के साथ ही 'सावन' हरियाली और खुशियों से जुड़ा होता है।

इसीलिए, 'सावन' का आध्यात्मिक के साथ ही सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्व रहा है। सावन के झूले, सावन की मेहँदी, सावन के उत्सव - यानि 'सावन' का मतलब ही आनंद और उल्लास होता है।

इस समय 'सावन' का पवित्र महीना चल रहा है। सदाशिव महादेव की साधना-आराधना के साथ ही 'सावन' हरियाली और खुशियों से जुड़ा होता है। इसीलिए, 'सावन' का आध्यात्मिक के साथ ही सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्व रहा है। सावन के झूले, सावन की मेहँदी, सावन के उत्सव - यानि 'सावन' का मतलब ही आनंद और उल्लास होता है।

हमारी इस आस्था और इन परम्पराओं का एक पक्ष और भी है। हमारे ये पर्व और परम्पराएँ हमें गतिशील बनाते हैं। सावन में शिव आराधना के लिए कितने ही भक्त काँवड़ यात्रा पर निकलते हैं। 'सावन' की वजह से इन दिनों 12 ज्योतिर्लिंगों में भी खूब श्रद्धालु

पहुँच रहे हैं। आपको' ये जानकार भी अच्छा लगेगा कि बनारस पहुँचने वाले लोगों की संख्या भी record तोड़ रही है। अब काशी में हर साल 10 करोड़ से भी ज्यादा पर्यटक पहुँच रहे हैं। अयोध्या, मथुरा, उज्जैन जैसे तीर्थों पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। इससे लाखों गरीबों को रोजगार मिल रहा है, उनका जीवन-यापन हो रहा है। ये सब, हमारे सांस्कृतिक जन-जागरण का परिणाम है। इसके दर्शन के लिए, अब तो पूरी दुनिया से लोग हमारे तीर्थों में आ रहे हैं। मुझे ऐसे ही दो अमेरिकन दोस्तों के बारे में पता चला है जो California से यहाँ अमरनाथ यात्रा करने आए थे। इन विदेशी मेहमानों ने अमरनाथ यात्रा से जुड़े स्वामी विवेकानंद के अनुभवों के बारे में कहीं सुना था। उससे उन्हें इतनी प्रेरणा मिली कि ये खुद भी अमरनाथ यात्रा करने आ गए। ये, इसे, भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद मानते हैं। यही भारत की खासियत है, कि सबको अपनाता है, सबको कुछ न कुछ देता है। ऐसे ही एक French मूल की महिला हैं -Charlotte Shopa (शारलोट शोपा)। बीते दिनों जब मैं France गया था तो इनसे मेरी मुलाकात हुई थी। Charlotte Shopa (शारलोट शोपा) एक Yoga Practitioner हैं, Yoga Teacher है, और उनकी उम्र, 100 साल से भी ज्यादा है। वो century पार कर चुकी हैं। वो पिछले 40 साल से योग Practice कर रही हैं। वो अपने स्वास्थ्य और 100 साल की इस आयु का श्रेय योग को ही देती हैं। वो दुनिया में भारत के योग विज्ञान और इसकी ताकत का एक प्रमुख चेहरा बन गई हैं। इन से हर किसी को सीखना चाहिए। हम न केवल अपनी विरासत को अंगीकार करें, बल्कि, उसे जिम्मेदारी से साथ विश्व के सामने प्रस्तुत भी करें। और मुझे खुशी है कि ऐसा ही एक प्रयास इन दिनों उज्जैन में चल रहा है। यहाँ देशभर के 18 चित्रकार, पुराणों पर आधारित आकर्षक चित्रकथाएँ बना रहे हैं। ये चित्र, बूंदी शैली, नाथद्वारा शैली, पहाड़ी शैली और अपभ्रंश शैली जैसी कई विशिष्ट शैलियों में बनेंगे। इन्हें उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय में प्रदर्शित किया जाएगा, यानि कुछ समय बाद, जब आप उज्जैन जाएंगे, तो, महाकाल महालोक के साथ-साथ एक और दिव्य स्थान के आप दर्शन कर सकेंगे।

उज्जैन में बन रही इन Paintings की बात करते हुए मुझे एक और अनोखी Painting की याद आ गई है। ये Painting राजकोट के एक Artist प्रभात सिंग मोडभाई बरहाट जी ने बनाई थी। ये Painting, छत्रपति वीर शिवाजी महाराज के जीवन के एक प्रसंग पर आधारित थी। Artist प्रभात भाई ने दर्शाया था कि छत्रपति शिवाजी महाराज राज्याभिषेक के बाद अपनी कुलदेवी 'तुलजा माता' के दर्शन करने जा रहे थे, तो उस समय क्या माहौल था। अपनी परम्पराओं, अपनी धरोहरों को जीवंत रखने के लिए हमें उन्हें सहेजना होता है, उन्हें जीना होता है, उन्हें अगली पीढ़ी को सिखाना होता है। आज, इस दिशा में अनेकों प्रयास हो रहे हैं।

कई बार जब हम Ecology, Flora, Fauna, Bio Diversity जैसे शब्द सुनते हैं, तो कुछ लोगों को लगता है कि ये तो Specialized Subject है, इनसे जुड़े Experts के विषय हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। अगर हम वाकई प्रकृति प्रेम करते हैं, तो हम अपने छोटे-छोटे प्रयासों से भी बहुत कुछ कर सकते हैं। तमिलनाडु में वाडावल्ली के एक साथी हैं, सुरेश राघवन जी। राघवन जी को Painting का शौक है। आप जानते हैं, Painting कला और Canvas से जुड़ा काम है, लेकिन, राघवन जी ने तय किया कि वो अपनी Paintings के जरिए पेड़-पौधों और जीव जंतुओं की जानकारी को संरक्षित करेंगे। वो अलग-अलग Flora और Fauna की Paintings बनाकर उनसे जुड़ी जानकारी का Documentation करते हैं। वो अब तक दर्जनों ऐसी चिड़ियाओं की, पशुओं की, Orchids की Paintings बना चुके हैं, जो विलुप्त होने की कगार पर हैं। कला के जरिए प्रकृति की सेवा करने का ये उदाहरण वाकई अद्भुत है।

कुछ दिन पहले Social Media पर एक अद्भुत craze दिखा। अमेरिका ने हमें सौ से ज्यादा दुर्लभ और प्राचीन कलाकृतियाँ वापस लौटाई हैं। इस खबर के सामने आने के बाद Social Media पर इन कलाकृतियों को लेकर खूब चर्चा हुई। युवाओं में अपनी विरासत के प्रति गर्व का भाव दिखा। भारत लौटीं ये कलाकृतियाँ ढाई हजार साल से लेकर ढाई सौ साल तक पुरानी हैं। आपको यह भी जानकर खुशी होगी कि इन दुर्लभ चीजों का नाता देश के अलग-अलग क्षेत्रों से है। ये Terracotta, Stone, Metal और लकड़ी के इस्तेमाल से बनाई गई हैं। इनमें से कुछ तो ऐसी हैं, जो आपको, आश्चर्य से भर देंगी। आप इन्हें देखेंगे, तो देखते ही रह जायेंगे। इनमें 11वीं शताब्दी का एक खूबसूरत Sandstone Sculpture (स्कल्पचर) भी आपको देखने को मिलेगा। ये नृत्य करती हुई एक 'अप्सरा' की कलाकृति है, जिसका नाता, मध्य प्रदेश से है। चोल युग की कई मूर्तियाँ भी इनमें शामिल हैं। देवी और भगवान मुर्गन की प्रतिमाएँ तो 12वीं शताब्दी की हैं और तमिलनाडु की वैभवशाली संस्कृति से जुड़ी हैं। भगवान गणेश की करीब एक हजार वर्ष पुरानी कांसे की प्रतिमा भी भारत को लौटाई गई है। ललितासन में बैठे उमा-महेश्वर की एक मूर्ति 11वीं शताब्दी की बताई जाती है जिसमें वह दोनों नंदी पर आसीन हैं। पत्थरों से बनी जैन तीर्थंकरों की दो मूर्तियाँ भी भारत वापस आई हैं। भगवान सूर्य देव की दो प्रतिमाएं भी आपका मन मोह लेंगी। इनमें से एक Sandstone से

बनी है। वापस लौटाई गई चीजों में लकड़ी से बना एक पैनल भी है, जो समुद्र मंथन की कथा को सामने लाता है। 16वीं-17वीं सदी के इस Panel (पैनल) का जुड़ाव दक्षिण भारत से है।

यहाँ मैंने तो बहुत कम ही नाम लिए हैं, जबकि देखें, तो यह List, बहुत लंबी है। मैं, अमेरिकी सरकार का आभार करना चाहूँगा, जिन्होंने हमारी इस बहुमूल्य विरासत को, लौटाया है। 2016 और 2021 में भी जब मैंने अमेरिका की यात्रा की थी, तब भी कई कलाकृतियाँ भारत को लौटाई गई थी। मुझे विश्वास है कि ऐसे प्रयासों से हमारी सांस्कृतिक धरोहरों की चोरी रोकने को इस बात को ले करके देशभर में जागरूकता बढ़ेगी। इससे हमारी समृद्ध विरासत से देशवासियों का लगाव भी और गहरा होगा।

देवभूमि उत्तराखंड की कुछ माताओं और बहनों ने जो पत्र मुझे लिखे हैं, वो भावुक कर देने वाले हैं। उन्होंने अपने बेटे को, अपने भाई को, खूब सारा आशीर्वाद दिया है। उन्होंने लिखा है कि - 'उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर रहा 'भोजपत्र', उनकी आजीविका का, साधन, बन सकता है। आप सोच रहे होंगे कि यह पूरा माजरा है क्या?

मुझे यह पत्र लिखे हैं चमोली जिले की नीती-माणा घाटी की महिलाओं ने। ये वो महिलाएं हैं, जिन्होंने पिछले साल अक्टूबर में मुझे भोजपत्र पर एक अनूठी कलाकृति भेंट की थी। यह उपहार पाकर मैं भी बहुत अभिभूत हो गया। आखिर, हमारे यहाँ प्राचीन काल से हमारे शास्त्र और ग्रंथ, इन्हीं भोजपत्रों पर सहेजे जाते रहे हैं। महाभारत भी तो इसी भोजपत्र पर लिखा गया था। आज, देवभूमि की ये महिलाएं, इस भोजपत्र से, बेहद ही सुंदर-सुंदर कलाकृतियाँ और स्मृति चिन्ह बना रही हैं। माणा गांव की यात्रा के दौरान मैंने उनके इस Unique प्रयास की सराहना की थी। मैंने, देवभूमि आने वाले पर्यटकों से अपील की थी, कि वो, यात्रा के दौरान ज्यादा से ज्यादा Local Products खरीदें। इसका वहाँ बहुत

असर हुआ है। आज, भोजपत्र के उत्पादों को यहाँ आने वाले तीर्थयात्री काफी पसंद कर रहे हैं और इसे अच्छे दामों पर खरीद भी रहे हैं। भोजपत्र की यह प्राचीन विरासत, उत्तराखंड की महिलाओं के जीवन में खुशहाली के नए-नए रंग भर रही है। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई है कि भोजपत्र से नए-नए Product बनाने के लिए राज्य सरकार, महिलाओं को Training भी दे रही है।

राज्य सरकार ने भोजपत्र की दुर्लभ प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए भी अभियान शुरू किया है। जिन क्षेत्रों को कभी देश का आखिरी छोर माना गया था, उन्हें अब, देश का प्रथम गाँव मानकर विकास हो रहा है। ये प्रयास अपनी परंपरा और संस्कृति को संजोने के साथ आर्थिक तरक्की का भी जरिया बन रहा है।

'मन की बात' में मुझे इस बार काफी संख्या में ऐसे पत्र भी मिले हैं, जो मन को बहुत ही संतोष देते है। ये चिट्ठी उन मुस्लिम महिलाओं ने लिखी हैं, जो हाल ही में हज यात्रा करके आई हैं। उनकी ये यात्रा कई मायनों में बहुत खास है। ये वो महिलाएं हैं, जिन्होंने, हज की यात्रा, बिना किसी पुरुष सहयोगी या मेहरम के बिना पूरी की है और ये संख्या सौ-पचास नहीं, बल्कि, 4 हजार से ज्यादा है - यह एक बड़ा बदलाव है। पहले, मुस्लिम महिलाओं को बिना मेहरम, 'हज' करने की इजाजत नहीं थी। मैं 'मन की बात' के माध्यम से सऊदी अरब सरकार का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। बिना मेहरम 'हज' पर जा रही महिलाओं के लिए खासतौर पर women coordinators नियुक्त की गई थी।

बीते कुछ वर्षों में Haj Policy में जो बदलाव किए गए हैं, उनकी भरपूर सराहना हो रही है। हमारी मुस्लिम माताओं और बहनों ने इस बारे में मुझे काफी कुछ लिखा है। अब, ज्यादा से ज्यादा लोगों को 'हज' पर जाने का मौका मिल रहा है। 'हज यात्रा' से लौटे लोगों ने, विशेषकर हमारी माताओं-बहनों ने चिट्ठी लिखकर जो आशीर्वाद दिया है, वो अपने आप में बहुत प्रेरक है।

जम्मू-कश्मीर में Musical Nights हों, High Altitudes में Bike Rallies हों, चंडीगढ़ के local clubs हों, और, पंजाब में ढेर सारे Sports Groups हों, ये सुनकर लगता है, Entertainment की बात हो रही है, Adventure की बात हो रही है। लेकिन बात कुछ और है, ये आयोजन एक 'common cause' से भी जुड़ा हुआ है। और

ये common cause है - drugs के खिलाफ जागरूकता अभियान।

जम्मू-कश्मीर के युवाओं को Drugs से बचाने के लिए कई Innovative प्रयास देखने को मिले हैं। यहाँ, Musical Night, Bike Rallies जैसे कार्यक्रम हो रहे हैं। चंडीगढ़ में इस Message को Spread करने के लिए Local Clubs को इससे जोड़ा गया है। वे इन्हें VADA (वादा) clubs कहते हैं। VADA यानी Victory Against Drugs Abuse. पंजाब में कई Sports Groups भी बनाए गए हैं, जो Fitness पर ध्यान देने और नशा मुक्ति के लिए Awareness Campaign चला रहे हैं। नशे के खिलाफ अभियान में युवाओं की बढ़ती भागीदारी बहुत उत्साह बढ़ाने वाली है। ये प्रयास, भारत में नशे के खिलाफ अभियान को बहुत ताकत देते हैं। हमें देश की भावी पीढ़ियों को बचाना है, तो उन्हें, drugs से दूर रखना ही होगा। इसी सोच के साथ, 15 अगस्त 2020 को 'नशा मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत की गई थी। इस अभियान से 11 करोड़ से ज्यादा लोगों को जोड़ा गया है। दो हफ्ते पहले ही भारत ने drugs के खिलाफ बहुत बड़ी कारवाई की है। drugs की करीब डेढ़ लाख किलो की खेप को जब्त करने के बाद उसे नष्ट कर दिया गया है। भारत ने 10 लाख किलो Drugs को नष्ट करने का अनोखा record भी बनाया है। इन Drugs की कीमत 12,000 करोड़ रुपये से

भी ज्यादा थी। मैं, उन सभी की सराहना करना चाहूँगा, जो, नशा मुक्ति के इस नेक अभियान में अपना योगदान दे रहे हैं। नशे की लत, न सिर्फ परिवार, बल्कि, पूरे समाज के लिए बड़ी परेशानी बन जाती है। ऐसे में यह खतरा हमेशा के लिए खत्म हो, इसके लिए जरुरी है कि हम सब एकजुट होकर इस दिशा में आगे बढ़ें।

जब बात drugs और युवा-पीढ़ी की हो रही है, तो मैं आपको मध्य प्रदेश की एक Inspiring-journey के बारे में भी बताना चाहता हूँ। ये Inspiring Journey है Mini Brazil की। आप सोच रहे होंगे कि मध्य प्रदेश में Mini Brazil कहां से आ गया, यही तो twist है। एम.पी. के शहडोल में एक गांव है बिचारपुर। बिचारपुर को Mini Brazil कहा जाता है। Mini Brazil इसलिए, क्योंकि ये गांव आज फुटबाल के उभरते सितारों का गढ़ बन गया है। जब कुछ हफ्ते पहले मैं शहडोल गया था, तो मेरी मुलाकात वहां ऐसे बहुत सारे Football खिलाड़ियों से हुई थी। मुझे लगा कि इस बारे में हमारे देशवासियों को और खासकर युवा साथियों को जरूर जानना चाहिए।

बिचारपुर गांव के Mini Brazil बनने की यात्रा दो-ढाई दशक पहले शुरू हुई थी। उस दौरान, बिचारपुर गांव अवैध शराब के लिए बदनाम था, नशे की गिरफ्त में था। इस माहौल का सबसे बड़ा नुकसान यहाँ के युवाओं को हो रहा था। एक पूर्व National Player और coach रईस एहमद ने इन युवाओं की प्रतिभा को पहचाना। रईस जी के पास संसाधन ज्यादा नहीं थे, लेकिन उन्होंने, पूरी लगन से, युवाओं को, Football सिखाना शुरू किया। कुछ साल के भीतर ही यहाँ Football इतनी popular हो गयी, कि बिचारपुर गांव की पहचान ही Football से होने लगी। अब यहाँ Football क्रांति नाम से एक प्रोग्राम भी चल रहा है। इस प्रोग्राम के तहत युवाओं को इस खेल से जोड़ा जाता है और उन्हें training दी जाती है। ये प्रोग्राम इतना सफल हुआ है कि बिचारपुर से National और state level के 40 से ज्यादा खिलाड़ी निकले हैं। ये Football क्रांति अब धीरे-धीरे पूरे क्षेत्र में फैल रही है। शहडोल और उसके आसपास के काफी बड़े इलाके में 1200 से ज्यादा Football club बन चुके हैं। यहाँ से बड़ी संख्या में ऐसे खिलाड़ी निकल रहे है, जो, National level पर खेल रहे हैं। Football के कई बड़े पूर्व खिलाड़ी और coach, आज, यहाँ, युवाओं को, Training दे रहे हैं। आप सोचिये, एक आदिवासी इलाका जो अवैध शराब के लिए जाना जाता था, नशे के लिए बदनाम था, वो अब देश की Football Nursery बन गया है। इसीलिए तो कहते हैं - जहां चाह, वहां राह। हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। जरूरत है तो उन्हें तलाशने की और तराशने की। इसके बाद यही युवा देश का नाम रौशन भी करते हैं और देश के विकास को दिशा भी देते हैं।

आजादी के 75 साल पूरे होने के अवसर पर हम सभी पूरे उत्साह से 'अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। 'अमृत महोत्सव' के दौरान देश में करीब-करीब दो लाख कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। ये कार्यक्रम एक से बढ़कर एक रंगों से सजे थे, विविधता से भरे थे। इन आयोजनों की एक खूबसूरती ये भी रही कि इनमें record संख्या में युवाओं ने हिस्सा लिया। इस दौरान हमारे युवाओं को देश की महान विभूतियों के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। पहले कुछ महीनों की ही बात करें, तो जन-भागीदारी से जुड़े कई दिलचस्प कार्यक्रम देखने को मिले। ऐसा ही एक कार्यक्रम था -दिव्यांग लेखकों के लिए 'Writer's Meet' का आयोजन। इसमें record संख्या में लोगों की सहभागिता देखी गई। वहीं, आंध्र प्रदेश के तिरुपति में 'राष्ट्रीय संस्कृत सम्मलेन' का आयोजन हुआ। हम सभी जानते हैं कि हमारे इतिहास में किलों का, forts का, कितना महत्व रहा है। इसी को दर्शाने वाली एक Campaign, 'किले और कहानियाँ' यानी Forts से जुड़ी कहानियाँ भी लोगों को खूब पसंद आई।

आज जब देश में, चारों तरफ 'अमृत महोत्सव' की गूँज है, 15 अगस्त पास ही है तो देश में एक और बड़े अभियान की शुरुआत होने जा रही है। शहीद वीर-वीरांगनाओं को सम्मान देने के लिए 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान शुरू होगा। इसके तहत देश-भर में हमारे अमर बलिदानियों की स्मृति में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। इन विभूतियों की स्मृति में, देश की लाखों ग्राम पंचायतों में, विशेष शिलालेख भी स्थापित किए जाएंगे। इस अभियान के तहत देश-भर में 'अमृत कलश यात्रा' भी निकाली जाएगी। देश के गाँव-गाँव से, कोने-कोने से, 7500 कलशों में मिट्टी लेकर ये 'अमृत कलश यात्रा' देश की राजधानी दिल्ली पहुचेंगी। ये यात्रा अपने साथ देश के अलग-अलग हिस्सों से पौधे लेकर भी आएगी। 7500 कलश में आई माटी और पौधों से मिलाकर फिर National War Memorial के समीप 'अमृत वाटिका' का निर्माण किया जाएगा। ये 'अमृत वाटिका', 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत का' भी बहुत ही भव्य प्रतीक बनेगी।

मैंने पिछले साल लाल किले से अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के लिए 'पंच प्राण' की बात की थी। 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में हिस्सा लेकर हम इन 'पंच प्राणों' को पूरा करने की शपथ भी लेंगे। आप सभी, देश की पवित्र मिट्टी को हाथ में लेकर शपथ लेते हुए अपनी सेल्फी को yuva.gov.in पर जरुर upload करें। पिछले वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा अभियान' के लिए जैसे पूरा देश एक साथ आया था, वैसे ही हमें इस बार भी फिर से, हर घर तिरंगा फहराना है, और इस परंपरा को लगातार आगे बढ़ाना है। इन प्रयासों से हमें अपने कर्तव्यों का बोध होगा, देश की आजादी के लिए दिए गए असंख्य बलिदानों का बोध होगा, आजादी के मूल्य का ऐहसास होगा। इसलिए, हर देशवासी को, इन प्रयासों से, जरुर जुड़ना चाहिए। ▪

वीरांगना रानी अवंती बाई

रानी अवंतीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना थीं। 1857 की क्रांति में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार थीं। ये लोधी समाज की महावीरांगना थीं।

रानी अवंतीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना थीं। 1857 की क्रांति में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार थीं। ये लोधी समाज की महावीरांगना थीं। 1857 के मुक्ति आंदोलन में इस राज्य की अहम भूमिका थी, जिससे इतिहास जगत अनभिज्ञ है। 1817 से 1851 तक रामगढ़ राज्य के शासक लक्ष्मण सिंह थे। उनके निधन के बाद राजकुमार विक्रमादित्य सिंह ने राजगद्दी संभाली। उनका विवाह बाल्यावस्था में ही मनकेहणी के जमींदार राव जुझार सिंह की कन्या अवंती बाई से हुआ। विक्रमादित्य सिंह बचपन से ही वीतरागी प्रवृत्ति के थे और पूजापाठ एवं धार्मिक अनुष्ठानों में लगे रहते। अतः राज्य संचालन का काम उनकी पत्नी रानी अवंतीबाई ही करती रहीं। उनके दो पुत्र हुए अमान सिंह और शेर सिंह। अंग्रेजों ने तब तक भारत के अनेक भागों में अपने पैर जमा लिए थे।

रामगढ़ के राजा विक्रमाजीत सिंह को विक्षिप्त तथा अमान सिंह और शेर सिंह को नाबालिग घोषित कर रामगढ़ राज्य को हड़पने की दृष्टि से अंग्रेज शासकों ने 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' की कार्यवाही की एवं राज्य के प्रशासन के लिए सरबराहकार नियुक्त कर शेख मोहमद तथा मोहमद अब्दुल्ला को रामगढ़ भेजा। जिससे रामगढ़ रियासत 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' के कब्जे में चली गयी। अंग्रेज शासकों की इस हड़प नीति का परिणाम भी रानी जानती थी, फिर भी दोनों सरबराहकारों को उन्होंने रामगढ़ से बाहर निकाल दिया। 1855 ई. में राजा विक्रमादित्य सिंह की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। अब नाबालिग पुत्रों की संरक्षिका के रूप में राज्य शक्ति रानी के हाथों आ गयी। रानी ने राज्य के कृषकों को अंग्रेजों के निर्देशों को न मानने का आदेश दिया, इस सुधार कार्य से रानी की लोकप्रियता बढ़ी।

1857 ईस्वी में सागर एवं नर्मदा परिक्षेत्र के निर्माण के साथ अंग्रेजों की शक्ति में वृद्धि हुई। अब अंग्रेजों को रोक पाना किसी एक राजा या तालुकेदार के वश का नहीं रहा। रानी ने राज्य के आसपास के राजाओं, परगनादारों, जमींदारों और बड़े मालगुजारों का विशाल समेलन रामगढ़ में आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता गढ़ पुरवा के राजा शंकरशाह ने की। गुप्त समेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार प्रचार का दायित्व रानी पर था। एक पत्र और दो काली चूड़ियों की एक पुड़िया बनाकर प्रसाद के रूप में वितरित करना। पत्र में लिखा गया 'अंग्रेजों से संघर्ष के लिए तैयार रहो या चूड़ियों पहनकर घर में बैठो।' पत्र सौहार्द और एकजुटता का प्रतीक था तो चूड़ियां पुरुषार्थ जागृत करने का सशक्त माध्यम बनी। पुड़िया लेने का अर्थ था अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति में अपना समर्थन देना।

देश के कुछ क्षेत्रों में क्रांति का शुभारंभ हो चुका था। 1857 में 52वीं देशी पैदल सेना जबलपुर सैनिक केन्द्र की सबसे बड़ी शक्ति थी। 18 जून को इस सेना के एक सिपाही ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर घातक हमला किया। जुलाई 1857 में मण्डला के परगनादार उमराव सिंह ठाकुर ने कर देने से इनकार कर दिया और इस बात का प्रचार करने लगा कि अंग्रेजों का राज्य समाप्त हो गया। अंग्रेज, विद्रोहियों को डाकू और लुटेरे कहते थे। मण्डला के डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन ने मेजर इस्काइन से सेना की मांग की। पूरे महाकौशल क्षेत्र में विद्रोहियों की हलचलें बढ़ गईं। गुप्त सभाएं और प्रसाद की पुड़ियों का वितरण चलता रहा। इस बीच राजा शंकरशाह और राजकुमार रघुनाथ शाह को दिए गए मृत्युदण्ड से अंग्रेजों की नृशंसता की व्यापक प्रतिक्रिया हुई। वे इस क्षेत्र के राज्यवंश के प्रतीक थे। इसकी प्रथम प्रतिक्रिया रामगढ़ में हुई। रामगढ़ के सेनापति ने भुआ बिछिया थाना में चढ़ाई कर दी। जिससे थाने के सिपाही थाना छोड़कर भाग गए और विद्रोहियों ने थाने पर अधिकार कर लिया। रानी के सिपाहियों ने घुघरी पर चढ़ाई कर उस पर अपना अधिकार कर लिया और वहां के तालुकेदार धन सिंह की सुरक्षा के लिए उमराव सिंह को जिम्मेदारी सौंपी।

मण्डला नगर को छोड़कर पूरा जिला स्वतंत्र हो चुका था। अवंतीबाई लोधी ने मण्डला विजय के लिए सिपाहियों सहित प्रस्थान किया। रानी की सूचना प्राप्त होने पर शहपुरा और मुकास के जमींदार भी मण्डला की और रवाना हुए। मण्डला पहुंचने के पूर्व खड़देवरा के सिपाही भी रानी के सिपाहियों से मिल गए। खैरी के पास अंग्रेज सिपाहियों के साथ अवंती बाई का युद्ध हुआ। वाडिंग्टन पूरी शक्ति लगाने के बाद भी कुछ न कर सका और मण्डला छोड़ सिवनी की ओर भाग गया। इस प्रकार पूरा मण्डला जिला एवं रामगढ़ राज्य स्वतंत्र हो गया।

अंग्रेजी सेनाएं रामगढ़ विजय के बाद देवहारगढ़ की ओर रवाना हुईं। यहां रानी की सहायता के लिए शहपुरा एवं शाहपुर के जमींदार भी पहुंच चुके थे। देवहारगढ़ को अंग्रेज सैनिकों ने चारों ओर से घेर लिया। क्रांतिकारियों और अंग्रेजी सेना के मध्य निर्णायक युद्ध प्रारंभ हुआ। कई दिनों तक दोनों के मध्य युद्ध चलता रहा। रानी भी घायल हो चुकी थी। सैनिकों की संख्या कम होती जा रही थी। आगे युद्ध करना और स्वयं को सुरक्षित रखना कठिन हो गया। 20 मार्च 1858 रानी ने आत्मसमान की रक्षा के लिए गिरधारी नाई की कटार छीनकर घुनसी नाले के निकट आत्मोत्सर्ग कर दिया। रानी का बलिदान हो गया, फिर भी मुक्ति आंदोलन में ठहराव नहीं आया। यह क्रांति मात्र रामगढ़ की रानी अवंतीबाई की नहीं थी, अपितु संपूर्ण क्षेत्र की थी, क्षेत्र की प्रजा की थी। ▪

नारी शक्ति की प्रतीक हैं देवी अहिल्या

देवी अहिल्या बाई रणनीति के साथ कूटनीति में भी चतुर थी, उन्होंने राघोबा को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है: तुम मेरा राज्य छीनने की बड़ी भूल कर रहे हो। तुमने मुझे अबला समझा है, परन्तु शायद तुम्हे यह नहीं मालूम की मैं कैसी अबला हूँ? ये तो तुम्हें रणभूमि में ही पता चलेगा।

देवी अहिल्या बाई होल्कर को लोकमाता के स्वरूप में मालवा क्षेत्र की जनता नमन करती थी। चाहे उस समय अर्थात सन् १७०० में लोकतांत्रिक पद्धति नहीं थी, लेकिन राजधर्म के अनुसार शासन संचालन देवी अहिल्या बाई ने किया। उनका जीवन धर्म संस्कृति के लिए था। वे जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन चलाती थी। वे शक्ति की भी प्रतीक थी। राघोबा जो पेशवा के सूबेदार थे। उन्होंने होल्कर राज्य हड़पने की साजिश रची। वे सेना लेकर मालवा में आये और उन्होंने होल्कर राज्य का शासन सम्हालने का ऐलान करवा दिया। राज्य की जनता देवी अहिल्या बाई को चाहती थी। अहिल्या बाई ने मुकाबले के लिए सैनिक तैयारी प्रारंभ कर दी। उनकी अपनी महिला सेना थी। भोंसले और गायकवाड़ की सेना भी देवी अहिल्या की सहायता के लिए आ गई। क्षिप्रा के उस पार राघोबा की सेना ने डेरा डाल रखा था।

देवी अहिल्या बाई रणनीति के साथ कूटनीति में भी चतुर थी, उन्होंने राघोबा को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है तुम मेरा राज्य छीनने की बड़ी भूल कर रहे हो। तुमने मुझे अबला समझा है, परन्तु शायद तुम्हे यह नहीं मालूम की मैं कैसी अबला हूँ? ये तो तुम्हें रणभूमि में ही पता चलेगा। मैं तुमसे रणभूमि में भेंट करने आ रही हूं। तुहारी मर्दानगी का मुकाबला अपने वीर जांबाजों से नहीं कराऊंगी, तुम्हारे लिए मेरी महिला सेना ही काफी है। यदि आप हमारी महिला सेना से हार गये तो कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहोगे। यदि मैं हार गई तो कोई मेरी हंसी नहीं उड़ायेगा। सभी आप पर ही थूथू करेंगे। फिर तुम्हारे सिर पर ऐसा कलंक का टीका लगेगा, जिसे तुम कभी नहीं भुला पाओगे। सोच समझकर ही लड़ाई का निर्णय लेना, राघोबा। इसके बाद राघोबा ने लड़ाई का विचार छोड़कर देवी अहिल्या को बेटी कहना शुरू किया और वे इंदौर में होल्कर राज्य के मेहमान बनकर कुछ दिन रहे।

देवी अहिल्या परंपरा, धर्म को मानने वाली दयालू महिला थी, उन्होंने मंदिर, घाट, धर्मशाला आदि प्रायः सभी तीर्थों में निर्माण कराये। रामेश्वरम, काशी, सोमनाथ आदि तीर्थों में देवी अहिल्या के द्वारा निर्मित घाट, मंदिर, धर्मशाला स्थित है। उन्होंने इन धार्मिक कार्यों के लिए 'रवासगी' ट्रस्ट बनाया। रामराज्य, धर्मराज्य और स्वर्णयुग की तुलना देवी अहिल्या के प्रशासन से की जाती है। पहले होल्कर राज्य की राजधानी नर्मदा तट पर स्थित महेश्वर में रही। देवी अहिल्या ने इंदौर में भी प्रशासन चलाया। राजवाड़ा, छत्रियां देवी अहिल्या की स्मृति ताजी करती है। मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा शहर इंदौर को देवी अहिल्या की नगरी के नाम से जाना जाता है। इंदौर हर वर्ष अहिल्या उत्सव मनाता है। ▪

अनूठे राजनीतिज्ञ-लोकमान्य तिलक

तिलक के मुकदमों में राजद्रोह के आरोप के मुकदमे ऐसे प्रकरण हैं जो कानून के इतिहास में न्यायिक प्रक्रिया को अपनी युद्धनीति के भाग के रूप में उपयोग कर राजनैतिक गति प्रदान करवाने का एकमात्र उपलब्ध दस्तावेज है।

लोकमान्य तिलक के जीवन पर प्रकाश डालने के प्रयास में यह ध्यान में आता है कि उनके जीवन के विविध पहलुओं में से उनकी कानूनी लड़ाईयाँ एक महत्वपूर्ण सोपान हैं। लोकमान्य तिलक के जीवन में से यदि उनकी कानूनी लड़ाइयाँ हटा दी जाएँ तो सिर्फ उनकी कांग्रेस की गतिविधियां (जो सिर्फ कुल मिलाकर 8-10 साल की टुकड़ों-टुकड़ों में रहीं) एवं कुछ सामाजिक कार्य व पत्रकारिता ही शेष बचेंगे। जिसके कारण उनका जीवन कुछ और कम तेजस्वी लगने लगेगा। तिलक के जीवन के लगभग 40 से ज्यादा वर्ष कानूनी लड़ाईयों के फेरे में ही रहे हैं। वे वकील के रूप में, आवेदक के रूप में, आरोपी के रूप में या कानून के शिक्षक के रूप में या इनमें से किसी भी रूप में अदालत के बाहर या अन्दर प्रस्तुत हुए हों उनका दबदबा हमेशा नक्षत्र मण्डल के राजा सूर्य की भाँति रहा है। कानूनी मामलों में तिलक के सभी रूपों का अध्ययन आज की पीढ़ी को शैक्षणिक किताबों में तो बिल्कुल पढ़ाया ही नहीं गया है।

कानून का उपयोग हथियार के रूप में

तिलक जी सन् 1880 में एल.एल.बी की परीक्षा उत्तीर्ण हुए थे। तिलक जी ने लगभग नौ वर्ष तक कानून की कक्षाएँ लगाकर विद्यार्थियों को पढ़ाया। तिलक जी ने अपने समाचार पत्र केसरी में कई लेख सिर्फ कानून के विषयों एवं उनकी पेचीदगियों पर लिखे थे। तिलक ने कानून को अपने जीवन यापन का आधार भी बनाया था।

वे एक ऐसे अनूठे राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने न केवल 40 वर्ष से ज्यादा समय कानूनी पचड़ों में बिताया वरन् यह मानकर भी चले कि अदालत कक्ष को आजादी प्राप्ति हेतु युद्ध भूमि एवं कानून को इस हेतु हथियार बनाना चाहिए। वे अक्सर कहा करते थे कि 'अंग्रेजों को उन्हीं के एक सशक्त हथियार से परास्त करूँगा।'

तिलक के मुकदमों की विशेषताएँ

तिलक के मुकदमों में राजद्रोह के आरोप के मुकदमे ऐसे प्रकरण हैं जो कानून के इतिहास में न्यायिक प्रक्रिया को अपनी युद्धनीति के भाग के रूप में उपयोग कर राजनैतिक गति प्रदान करवाने का एकमात्र उपलब्ध दस्तावेज है। तिलक पर तीन बार राजद्रोह के मुकदमे, दो बार लम्बे समय तक चले मानहानि के मुकदमे उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा उन्होंने अपने आप को अपने तीन मित्रों के तीन विभिन्न मुकदमों में बचाव के लिए गहराई तक जोड़ लिया था। एक 'ताई महाराज प्रकरण' तो जिन्दगी भर उनके पीछे लगा रहा। इस प्रकरण में ऐसे कुछ हुआ था कि एक 'बाबा महराज' नाम के एक प्रसिद्ध व्यक्ति तिलक के मित्र थे और काफी सम्पन्न और वैभवशाली लोगों में से थे। उन्होंने अपनी मृत्यु उपरांत उपस्थित हो सकने वाली पारिवारिक परिस्थितियों को पूर्व से ही भांप कर अपनी सम्पत्ति की देखभाल हेतु तिलक महाराज (तिलक उस दौरान इसी नाम से लोकप्रिय थे) को नियुक्त कर दिया था।

वकालत व कानूनी ज्ञान की पराकाष्ठा

दिनांक 13 जुलाई, 1897 को प्रथम राजद्रोह मुकदमे में ज्यूरी ने तिलक पर 18 माह के कारावास की सजा ठोंकी थी। इसी दिन के अगली सुबह श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा उपलब्ध कराए वकीलद्वय श्री गार्थ और श्री पुग प्रीव्ही काउंसिल में अपील की तैयारी हेतु बॉम्बे के एक क्लब में बैठकर योजना बना रहे थे और इसीलिए उन्होंने अपना एक साथी लोकमान्य से मिलने स्थानीय कारागृह में प्रारम्भिक चर्चा के लिए भेजा। यह साथी जब वापस अंग्रेज वकील द्वय के पास आया तो उसके हाथ में लोकमान्य तिलक के द्वारा बनाया गया अपील का ड्राफ्ट था जो उन्होंने जेल में रात भर बैठकर बना डाला था। यह दोनों अंग्रेज बैरिस्टर उक्त ड्राफ्ट देखकर चकित रह गए क्या शानदार ड्राफ्टिंग थी वो, जो बिना किसी कानूनी किताबों, लेखों और कागज पत्रों की सहायता के बना दी गई थी। उन अंग्रेज वकीलों ने बाद में कहा कि उनके सम्पूर्ण वकालती जीवन में किसी भी वकील द्वारा या अन्य किसी जनसामान्य द्वारा भी बनाया गया इतना अचूक और तथ्यपरक ड्राफ्ट उन्होंने कभी नहीं देखा था जो सजा सुनने के बाद मुजरिम द्वारा ही मात्र कुछ ही घण्टों के भीतर तैयार कर दिया गया हो। यह था लोकमान्य तिलक का विलक्षण कानूनी ज्ञान।

फिर भी वकील जनसामान्य के

तिलक ने कभी जीवन यापन के लिए वकालत भले ही नहीं की हो लेकिन वे कानून को सशक्त राजनैतिक हथियार मानते थे-उनकी गणितज्ञ वाली बुद्धि कानून के पेचीदा और अकादमिक ज्ञान के विवेचन में ही उलझी रहती थी। जब वे माण्डले की जेल (जो वर्तमान में बर्मा देश में है) में राजद्रोह के मुकदमे की छह वर्ष की सजा काट रहे थे तब उन्हें ग्राम कळम्ब, जिला यवतमाल, महाराष्ट्र की एक पिछड़ी धनगर (गड़रिया) जाति के गरीब किसान का पत्र मिला जिसमें उस गरीब किसान ने अपनी व्यथा लिखते हुए बताया था कि वह निचली अदालत से मुकदमा हारने पर अपनी जमीन खो रहा है और वह बॉम्बे उच्च न्यायालय में अपील करना चाहता है। यह व्यक्ति वैसे तो लोकमान्य के लिए अपरिचित ही था लेकिन वह इस सन्दर्भ में पूरी दुनिया में सिर्फ लोकमान्य पर ही भरोसा रखने के कारण कानूनी सलाह चाह रहा था। उसके कागज पत्रों का अध्ययन कर तिलक जी ने उसे उचित सलाह लिखकर भेजी थी। सोचने की बात यह है कि सारा देश जानता है कि लोकमान्य तिलक ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'गीता रहस्य' इसी कारावास में लिखी थी। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने एक गरीब किसान के लिए कानूनी सलाह भी हजारों मील दूर से भारत के दूरदराज में लिखकर भेजी थी। सचमुच में लोकमान्य ही उन सभी जन के लिए कानून स्वरूप ही थे। ऐसे विलक्षण कानूनविद् की पुण्यतिथि पर सारा देश श्रद्धा से नत है। ▪

खुदीराम बोस

फाँसी के विचार से मुझे जरा भी दुःख नहीं है। मेरा एक ही दुःख है कि किंग्जफोर्ड को उसके अपराध का दण्ड नहीं मिला।

ब्रिटिश शासन को भारत से उखाड़ने के लिए अंग्रेजों पर पहला बम फेंकने वाले क्रान्तिकारी खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर, 1989 को मेदिनीपुर जिले के बहुबेनी ग्राम में हुआ। मेदिनीपुर बंगाल का एक जिला था। इनके पिता का नाम त्रैलोक्यनाथ वसु था तथा माता का नाम था श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी। पिता नदझोल तहसील के तहसीलदार थे। इकलौते पुत्र होने के कारण खुदीराम बोस माता-पिता के लाड़ले बेटे थे पर 6 वर्ष की अवस्था में ही उन्हें माता-पिता का विछोह सहना पड़ा। उनका पालन पोषण बड़ी बहन अनुरूपा देवी ने माँ की तरह किया।

उनके जीजा अमृतलाल जी भी उनको बहुत प्यार करते थे। देशभक्ति का भाव बालक खुदीराम में बाल्यावस्था से ही जागृत हो गया था। गोरे, लाल मुँह वाले अंग्रेजों का भारत पर शासन करना उन्हें बिल्कुल भी नहीं सुहाता था।

'आनन्दमठ' उपन्यास के रचयिता बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय मेदिनीपुर में ही शासकीय सेवा में थे। इस उपन्यास का गीत 'वन्दे मातरम्' बड़ा लोकप्रिय हुआ। भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को इस गीत से बड़ी प्रेरणा मिलती थी। आज भी यह राष्ट्रगीत के रूप में प्रत्येक राष्ट्रीय समारोह एवं विद्यालयों में गाया जाता है। यह वन्देमातरम् का गीत ही बालक खुदीराम का प्रेरणा स्त्रोत बना। 1905 में गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने भारतीयों का मनोबल गिराने के लिए बंगाल का विभाजन किया। इस विभाजन का पूरे राष्ट्र ने एक स्वर से विरोध किया।

आनन्दमठ उपन्यास से प्रेरित होकर खुदीराम बोस ने भी अपने जीवन को देश की सेवा के लिए न्यौछावर करने का संकल्प लिया। अतः वे क्रान्तिकारियों के दल में सम्मिलित हो गए। इसके लिए उन्हें अनेक कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। क्रान्तिकारियों के साथ खुदीराम ने पिस्तौल आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करना सीखा। उन्होंने वन्दे मातरम् गाने तथा आनन्दमठ पढ़ने के लिए अपने साथियों को भी उत्साहित किया।

अंग्रेजों ने वन्दे मातरम् के बढ़ते प्रभाव को देखकर, वन्दे मातरम् कहने को राजद्रोह घोषित कर दिया। खुदीराम ने अंग्रेजों को नीचा दिखाने के लिए मेदिनीपुर की प्रदर्शनी में वन्दे मातरम् के पर्चे बांटे तथा नारे लगाए। यह प्रदर्शनी फरवरी 1906 में आयोजित की गई थी। पुलिस वालों ने उन्हें पकड़ना चाहा पर वे असफल रहे। बाद में उन पर एक मुकदमा चलाया गया पर छोटी उम्र होने के कारण न्यायालय ने उन्हें कोई सजा नहीं दी। देशभक्त विपिन चन्द्र पाल ने 'वन्दे मातरम्' पत्रिका का प्रकाशन किया। श्री अरविन्द घोष इसके संपादक नियुक्त हुए। 1907 में अंग्रेज सरकार ने वन्देमातरम् पत्रिका पर राजद्रोह का अभियोग लगाया। भारतीय युवकों ने इसका प्रबल विरोध किया। 26 अगस्त 1907 के दिन हजारों युवक कोर्ट के सामने इस अभियोग का विरोध प्रकट कर रहे थे। इस पर क्रुद्ध होकर अंग्रेज सिपाही एक युवक को अकारण पीटने लगे। 15 वर्षीय सुशील कुमार सेन ने जब इसका विरोध किया तो अंग्रेज अधिकारी उसको डाँटने लगा। बस तब क्या था। सुशील कुमार ने अंग्रेज अधिकारी की नाक पर घूँसा मारा और उन्हें न्यायाधीश किंग्जफोर्ड ने 15 कोड़े मारने की सजा दी। क्रान्तिकारी दल ने किंग्जफोर्ड से बदला लेने का निश्चय किया। 1908 में उसकी हत्या की योजना बनाई गई। खुदीराम ने यह दायित्व अपने ऊपर लिया। दल प्रमुख ने खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को पिस्तौल और कुछ पैसे देकर मुजफ्फरपुर की ओर रवाना किया। किंग्जफोर्ड उन दिनों वहीं सेशन जज के पद पर नियुक्त था। प्रफुल्ल कुमार चाकी रंगपुर ग्राम का रहने वाला था। वह खुदीराम की ही आयुवर्ग का तथा उसी के समान देशभक्त था। 30 अप्रैल 1908 की रात मुजफ्फरपुर के यूरोपियन क्लब के समीप किंग्जफोर्ड की घोड़ागाड़ी पर खुदीराम ने बम फेंका। पर किंग्जफोर्ड निशाना चूक जाने के कारण बच गया। उसके अतिथि कैनेडी की पत्नी, लड़की और नौकर मारे गए।

बम फेंककर खुदीराम 25 मील तक भागते चले गए पर आखिरकार वेनी रेलवे स्टेशन के पास लखा नामक स्थान पर पकड़े गए। प्रफुल्ल कुमार चाकी ने पुलिस द्वारा घेरे जाने पर स्वयं को पिस्तौल से गोली मारकर राष्ट्रहित में अपनी बलि दे दी। अंग्रेज सिपाही उसका सिर काटकर मुजफ्फरपुर ले गए। खुदीराम को मृत्युदण्ड देने का आदेश दिया गया। जब उनसे बयान देने को कहा गया तो उन्होंने कहा-'राजपूत वीरों की तरह मैं देश की स्वाधीनता के लिए मरना चाहता हूँ। फाँसी के विचार से मुझे जरा भी दुःख नहीं है। मेरा एक ही दुःख है कि किंग्जफोर्ड को उसके अपराध का दण्ड नहीं मिला।' 11 अगस्त 1908 को प्रातः 6 बजे खुदीराम बोस को फाँसी दी गई। मृत्यु के समय उनके हाथ में श्रीमदभगवदगीता थी और चेहरे पर बलिदानी की मोहक मुस्कान। फाँसी के समय इस वीर किशोर की आयु कुल अठारह वर्ष आठ महीने की थी।

मातृभूमि के प्रति खुदीराम का भाव था-

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदय, तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारइ
प्रतिमा गड़ि, मंदिरे मंदिरे, वन्देमातरम्।

क्रांतिवीर मदनलाल ढींगरा

मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी थे। वे इंग्लैण्ड में अध्ययन कर रहे थे। जहां उन्होने कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। यह घटना बीसवीं शताब्दी में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोंलन की कुछेक प्रथम घटनाओं में से एक है।

मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी थे। वे इंग्लैण्ड में अध्ययन कर रहे थे। जहां उन्होने कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। यह घटना बीसवीं शतादी में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोंलन की कुछेक प्रथम घटनाओं में से एक है।

मदलालाल ढींगरा का जन्म सन् 1883 में पंजाब में एक संपन्न हिंदू परिवार में हुआ था। उनके पिता सिविल सर्जन थे और अंग्रेजी रंग में पूरे रंगे हुए थे, परंतु माताजी अत्यन्त धार्मिक एवं भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण महिला थीं। उनका परिवार अंग्रेजों का विश्वास पात्र था। जब मदनलाल को भारतीय स्वतंत्रता सबन्धी क्रान्ति के आरोप में लाहौर के एक विद्यालय से निकाल दिया गया, तो परिवार ने मदनलाल से नाता तोड़ लिया। मदनलाल को एक क्लर्क रूप में, एक तांगाचालक के रूप में और एक कारखाने में श्रमिक के रूप में काम करना पड़ा।

वहां उन्होंने एक यूनियन (संघ) बनाने का प्रयास किया, परंतु वहां से भी उन्हें निकाल दिया गया। कुछ दिन उन्होंने मुंबई में भी काम किया। अपने बड़े भाई से विचार विमर्श कर वे सन् 1906 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गये जहां युनिवर्सिटी कालेज लंदन में यांत्रिक प्रौद्योगिकी (Mechanical Engineering) में प्रवेश लिया । इसके लिए उन्हें उनके बड़े भाई एवं इंग्लैंड के कुछ राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं से आर्थिक सहायता मिली। लंदन में ढींगरा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा के संपर्क में आए। वे लोग ढींगरा की प्रचण्ड देशभक्ति से बहुत प्रभावित हुए। मदनलाल उच्च शिक्षण हेतु लंडन में रहते थे। उस समय सावरकरजी भी वहीं पर थे, उस समय सावरकर जी को एक भोजन प्रसंग में रंगभेद का अनुभव हुआ। उन्हें अंग्रेजों द्वारा उनके साथ न बैठ अलग टेबल पर बैठने को कहा गया।

ज्वलंत देशाभिमान और अत्यंत स्वाभिमानी सावरकरजी को यह बात सहन नहीं हुई और वह वहां से बाहर चले गए। उस समय मदनलाल और उनका एक दोस्त वहां उपस्थित था। मदनलाल जी ने सावरकरजी को समझाने का प्रयत्न किया कि इस प्रकार के वर्तन की उन्हें आदत डालनी होगी। मदनलाल और सावरकर, यह इनकी प्रथम भेंट थी। भारत को स्वतंत्रता मिलने के लिए देशभक्तों ने अनेक मार्ग ढूंढ़े। अंग्रेजों पर दबाव बनाने के लिए क्रांतिकारी मार्ग से देशभक्तो ने टक्कर देने हेतु राष्ट्ररक्षा एवं ब्रिटिशों से मुक्तता के लिए क्रांतिकारी संगठनों का उदय हुआ।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि सावरकर ने ही मदनलाल को अभिनव भारत मंडल का सदस्य बनवाया और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया। मदनलाल, इण्डिया हाउस के भी सदस्य थे, जो भारतीय विद्यार्थियों के राजनैतिक क्रियाकलापों का केंद्र था। ये लोग उस समय खुदीराम बोस, कन्नाई दा, सतिन्दर पाल और कांशी राम जैसे क्रान्तिकारियों को मृत्युदण्ड दिये जाने से बहुत क्रोधित थे । भारतीयों के लिए मातृभूमि को देने के लिए क्या है, तो वह स्वयं का रक्त ही है, ऐसा ढींगराजी का मानना था ।

मदनलालजी के विचार अत्यंत स्पष्ट थे और वह उतने ही स्पष्टता से व्यक्त किया करते थे, वे विदेशी शस्त्रास्त्रों की सहायता से दास्यता में जकड़े हुए राष्ट्र को बचाने के लिए निःशस्त्र होकर रणभूमि में उतरकर सामना करना कठिन होने के कारण उन्होंने घात लगाकर हमला किया।

01 जुलाई सन् 1909 में लंदन के नेशनल इंडियन असोसिएशन के वार्षिकोत्सव में कर्जन आने वाला है, इस गोपनीय समाचार की जानकारी मदनलाल को हुई। 01 जुलाई सन् 1909 की शाम को इण्डियन नेशनल एसोशिएशन के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए भारी संख्या में भारतीय और अंग्रेज एकत्रित हुए। जब कर्जन वायली (भारत मामलों के सेक्रेटरी आफ स्टेट के राजनीतिक सलाहकार) अपनी पत्नी के साथ सभाग्रह में घुसे, ढींगरा ने उनके चेहरे पर पांच गोलियां दागी, इसमें से चार सही निशाने पर लगीं। ढींगरा ने अपनी पिस्तौल से अपनी हत्या करनी चाही, परंतु उन्हें पकड़ लिया गया। 23 जुलाई को ढींगरा के प्रकरण की सुनवाई पुराने बेली कोर्ट में हुई। उनको मृत्युदण्ड दिया गया और 17 अगस्त सन 1909 को फांसी दे दी गयी। ▪

भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था

पं. दीनदयाल उपाध्याय

राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात आज सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने अर्थ का है। सामाजिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम उसके आर्थिक पहलू पर भी विचार करें। हमारे आर्थिक मूल्य क्या हैं और जीवन के किन मूल्यों के आधार पर हम समाज को सुख, श्री और समृद्धि से संपन्न कर सकते हैं- इन प्रश्नों पर भी विचार करना आवश्यक है, क्योंकि भारतीय संस्कृति में हमारे आर्थिक और भौतिक जीवन के विकास की भी समुचित व्यवस्था की गई है। जो यह बात सोचते हैं कि भारतीय संस्कृति तो केवल अध्यात्मवाद पर ही जोर देती है तथा भौतिक उन्नति को उसमें कोई स्थान नहीं, उनकी यह धारणा बिल्कुल ही निर्मूल है। भारतीय संस्कृति में भौतिक विकास के लिए उतना ही स्थान है, जितना आध्यात्मिक विकास के लिए। हमारे अपने आर्थिक मूल्य हैं, अपनी अर्थव्यवस्था है। उस अर्थव्यवस्था का देश और काल दोनों से ही संबंध है। इसलिए हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

राष्ट्रधर्म

आज युग की दृष्टि से हम काफी आगे बढ़ गए हैं। हमारे भौतिक साधनों का भी विकास हुआ है। अंर्तराष्ट्रीय समानता की बात भी हम कहते हैं। परंतु तथ्य फिर भी कुछ और है। प्रत्येक राष्ट्र के भिन्न-भिन्न स्तर हैं। वे अपने राष्ट्रीय हित की दृष्टि से ही विचार करते हैं। प्रत्येक राष्ट्र के आर्थिक और भौतिक साधन भी भिन्न-भिन्न हैं। अतः हम अंर्तराष्ट्रीय समानता के आधार पर युगधर्म की बात कहकर राष्ट्रधर्म को भुला नहीं सकते।

मानसिक वृत्तियां और आर्थिक प्रयत्न

एक बात और, आर्थिक पहलू पर विचार करते समय लोग मानसिक प्रवृत्तियों पर विचार नहीं करते, जबकि हमारे आर्थिक प्रयत्नों पर मानसिक प्रवृत्तियों का विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। मानसिक प्रवृत्तियां सांस्कृतिक जीवन से प्रभावित होती हैं। अतः हमारे आर्थिक प्रयत्नों पर संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव रहता है। हमारी संस्कृति में भी हमारे आर्थिक प्रयास किस आधार पर चलें, इस बात की स्पष्ट व्यवस्था है, भौतिक विकास के लिए उसमें समुचित स्थान है।

भारतीय संस्कृति में भौतिक विकास के लिए उतना ही स्थान है, जितना आध्यात्मिक विकास के लिए। हमारे अपने आर्थिक मूल्य हैं, अपनी अर्थव्यवस्था है। उस अर्थव्यवस्था का देश और काल दोनों से ही संबंध है। इसलिए हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

आर्थिक विकास को स्थान

हमारे धर्म में पग-पग पर इहलोक और परलोक बनाने की बात कही गई है। इसलिए हमने लक्ष्मी को देवी स्वरूपा माना है, उसमें देवत्व की स्थापना की है। इसलिए हम उसे काम्य और भोग्य भाव से न देखकर पूज्य और श्रद्धा भाव से देखते हैं। 'वंदेमातरम्' में भी जब हम भारतमाता की वंदना करते हैं, सबसे पहले उसका 'सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्' वाला रूप ही हमारे सामने आता है, अर्थात (प्रथम हम उसकी भौतिक श्रीसमृद्धि का ही विचार करते हैं, उसके अन्य रूपों की कल्पना तो बाद में ही की जाती है। अतः भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की बात कहकर हम यह तो कह ही नहीं सकते कि इस संस्कृति में केवल अध्यात्म और ब्रह्म पर ही विचार किया जाता है तथा मौलिक विकास को पूर्ण रूप से उपेक्षित किया जाता है। अब जब भौतिक विकास की बात को हमारी

व्यष्टि से ही समष्टि का निर्माण होता है। हम समाज में व्यक्ति और परिवार से लेकर ग्राम, राष्ट्र और अखिल विश्व तक की कल्पना करते हैं।

इसलिए जो कुछ हम उत्पन्न करें, उसे संपूर्ण राष्ट्र के हित में व्यय कर दें। राष्ट्र ही हमारे कर्म की प्रेरणा का स्रोत रहे। यही भावना भारतीय संस्कृति के आर्थिक रूप का मूल आधार है।

संस्कृति प्रतिपादित करती है तो उसके लिए उसकी समुचित व्यवस्था भी की गई है। हमारा अपना एक आर्थिक दर्शन है, उसके आधार पर हमारे मनीषियों ने आर्थिक व्यवस्थाओं का निर्माण किया है।

उन व्यवस्थाओं में भिन्नता मिल सकती है, क्योंकि मनु महाराज ने यदि अभिनवीकरण का बहिष्कार किया है तो कौटिल्य ने उसका प्रतिपादन, परंतु दोनों का दर्शन फिर भी एक है। अतः हम उसके व्यावहारिक पहलू पर विचार न कर दार्शनिक पहलू पर ही विचार करें। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए जैसा कि पूर्व में भी कहा जा चुका है, हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की अलग-अलग बात कही गई है, अर्थात युग और देश की परिस्थिति के अनुसार ही हम अपनी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करें।

संपत्ति का अधिकार

अब हमारे सामने दूसरा प्रश्न यह उठता है कि समाज में संपत्ति पर किसका अधिकार हो। कुछ लोग यह नारा लगाते हैं कि 'कमाने वाला खाएगा'। एक दृष्टि यह ठीक भी है, क्योंकि यह मनुष्य की प्रकृति है।

अर्थशास्त्र इसी का प्रतिपादन करता है। परंतु मानव और समाज कल्याण के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है, उसके लिए स्वयं कर्म करके, उसके फल को स्वेच्छा से प्रसन्नता पूर्वक दूसरे को अर्पण कर देने के भाव का आदर्श भी आवश्यक है। यही संस्कृति है, परंतु इस प्रकार की संस्कृति आज व्यवहार में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती और प्रकृति का केवल नारा भर लगाया जाता है।

व्यवहार में आज इन दोनों से भिन्न एक तीसरी चीज ही सामने है-विकृति अर्थात कर्म तो कोई करे कमाए कोई, और खाए कोई अन्य। यह जबरदस्ती ही आज चारों ओर दिखाई देती है। यही विकृति है। परंतु भारतीय संस्कृति प्रकृति से भी ऊपर उस परम आदर्श पर बल देती है, जिसको गीता के कर्म के सिद्धांत में व्यक्त किया गया है-अर्थात फल की भावना से रहित होकर कर्म करो और उससे अर्जित फल को भगवतार्पण कर दो।

भगवान अर्थात समाज। ईश्वर का प्रत्यक्ष और विराट् स्वरूप आज समाज ही है। वही विराट पुरुष है-यही मानकर हम चलें और अपने समस्त कर्मो के फल हम समाज को अर्पण कर दें।

हमारी समाज कल्पना

अब जब समाज की बात उठती है तो उसके विषय में भी हमारी कल्पना स्पष्ट हो जानी आवश्यक है। भारतीय संस्कृति के अनुसार समाज के बहुत से रूप हैं। रूस के अनुसार उसका 'स्टेट' रूप में कभी प्रयोग नहीं होता और न उसमें रूस की विचारधारा के अनुसार राष्ट्रीयकरण को ही महत्व दिया जाता है। भारतीय समाज रचना में व्यक्ति अर्थात् व्यष्टि को प्रमुख स्थान दिया गया है।

व्यष्टि से ही समष्टि का निर्माण होता है। हम समाज में व्यक्ति और परिवार से लेकर ग्राम, राष्ट्र और अखिल विश्व तक की कल्पना करते हैं। इसलिए जो कुछ हम उत्पन्न करें, उसे संपूर्ण राष्ट्र के हित में व्यय कर दें। राष्ट्र ही हमारे कर्म की प्रेरणा का स्रोत रहे। यही भावना भारतीय संस्कृति के आर्थिक रूप का मूल आधार है। इसी आधार पर हम समाज को सुख, श्री और समृद्धि से संपन्न बना सकते हैं और यह तभी संभव है जब हम भारतवर्ष को कर्मभूमि मानकर चलें, भोगभूमि नहीं। जहां भोग की भावना आ जाती है, वहां परिश्रम और कर्म चाहे स्वयं ही क्यों न किया जाए एक पूंजीवादी व्यवस्था का निर्माण हो जाता है, वह हमें मान्य नहीं, क्योंकि 'प्रकृति' होते हुए भी वहां 'जंगल का कानून' होता है, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ ही प्रधान होता है तथा समाज और राष्ट्र का सामूहिक हित गौण पड़ जाता है।

वहां फिर ठीक वितरण नहीं हो पाता और समाज के सामूहिक विकास का मार्ग सिमटकर कुछ लोगों की पकड़ में चला जाता है। अतः राष्ट्र की चिंता को प्रधान मानकर हम अपनी 'प्रकृत' अवस्था से भी ऊपर उठकर 'संस्कृत' अवस्था को प्राप्त हों।

जहां त्याग ही सब कुछ है और उसी में परम आनंद है। व्यावहारिक रूप में यदि हम इस प्रकार न्यूनतम वेतन कल्पना लेकर चलें तो फिर हमें इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी कि कर्म का परिश्रम यदि हम समाज को अर्पण कर देंगे तो हमारी चिंता कौन करेगा। तब समाज हमारी चिंता करेगा, क्योंकि हम समाज के अंग हैं और समाज का जब सामूहिक विकास होगा तो कोई कारण नहीं कि हमारा विकास न हो। ▪

► डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी की जयंती पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा, संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी एवं पदाधिकारियों ने पुष्पांजलि अर्पित की।

► केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के भोपाल आगमन पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने आगवानी की।

► चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी का मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान, चुनाव सह प्रभारी श्री अश्विनी वैष्णव, राष्ट्रीय महासचिव श्री कैलाश विजयवर्गीय, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा, संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने स्वागत किया।

► चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक श्री नरेंद्र सिंह तोमर, चुनाव सह प्रभारी श्री अश्विनी वैष्णव, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने संत रविदास रथयात्रा के कंट्रोल रूम का उद्घाटन किया।

► प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी उज्जैन में श्री बाबा महाकाल जी की सवारी में शामिल हुए।

► केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने जानापाव, इंदौर में भगवान परशुराम जी की जन्मस्थली पर पूजा-अर्चना की।

► मुख्यमंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष ने कटनी में विकास पर्व कार्यक्रम में शामिल होकर जनसभा को सम्बोधित किया।

► श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने त्रिदेव, पंच परमेश्वर सम्मेलन, सयुंक्त मोर्चा सम्मेलन और लाभार्थी सम्मेलन को सम्बोधित किया।

मुख्यमंत्री
लाड़ली बहना योजना
₹ 3000
तक बढ़ेगी राशि
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
21 वर्ष से ही मिलेगा लाभ
1 करोड़
25 लाख
बहनों
को
हर महीने
₹ 1000
संपर्क : ग्राम पंचायत, वार्ड कार्यालय और जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग, हेल्पलाइन नंबर 0755-2700800

D16095/23